जिन शासन नायक भगवान महावीर स्वामी
२५५० वाँ निर्वाण महोत्सव

महावीर नाम भक्ति

भजन गीत माला
भाग-१

जिन गुण भक्ति माला
भाग-२

गा लो मुस्कुरा लो

रचयिता : वीर संजय जैन 'भगत'

हे अन्तरयामी, महावीर स्वामी-२

काटो करम जँजीर,

हे वीर ऽऽऽ महावीर ऽऽऽ

वीर तेरी चर्चा, वीर तेरी चर्या-२

करती भव के तीर,

हे वीर ऽऽऽ महावीर ऽऽऽ

वीर तेरी शिक्षा, वीर तेरी दीक्षा-२

हरती मन की पीर,

हे वीर ऽऽऽ महावीर ऽऽऽ

वीर तेजस्वी, वीर ओजस्वी-२

कीना तप गम्भीर,

हे वीर ऽऽऽ महावीर ऽऽऽ

हे अन्तरयामी, महावीर स्वामी-२

काटो करम जँजीर, ऽऽऽ महावीर ऽऽऽ

महावीर
नाम भक्ति...

हे प्रभु तुम अमृत और हम है पानी

णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं।
णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं।
णमो लोए सव्व साहूणं।
एसो पंच णमोक्कारो।
सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं।
पढमं हवइ मंगलं।

जैन धर्म की गाथा, जैन धर्म इस देश में

गुरूवर का आशीर्वाद

राष्ट्रसन्त परम्पराचार्य श्री प्रज्ञ सागर जी मुनिराज

मंगल आशीष

संजय जैन मेरठ से २००७ से जुड़े हुए हैं। इन्होंने सैकड़ों भजन बनायें हैं। सभी भजनों की पुस्तक छपने जा रही है। आज से सारा संसार इन्हें संजय जैन 'भगत' के नाम से जानेगा। यह कृति भगवान महावीर स्वामी के २०५० वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रकाशित होने जा रही है। यह कृति जन-जन तक पहुँचे ऐसा मेरा मंगल आशीर्वाद

आचार्य प्रज्ञ सागर

आशीर्वाद, आचार्य प्रज्ञ सागर जी

गुरु भक्ति लोधी रोड जैन मंदिर दिल्ली

गुरुवर का आशीर्वाद

संस्कार प्रणेता आचार्य श्री सौरभ सागर जी महाराज

मंगल आशीष

भक्ति हृदय की पुकार है भावो का पवित्र श्रोत जब प्रवाहित होता है तब शब्द लयबद्ध होकर फूटते हैं, वही भजन का रूप धारण करते हैं। संजय जैन ने भक्ति के सुरों के साथ सामाजिक, नैतिक, प्रेरित भक्ति काव्य के माध्यम से वर्षों कण्ठ का उपयोग किया अब वे अक्षर रूप में प्रकाशित कर अन्य को भी लाभान्वित करने का अनुपम प्रयास किया है। निश्चित रूप से भजन प्रेमियो के लिये यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

जीवन भक्ति साधना में गतिशील रहें स्वस्थ रहें, जीवन के पुष्प में संयम के सौरभ भरें यही मंगल आशिर्वाद।

मन की तंरग मार ले बस हो गया भजन, आदत बुरी सुधार ले बस हो गया भजन

गुरूवर का आशीर्वाद

आचार्य श्री ज्ञान भूषण जी महाराज 'रत्नाकर'

मंगल आशीष

मेरे पास मेरठ कचहरी रोड से संजय राखी वाले भजन सम्राट दर्शन करने के लिए मनोज्ञ धाम आए। संजय जी ने मुझे अवगत कराया कि वह भजनों की एक पुस्तक छपवाने की तैयारी कर रहे हैं। एक पुस्तक जिसकी रचना का लेख कार्य स्वयं अपनी कलम से किया है। जिसमें २१९ भजनावली का संग्रह है। पुस्तक में धार्मिक, अध्यात्मिक, भक्ति गीत, वैराग्य वर्धक आदि विभिन्न प्रकार के भजनों की अनुठी रचनायें हैं। भक्ति ही वर्तमान में भक्त को भगवान बनाती है। भक्ति ही जीवन जीने की कला सिखाती है। भक्ति से हमारे जीवन में नया इतिहास बन जाता है। इसलिए 'भ' से भगवान, और 'ज' से जीवन जीने की कला और 'न' से नया इतिहास, इस प्रकर बन जाता है भजन। इस पुस्तक के द्वारा समाज के बच्चों में, युवाओं में एवं बालिकाओं और महिलाओं में एक नई क्रान्ति उत्पन्न होगी।

मेरा संजय जैन के लिए पूर्ण रूप से आशीर्वाद है कि वह समाज में रहकर इसी प्रकर के धर्म प्रभावना के कार्यों में सजग रहते हुए धर्म की महती प्रभावना करते रहें।

श्री आदिनाथ भगवान,धापर नगर मेरठ

गुरूवर का आशीर्वाद

आचार्य श्री ज्ञेय सागर जी महाराज

शुभाशीष

बड़ें हर्ष का विषय है कि ऐसे समय में भी गृहस्थ आश्रम व बिजनेस में लगातार व्यस्त रहने के बाद भी संजय जैन भाई ने अपने शौक, भजन गुनगुनाने का जो बचपन का था उसे आज भी जीवित रखा एवं इतने सुन्दर-सुन्दर भजनों का संकलन करके स्वयं के रचित भजनों की पुस्तक के रूप में तैयार किया है। बहुत बड़ी बात है इसके लिए इन्हें बहुत-बहुत साधुवाद एवं शुभ आशीष।

छाणी परम्परा के सप्तम पट्टाचार्य ज्ञेय सागर जी महाराज

आचार्य श्री निर्भय सागर जी महाराज

शुभाशीष

आचार्य श्री निर्भय सागर जी महाराज भजन सुनकर बोले की हमे आपके सभी भजन बहुत अच्छे लगे आप अपने भजनों की पुस्तक छपवा रहे हो मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद।

गुरूवर का आशीर्वाद

आचार्य श्री विहर्ष सागर जी महाराज

शुभाशीष

आत्मा से जोड़ने वाले

प्रभु भक्ति से जोड़ने वाले

गुरु चरणों से जोड़ने वाले

२१९ भजनों की रचना कर
संजय जैन "भगत" ने एक
पुस्तक तैयार की है।

मेरा मंगल आशीर्वाद

सम्मेद शिखर प्यारा हमें प्राणों से प्यारा

मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज

शुभाशीष

अर्हंध्यान योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज के दर्शन का लाभ यात्रा के दौरान जबलपुर में मिला।

अपने भजनों की पुस्तक छपवानी है इस पर चर्चा हुई और ढ़ेर सारा आशीर्वाद मिला।

कलशो मे नीर भरो कि आज प्रभु नमन करेंगे

गुरूवर का आशीर्वाद

मुनि श्री अरह सागर जी

शुभाशीष

भक्ति के रंग में रंग कर अनेक रंगों को तरंगित करने वाले संजय जी जैन ने जीवन को आनंदित करने वाले अनेक भजनों को तैयार किया है।

इन भजनो को पेजों पर उतारा है, पेजों पर ही नही उतारा अपितु जिंदा दिलों मे भी उतर गये।

यह एक प्रभु कृपा का ही प्रसाद है या यू ही कहे कि गॉड गिफ्ट तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी।

इसी तरह से प्रभु भक्ति एवं गुरूभक्ति में अपनी स्वर लहरियो से गुनगुनाते हुए जीवन की हर श्वास को अर्पित करते रहे।

यही आशीर्वाद है।

मुनि श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

शुभाशीष

आशीर्वाद देते हुए मुनि श्री ने बताया की माला में ३ दाने सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र के भी होते है, इस कारण से तीन भजनो को और जोड़ा गया है। कुल मिलाकर दो माला के २१६ भजन, रत्नत्रय के ३ भजन, कुल २१९ भजन है। २,१,९ को जोड़ने पर १२ आता है। १ और २ का योग ३ होता है। मुनि श्री ने ३ का विशेष महत्व बताया है। इस प्रकार से आशीर्वाद पाकर मैं धन्य हुआ।

मुनि श्री ज्ञान आनंद जी महाराज

कलश स्थापना पर जैन साधु की क्रिया और त्याग

गुरुमाता का आशीर्वाद

गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञान मति माता जी

मंगल आशीष

गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञान मति माता जी को भजन सुनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। एक के बाद एक कई भजन माता जी ने सुने। माता के चरणों में भक्ति कर मेरा जीवन धन्य हुआ।

पुस्तक के लिए ढेर सारा आशीर्वाद दिया और जम्बूदीप पर भजन संध्या करने का कार्यक्रम भी दिया।

माँ की याद

''महावीर नाम भक्ति'' भजन गीत माला......माँ को समर्पित

शुभाशीष

माँ द्वारा मेरे भजनों को बहुत सराहया गया, वो अक्सर मुझ से भजन सुना करती थी। अन्त समय में उनको मैं भजन नहीं सुना पाया इस सौभाग्य से मैं वंचित रहा।

महावीर नाम भक्ति

भजन गीत माला....

''महावीर नाम भक्ति'' भजन-गीत माला.... पुस्तक के भाग-1 में 108 रचनाएँ, जिन गुण भक्ति माला भाग-2 में 108 रचनाएँ एवं रत्नत्रय के 3 भजन, कुल मिलाकर 219 रचनाएँ हैं। सभी रचनाओं को 30 प्रकार की भक्तियों में बाँटा गया है। जिनकों आगे सारणी में दर्शाया गया है।

Note—रचनाओं के बीच में जो यह निशान–ऽऽ आता है वहाँ पर हमें शब्द को खीचना होता है

उदाहरण—यदि हम बिना रुके लगातार ॐ की ध्वनि अपने मुख से निकाले तो लिखा इस प्रकार जायेगा ॐ ऽऽऽऽऽ या फिर ओ ऽऽऽऽऽ म ऽऽऽऽऽ

Note—आप सभी से निवेदन है कि मेरे Youtube Channel " Veer Sanjay Jain Bhagat" को अपने मोबाईल परअवश्य Subscribe करें तथा Bell Icon को भी दबायें।

धन्यवाद

आपका अपना

वीर संजय जैन 'भगत'

मेरठ

फोन न०-9997513543

Email ID : sj4430416@gmail.com

Note—यहाँ कुछ रचनाओं पर QR Code दिया गया है जिसको अपने मोबाइल से स्कैन कर भजन का आनन्द लें सकते हैं।

''महावीर नाम भक्ति'' भजन-गीत माला..........

विषय-सूची

''महावीर नाम भक्ति'' भजन-गीत माला..........

''महावीर नाम भक्ति'' भजन-गीत माला..........

क्रम सं० | 7. ''पंचपरमेष्ठी भक्ति'' | पृष्ठ सं०

''महावीर नाम भक्ति'' भजन-गीत माला..........

''महावीर नाम भक्ति'' भजन-गीत माला..........

''महावीर नाम भक्ति'' भजन-गीत माला..........

''महावीर नाम भक्ति'' भजन-गीत माला..........

''महावीर नाम भक्ति'' भजन-गीत माला..........

''महावीर नाम भक्ति'' भजन-गीत माला..........

मंगलाचरण

णमोकार मंत्र हमको प्राणों से प्यारा है
ये पंच परम पद ही जीने का सहारा है।।णमोकार।।

सुमिरन अरिहंतों का, मंगल उपकारी है
जो इनकी शरण लेवे, वो भव से पार ही है।
संसार छूटे उसका, मिलता किनारा है
ये पंच परम पद ही, जीने का सहारा है।। णमोकार ।।

सिद्धों के सुमिरन से, हैं पाप कटें सारे
संसार में रहकर भी, संसार से रहें न्यारे।
निज में निज को लाओ, ये धर्म हमारा है
ये पंच परम पद ही, जीने का सहारा है।। णमोकार ।।

सूरि-पाठक-साधु, चलते फिरते तीरथ
ये मार्ग दिखाते हैं, चलते मुक्ति पथ पर।
न कष्ट रहे कोई, जिसने भी पुकारा है
ये पंच परम पद ही, जीने का सहारा है।।णमोकार ।।

महा मंत्र णमोकार

तर्ज - कभी आर कभी पार

णमोकार-णमोकार महा मंत्र णमोकार–2
हमें प्राणों से प्यारा महामंत्र णमोकार।

पाँच पदों के पैंतिस अक्षर–2, हैं सुखकारी ये बीजाक्षर–2
अरिहंतो का सुमिरन करके, सिद्ध प्रभु का ध्यान करके–2
होता बेड़ा पार।
णमोकार-णमोकार महामंत्र णमोकार–2
हमें प्राणों..................

पंच परम पद हैं उपकारी–2, इनकी महिमा जग में न्यारी–2
अचार्यों के आचारों से, उपाध्याय के उपकारों से–2
बनते बिगड़े काम।
णमोकार-णमोकार महामंत्र णमोकार–2
हमें प्राणों..................

मंगलमय-मंगल हो निशदिन–2, जाप करे जो पल-पल, छिन-छिन–2
साधु चलते फिरते तीरथ, मार्ग दिखाते चल मुक्ति पथ–2
करते भव से पार।
णमोकार-णमोकार महामंत्र णमोकार–2
हमें प्राणों..................

प्राणों से प्यारा णमोकार

तर्ज - सौ साल पहले

णमोकार मंत्र हमको (प्राणों से प्यारा)-2
सदियों से है, और हमेशा रहेगा।
णमोकार मंत्र हमको.............

इस मंत्र को जपने से, पाप सारे ही कटते हैं।
इस मंत्र को जपने से, कर्म बन्धन से बचते हैं।।
णमोकार मंत्र हमको.............

अंजन को तारा है, सति सीता को तारा है।
मैना को तारा है, सति सोमा को तारा है।।
णमोकार मंत्र हमको.............

जिस-जिस ने पुकारा है, हुआ भव से वो पार है।
जिस-जिस ने पुकारा है, मिले दुःख से छुटकारा है।।
णमोकार मंत्र हमको.............

णमोकार मंत्र हमको

णमोकार जपने से कटते करम

तर्ज - बहुत प्यार करते हैं

णमोकार जपने से कटते करम-2

जिसने पुकारा, जिसने पुकारा।

मिटते भरम SS।।णमोकार।।

णमोकार मंत्र हैं, मंत्रों में प्यारा-2

सुबह-शाम जप लो, मिले है सहारा।

णमोकार जैसा ना, णमोकार जैसा ना

कोई करम SS।।णमोकार।।

अंजन से चोर का कष्ट निवारा-2

सेठ सुदर्शन को शूली से तारा।

णमोकार जैसा ना, णमोकार जैसा ना

कोई भजन SS।।णमोकार।।

णमोकार जपने से कटते करम-2

जिसने पुकारा, मिटते भरम SS

णमोकार जपने से कटते करम

णमोकार मंत्र है प्यारा

तर्ज - स्वनिर्मित

णमोकार मंत्र है प्यारा, इससे जीवन उजियारा
ज्ञान की जोत जलाये है, प्रेम की गंगा बहाये है।
नैया भव पार लगाये है-2 ।।णमोकार।।

अरिहन्तों के सुमिरन से, सब पाप कर्म कट जाते हैं।
सिद्ध प्रभु को जपने से, शुभ कर्म उदय में आते हैं।।
अंजन से चोर अधम तारे, ये शास्त्र अपार बताते हैं।
णमोकार मंत्र है प्यारा, इससे जीवन उजियारा।।
ज्ञान की जोत जलाये है, प्रेम की गंगा बहाये है।
नैया भव पार लगाये है-2 ।।णमोकार।।

आचार्यों को वन्दन से, भव जनम-मरण मिट जाते हैं।
उपाध्याय को ध्याने से, अज्ञान तिमिर हट जाते हैं।।
सेठ सुदर्शन को सूली से, मुक्ति मिली बतलाते हैं।
णमोकार मंत्र है प्यारा, इससे जीवन उजियारा।।
ज्ञान की जोत जलाये है, प्रेम की गंगा बहाये है।
नैया भव पार लगाये है-2 ।।णमोकार।।

सर्व साधु को नमन करे जो, पार यान हो जाते हैं।
ये पंच परम पद जपने से, मुक्ति का मार्ग पाते हैं।।
***'संजय'* की बार न देर करो, सुना पापी पार हो जाते हैं।**
णमोकार मंत्र है प्यारा, इससे जीवन उजियारा।।
ज्ञान की जोत जलाये है, प्रेम की गंगा बहाये है।
नैया भव पार लगाये है-2।।णमोकार।।

वीर प्रभु के गुण गाये

तर्ज - बार-बार दिन ये आये

वीर प्रभु के गुण गायें, महावीर प्रभु के गुण गाये।
नित गायें प्रभु के गीत, बस यही है चाहना।।
घड़ी-घड़ी पल-पल निशदिन, घड़ी-घड़ी पल-पल निशदिन-2

जिओ और जीने दो से, जीने की राह दिखाई
मिल-जुलकर रहने में ही, जीवन है सुखदाई।
हमें-तुम्हें, तुम्हें-हमें, मिलकर रहना भाई।।वीर प्रभु।।

जो तुमने उपदेश दिया, पहले खुद अपनाया
सब कुछ होते सब छोड़ा, त्याग धर्म बतलाया।
हमें-तुम्हें, तुम्हें-हमें, करना त्याग बताया।।वीर प्रभु।।

कटुक वचन सत्य हो फिर भी, कभी नहीं वह बोलो
सच बोलो पर जो बोलो, पहले उसको तोलो।।
हमें-तुम्हें, तुम्हें-हमें, वाणी में अमृत घोलो।।वीर प्रभु।।

अपरिग्रह का सूत्र दिया, जो सबको उपकारी
आवश्यकता हो पूरी, पर न भरो बुखारी।
हमें मिले, तुम्हें मिले, सबको वस्तु सारी।। वीर प्रभु।।

वीर प्रभु के गुण गाए

महिमा वीतराग जिननाम की

तर्ज - हम कथा सुनाते राम सकल गुणधाम की

अद्भुत है महिमा, वीतराग जिननाम की।
त्रिशला के नन्दन, महावीर भगवान की।।

चैत्र शुक्ल तेरस को, कुण्डलपुर में जन्म लिया।
इन्द्रों ने मेरु पर, अभिषेक जिनवर का किया।।
अद्भुत है महिमा, वीतराग जिननाम की।
त्रिशला के नन्दन, महावीर भगवान की।।

जिओ और जीने दो का, सबको मार्ग दिखाया।
दीन-दुःखी जीवों पर, करो करुणा धर्म बताया।।
अद्भुत है महिमा, वीतराग जिननाम की।
त्रिशला के नन्दन, महावीर भगवान की।।

वीतरागी-सर्वज्ञ-हितंकर, श्री जिन की वाणी।
सत्य तत्व का वर्णन करती, सबको सुखदानी।।
अद्भुत है महिमा, वीतराग जिननाम की।
त्रिशला के नन्दन, महावीर भगवान की।।

स्वामी महावीरा हरो मेरी पीड़ा

तर्ज - जादूगर सैयां छोड़ो मोरी बैयां

स्वामी महावीरा, हरो मेरी पीड़ा।
जनम-मरण संसार अब नहीं चाहना है।।स्वामी।।

नरको में भटके, स्वर्गों में अटके, कहीं न हम सुख पाये हैं
पर-घर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये हैं।
हम कभी न निज-घर आये, निज घर जाना है।।स्वामी।।

क्रोध-मान और माया-लोभ का, छाया घोर अँधेरा
झूठी है जग की सुख छाया, और झूठा साँझ-सवेरा।
और झूठा ये संसार, अब नहीं चाहना है।।स्वामी।।

निर्धन हो या हो धनवान, कर्मों ने सबको घेरा
भोग न ले जब तक कर्मों को, निकले न प्राण पखेरा।
कर्मों का खेल अपार, कर्म तज जाना है।।स्वामी।।

धार दिगम्बर भेष लिया जब, तप कर विषयों को त्यागा
सार नहीं संसार में कोई, है संसार को त्यागा।
अंतिम हो यही पुकार, निज घर जाना है।।स्वामी।।

भवसागर नैया डोले

तर्ज - खुशी-खुशी कर दो विदा

वीर प्रभु कर दो कृपा, के भवसागर नैया डोले–2
मेरे प्रभु कर दो कृपा, के भवसागर नैया डोले–2

जन्मों-जन्मों दुःख ही पाया–2
नर्क गया कभी स्वर्ग में आया।
चारों गतियों में भटका फिरा–2
के भव सागर नैया डोले।।वीर प्रभु।।

सदियों-सदियों भूल रही ये–2
पर द्रव्यों में प्रीति रही है।
चैन न मिलता रोए जिया–2
के भव सागर नैया डोले।।वीर प्रभु।।

धन-दौलत मैं कुछ नहीं चाहूँ–2
हे जिनवर तेरा दर्शन पाऊँ।
चरणों में दे दो अपने जगह–2
के भव सागर नैया डोले।।वीर प्रभु।।

***'संजय'* की प्रभु अर्ज यही है–2**
मरण समाधि जो दुर्लभ है।
दुर्लभ को सुलभ देना बना–2
के भवसागर नैया डोले।।वीर प्रभु।।

स्वामी महावीर हरो भव पीर

तर्ज - मेरे महबूब कयामत होगी

स्वामी महावीर, हरो भव की पीर।

हूँ शरण में, मैं तुम्हारी, तुम बँधाओ धीर–2।।स्वामी।।

तेरी शरण मैं आता प्रभु, तेरी कृपा को पाता प्रभु,

तुझ से ही लो मैं लगाता प्रभु। नहीं तेरे सिवा कोई मेरा यहाँ,

तुम मुझको दो सहारा।।

स्वामी महावीर हरो, भव की पीर।

हूँ शरण में, मैं तुम्हारी, तुम बँधाओ धीर–2।।स्वामी।।

नैनों में बस जाओ प्रभु, दिल में मेरे समाओ प्रभु,

साँसों में तुम आओ प्रभु। जीवन हो मेरा तुमसे ही शुरू,

हो तुमसे अन्त हमारा।।

स्वामी महावीर हरो, भव की पीर।

हूँ शरण में, मैं तुम्हारी, तुम बँधाओ धीर–2।।स्वामी।।

वीर प्रभु नाम को भज ले प्यारे

तर्ज - राम जी के नाम से पाथर भी तारे

वीर प्रभु नाम को भज ले ओ प्यारे-2
भज ले ओ प्यारे, भज ले ओ प्यारे।
वीर प्रभु नाम को SSS

सेठ सुदर्शन को सूली से तारा,
अंजना को कष्टों से दिया छुटकारा।
इन की शरण ले ले पल न गवाँ रे,
भज ले ओ प्यारे, भज ले ओ प्यारे।।
वीर प्रभु नाम को SSS

डूबती नैया को मिलता किनारा,
इनके बिना कौन जग में हमारा।
चरणों में इनके धोक लगा रे,
भज ले ओ प्यारे भज ले ओ प्यारे।।
वीर प्रभु नाम को SSS

तारा है तुमने कितनो को तारा,
आया शरण जो पाये सहारा।
नाम की माला जप ले जपा ले,
भज ले ओ प्यारे भज ले ओ प्यारे।।
वीर प्रभु नाम को SSS

हे तीन लोक की हरने वाले पीर

तर्ज - मेरे रोम-रोम में बसने वाले राम

हे तीन लोक की, हरने वाले पीरSSSSS
हे तीन लोक की, हरने वाले पीर, महावीर स्वामी
ओ अन्तर्यामी मैं तेरे गुण गाऊँ, मैं बलिहारी जाऊँ।
हे तीन लोक की हरने वाले पीर।।

जो भी तेरी शरण में आया, तूने उसको पार लगाया–2
तुमने उन भक्तों को तारा–2 जिसने लिया पुकार
महावीर स्वामी, हो अन्तर्यामी, मैं तेरे गुण गाऊँ।
मैं बलिहारी जाऊँ, हे तीन लोक की हरने वाले पीर।।

जाऊँ कहाँ तज शरण तिहारे, ठोर नहीं कोई सिवा तुम्हारे–2
नाम तुम्हारा तारण हारा, काटो कर्म जंजीर।
महावीर स्वामी हो, अन्तर्यामी, मैं तेरे गुण गाऊँ
मैं बलिहारी जाऊँ, हे तीन लोक की हरने वाले पीर।।

तुमसे मैं और कुछ नहीं चाहुँ, जनम-जनम तेरे दर्शन पाऊँ–2
कृपा तिहारी ऐसी होवे–2 जामन-मरन मिटाऊँ।
महावीर स्वामी हो, अन्तर्यामी, मैं तेरे गुण गाऊँ।
मैं बलिहारी जाऊँ, हे तीन लोक की हरने वाले पीर।।

मन मंदिर में

तर्ज - देख तेरे संसार की हालत

मन मंदिर में आन पधारो, ओ मेरे भगवान।

मेरे महावीर भगवान, मेरे महावीर भगवान।।

मन मंदिर.........................

जन्मों-जन्मों दुःख ही पाये, भवसागर में गोते खाये–2

आप कृपा से हो जाती है, सबकी नैया पार।

मेरे महावीर भगवान, मेरे महावीर भगवान।।

मन मंदिर.........................

चरण-शरण में जो भी आया, तूने उसको पार लगाया–2

बांह पकड़ कर भव सागर से, कर दो बेड़ा पार।

मेरे महावीर भगवान, मेरे महावीर भगवान।।

मन मंदिर.........................

जाऊँ कहाँ तज शरण तिहारी, वीतराग छवि प्यारी-प्यारी–2

धन दौलत मैं कुछ नहीं चाहूं, दर्शन दो भगवान।

मेरे महावीर भगवान, मेरे महावीर भगवान।।

मन मंदिर.........................

मन मंदिर में आन पधारो

जय बोलो महावीर स्वामी

तर्ज - ऐ लो मैं हारी पिया

जय बोलो महावीर स्वामी, त्रिशला के लाल रे।

घट-घट के आप ही स्वामी, करुणा भण्डार रे।।

जय बोलो महावीर स्वामी।

हम भी प्रभुजी भक्त तुम्हारे–2, तुम सरताज रे

चन्दन के सम मैं भी तेरे, लग जाऊँ पांव रे।

आये है तेरे द्वारे, लेके ये भाव रे

घट-घट के आप ही स्वामी, करुणा भण्डार रे।।

जय बोलो महावीर स्वामी।

सुना है हमने उसको तारा–2, आया जो भी द्वार रे

काहे को प्रभु देर लगाते, अब मेरी बार रे।

बांह पकड़ के मेरी, देना उबार रे

लाखों को तारा तुमने, हमको भी तार रे।।

जय बोलो महावीर स्वामी।

जय बोलो महावीर स्वामी

प्रभु वीर हरो भव पीर

तर्ज - आ लौट के आजा

पीर हरोऽऽऽ, पीर हरोऽऽऽ, पीर हरोऽऽऽ
प्रभु वीर हरो भव पीर-2, हमारी वीर हरो भव पीर।
मेरी बिगड़ी हुई तकदीर-2, बनाओ वीर हरो भवपीर।।

जीना यहाँ, कभी मरना यहाँ, कभी जीना है और कभी मरना।
ऐसे ही बीते जाये ये जीवन, किस काम की ये दुनिया।।
मेरी वीर बंधाओ धीर-2, उमरिया बीती जाती है।
प्रभु वीर हरो भव पीर।।

मिलता है सुख कभी मिलता है दुःख, कभी हँसना है और कभी रोना।
सुख के सब साथी दुःख में न कोई, मतलब की सारी दुनिया।।
मेरी वीर बंधाओं धीर-2, उमरिया बीती जाती है।
प्रभु वीर हरो भव पीर।।

नरको में भटका, स्वर्गों में अटका, तिर्यंच बना, कभी मानुष।
चारों गति के दुःख सहते-सहते, खोने लगा मेरा साहस।।
मेरी वीर बधाओ धीर-2, उमरिया बीती जाती है।
प्रभु वीर हरो भव पीर।।

क्रोध मान और माया-लोभ का, छाया है घोर अँधेरा।
झूठी है जग की सुख छाया, और झूठा सांझ सवेरा।।
मेरी वीर बंधाओ धीर-2, उमरिया बीती जाती है।
प्रभु वीर हरो भव पीर।।

बालम ले चलो मोहे चाँदनपुर

तर्ज - ले तो आये हो हमें

बालम ले चालो मोहे, चाँदनपुर गाँव में-2
वीर प्रभु का दर्शन करना।
महावीर, महावीर, महावीर, महावीर

चाँदनपुर गाँव, बड़ा प्यारा है मंदिर।
जिसमें विराजा श्री जी का जिन बिम्ब।।
दर्शन से पाप कटें सारे पाप कटें।
मोहिनी मूरत, मन को लुभाये।।
महिमा प्रभु की सारा जग गाये।
वीर प्रभु का दर्शन करना।।
महावीर, महावीर, महावीर, महावीर

अतिशयकारी प्रभु की मूरतिया।
आनन्दकारी चाँदनपुर नगरिया।।
शरण यहाँ पर लेने से दुःख दर्द मिटे।
रोते हुए आने वाले, हँसते हुए जायें।।
दूर-दूर से यात्री आयें।
हमको भी है दर्शन करना।।
महावीर, महावीर, महावीर, महावीर

गुण भण्डारी हैं मेरे वीर

तर्ज - तू कितनी अच्छी है

जगत में सुन्दर है, करते मंगल हैं, गुण भण्डारी हैं।
मेरे वीर महावीर, मेरे वीर महावीर।।

नाम प्रभु का, तारण हारा, मन मन्दिर में, हो उजियारा।
जिन भक्तों ने तुम्हें पुकारा, उनका वारा न्यारा।।
जय जयकारों से, भक्तों के नारों से।
गूँजे द्वारे हैं (मेरे वीर महावीर)-2।।जगत में।।

द्वारा प्रभु का, कितना प्यारा, शरण जो लेवे, उसका सारा।
जीवन खुशियों से भर जाये, महके आँगन सारा।।
झोली भर जाये बिगड़ी बन जाये।
महिमा न्यारी है (मेरे वीर महावीर)-2।।जगत में।।

प्यारी लागे, तोरी मुरतिया, मोहनी मुरत, सोनी सुरतिया।
एक बार जो तुमको देखे, बार-बार दिल चाहे।।
कितनी प्यारी है, सबसे न्यारी है।
दुनिया वारी है (मेरे वीर महावीर) जगत में-2।।जगत में।।

वीर प्रभु गुण गायो

तर्ज - पायो जी मैंने राम रतन धन पायो

गायो जी मैं तो, वीर प्रभु गुण गायो-2
गायो जी मैं तो।

- **हाथों में लेकर चाँदी के कलशे-2**
  प्रभु जी का न्वहन करायो।
  करायो मैं तो, प्रभु जी का न्वहन करायो।।
  गायो जी ....
- **हाथों में लेकर सोने के दीपक-2**
  मंगल आरती गायो।
  गायो जी मैं तो मंगल आरती गायो।।
  गायो जी ....
- **हाथों में लेकर पूजा की थाली-2**
  सुन्दर अर्घ्य चढ़ायो।
  चढ़ायो मैं तो सुन्दर अर्घ्य चढ़ायो।।
  गायो जी ....
- **नाम लेते सब दुःख मिट जाये-2**
  चरणं शीश झुकायो।
  झुकायो मैं तो चरणं शीश झुकायो।।
  गायो जी ....
- **मुझ सेवक की अर्ज यही है-2**
  भव सागर तर वायो।
  प्रभु जी हमको, भव सागर तर वायो।।
  गायो जी मैं तो वीर प्रभु गुण गायो

तू ही पिता, तू ही माता, भ्राता रे

तर्ज - ओ शैरों वाली

''बीच भँवर में नैया डोले तुम बिन कौन खिवैया
राह दिखाते सबको स्वामी आप ही पार लगैया''

हे नाथ रे, तीन लोक के नाथ, हो महावीर स्वामी।
होऽ अन्तर्यामी, तू ही पिता, तू ही माता, भ्राता रे।।

तीन लोक में जीव है जितने, दुःख से डरें सुख चाहें।
आप कृपा से सारे प्राणी, भय से मुक्ति पायें।।
जिओ और जीने दो की राह, दिखायें स्वामी।
होऽ अन्तर्यामी, तू ही पिता, तू ही माता, भ्राता रे।।

भूत-प्रेत तुमसे भय खावें, राक्षस भी डर जावें।
जो भी तेरी शरण में आवें, सोया भाग जगावें।।
चमके किस्मत की रेखायें, है उसकी सारी।
होऽ अन्तर्यामी, तू ही पिता, तू ही माता, भ्राता रे।।

त्याग तपस्या के बल से, तुमने रिद्धियों को पाया।
सिद्ध शिला पर आप विराजे, सबने शीश झुकाया।।
नर जीवन सफल हो जाये, दिखाते स्वामी।
होऽ अन्तर्यामी, तू ही पिता, तू ही माता, भ्राता रे।।

ओ मेरे वीर प्रभु

तर्ज - ओ मेरे शाहेखुबा

ओ मेरे वीर प्रभु, मेरे महावीर प्रभु।
तेरे द्वारे पे जो आये, उसे कोई भय नहीं रहता-2

जैसे कोई लाल माँ के आँचल में, खुद को महफूज वो समझता है।
ऐसे तेरी कृपा की दृष्टि से, बुरे वक्तों की मार टलती है।।
ओ मेरे .... तेरे ....

जिओ और जीने दो के नारे से, सारी दुनिया की सांस चलती है।
तेरे रहमो करम की खातिर ही, हमें जीने की चाह मिलती है।।
ओ मेरे .... तेरे ....

तुम हो घट-घट में तुम हो कण-कण में, चाँदनपुर में तुम्हीं हो टीले में।
सारे जग में तू ही समाया है, तुम हो तन-मन में और मंदिर में।।
ओ मेरे .... तेरे ....

महावीरा प्रभु का प्यारा नाम है

तर्ज - श्री राधे-गोविन्दा

मन भज ले श्री वीरा, महावीरा प्रभु का प्यारा नाम है-2
महावीरा प्रभु का प्यारा नाम है, सन्मति प्रभु का प्यारा नाम है।
अतिवीरा प्रभु का प्यारा नाम है, वर्धमान प्रभु का प्यारा नाम है।।
मन भज ले श्री वीरा, महावीरा प्रभु का प्यारा नाम है।
जोर से बोलो जय महावीरा, सब मिल बोलो जय महावीरा।।

तीन छत्र सिर ऊपर राजे चौसठ चंवर ढुरावें, इन्द्र चंवर ढुरावें।
समवशरण में प्रभु विराजे, शोभा खूब बढ़ावे-2
मन भज ले श्री वीरा, महावीरा प्रभु का प्यारा नाम है।
जोर से बोलो जय महावीरा, सब मिल बोलो जय महावीरा।।

एक घाट पर पानी पीने गाय और शेर आवें, गाय-शेर आवें।
परम अहिंसा धर्म जगत में, ये सबको दिखलावें-2
मन भज ले श्री वीरा, महावीरा प्रभु का प्यारा नाम है।
जोर से बोलो जय महावीरा, सब मिल बोलो जय महावीरा।।

मानस्तम्भ देख सभी का मान जहां गल जावे, मान जहां गल जावे।
दर्पण सम भामण्डल सबका, अगला-पिछला दिखावे-2
मन भज ले श्री वीरा, महावीरा प्रभु का प्यारा नाम है।
जोर से बोलो जय महावीरा, सब मिल बोलो जय महावीरा।।

मेरे वीर महावीर प्यारे-प्यारे

तर्ज - तेरे होठों के दो फूल

मेरे वीर महावीर प्यारे-प्यारे, माता त्रिशला की आँखों के तारे।
जन्म कुण्डलपुर में, प्रभु ने लिया प्रभु ने लिया।।
मेरे वीर महावीर प्यारे-प्यारे।

सारी जगती को अपना बनाया, जियो-जीने दो का मंत्र सुनाया।
तुमने तोड़ी कर्मों की कड़ी, सारी दुनिया चरणों पड़ी।।
तेरी करुणा-दया का क्या कहना, क्या कहना।
मेरे वीर महावीर प्यारे-प्यारे।।

टीले में अतिशय दिखाया, एक गाय ने दूध गिराया।
सारा टीला खोद हटाया, तब तुमने दर्शन दिखाया।।
तेरी महिमा-कृपा का क्या कहना, क्या कहना।
मेरे वीर महावीर प्यारे-प्यारे।।

तुमने तोड़ी बीसों गाड़ी, पहिया खिसका नहीं अगाड़ी।
ग्वाले ने जो हाथ लगाया, फिर तो रथ चलता ही पाया।।
तेरी प्रेम-दया का क्या कहना, क्या कहना।
मेरे वीर महावीर प्यारे-प्यारे।।

कृपा तुम्हारी

तर्ज - स्वर्निमित

कृपा तुम्हारी, कृपा तुम्हारी
हे वीर स्वामी, महावीर स्वामी।
कृपा तुम्हारी, कृपा तुम्हारी।।

आती हर सांस में, जाती हर सांस में।
कृपा तुम्हारी, कृपा तुम्हारी।।
हे वीर स्वामी, महावीर स्वामी।
कृपा तुम्हारी, कृपा तुम्हारी।।

दुःख में संसार में, हां जी परिवार में।
कृपा तुम्हारी, कृपा तुम्हारी।।
हे वीर स्वामी, महावीर स्वामी।
कृपा तुम्हारी, कृपा तुम्हारी।।

हानि व लाभ में, और व्यापार में।
कृपा तुम्हारी, कृपा तुम्हारी।।
हे वीर स्वामी, महावीर स्वामी।
कृपा तुम्हारी, कृपा तुम्हारी।।

वीर हरो भव पीर

तर्ज - स्वर्निमित

वीर हरो भव पीर हमारी, पीर हमारी-पीर हमारी–2

भवसागर में भटक रहा हूँ, सुन लो सुन लो अर्ज हमारी।।वीर।।

जनम-जनम की तुम सब जानो, पायो मैं जो दुःख अति भारी।।वीर।।

दीनों के प्रभु आप ही स्वामी, छोड़ शरण कहाँ जाऊँ तुम्हारी।।वीर।।

संकट मोचन नाम तुम्हारा, समता सूरत आनन्द कारी।।वीर।।

सब द्रव्यन की अनन्त पर्याय, आप ही जानो न्यारी-न्यारी।।वीर।।

***'संजय'* को भवपार उतारो, आयो है शरणागत थारी।।वीर।।**

नोट-ये भजन राग भैरवी में गाया जाये तो बहुत सुन्दर लगता है।

- **राग भैरवी भजनों के लिए प्रमुख राग है**
- **ताल – कहरवा**

जोर से बोलो जय महावीरा

तर्ज - शिव धुन

जोर से बोलो जय महावीरा, सब मिल बोलो जय महावीरा

आनन्दकारी जय महावीरा, मंगलकारी जय महावीरा।
पर उपकारी जय महावीरा, करुणाधारी जय महावीरा।।
जोर से बोलो जय महावीरा, सब मिल बोलो जय महावीरा

निर्विकारी जय महावीरा, निराकारी जय महावीरा।
मुक्ति प्रचारी जय महावीरा, सत्पथ जारी जय महावीरा।।
जोर से बोलो जय महावीरा, सब मिल बोलो जय महावीरा

पालनहारी जय महावीरा, तारणहारी जय महावीरा।
आप मुरारी जय महावीरा, विघ्ननिवारी जय महावीरा।।
जोर से बोलो जय महावीरा, सब मिल बोलो जय महावीरा

बोले नारी जय महावीरा, नर-गणधारी जय महावीरा।
गुण भण्डारी जय महावीरा, अपरमपारी जय महावीरा।।
जोर से बोलो जय महावीरा, सब मिल बोलो जय महावीरा

हे वीर बँधाओ धीर

तर्ज - स्वनिर्मित

हे वीर बँधाओ धीर, नज़र की करना कृपा-2
हे वीर.............

पैरों से चल मंदिर आऊँ, हाथों से तुम पर कलश ढुराऊँ
मिले न्वहन का नीर, मिटे पापों की बला।
हे वीर बँधाओ धीर, नज़र की करना कृपा।।
हे वीर.............

इन नैनों से तुझे निहारूँ, आरती उतारू चरण पखारूँ
कटे कर्म जंजीर, लगाओ पार नैया।
हे वीर बँधाओ धीर, नज़र की करना कृपा।।
हे वीर.............

हृदय कमल पे तुम्हें बिठाऊँ, मन मंदिर में जोत जलाऊँ
गाऊँ तेरे ही गीत, तुझे नैनों में बसा।
हे वीर बँधाओ धीर, नज़र की करना कृपा।।
हे वीर.............

देवा हो देवा हो जय पारस देवा

तर्ज - श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे

देवा हो देवा हो जय पारस देवा, तुम हो हमारे हम हैं तुम्हारे।
हो वामा नन्दन काटो भव बन्धन, मेटो-मेटो जी संकट हमारे।।
देवा हो देवा हो......

जो मैं देखूं आप को देखूं, सोते जागते रोज प्रभु जी।
तेरा ही गुणगान करूं मैं (मुख से बोलूं जो मैं प्रभु जी)-2
भावना हमारी-भावना हमारी-2 नैनो में मेरे तुम ही समाये।।
देवा हो देवा हो......

शान्त छवि और मोहिनी मूरत, आकुलता मिट जाये पल में।
तेरे दर्शन को हम आये (मन हर्षाये मन ही मन में)-2
भावना हमारी-भावना हमारी-2 प्रभु मेरे मन में तुम ही समाये।।
देवा हो देवा हो......

सुर-नर-मुनि जन तुम गुण गावें जोगी तेरा ध्यान लगावें।
तुम गुण कहन वचन बल ना ही (तेरे गुण हम कैसे गावें)-2
भावना हमारी-भावना हमारी-2 गीतों में मेरे तुम ही समाये।।
देवा हो देवा हो......

गाओ भजन पारस के

तर्ज - गाये जा गीत मिलन के

गाओ भजन पारस के, तरण तारण के, हमें तर जाना है-2

द्वारे प्रभु के जो कोई आये, उसने पाया फल।
अपनी-अपनी भक्ति के बल पे, पाप जायें गल।।
द्वारे पे आ ऽ करके, भजन कर-करके, हमें तर जाना है।
गाओ भजन पारस के, तरण तारण के, हमें तर जाना है-2

सुख ही पाये जिसने पुकारा, प्रभु को सच्चे मन।
जीवन में आये खुशियाँ ही खुशियाँ, बिगड़ी जाये बन।।
चरणों में आ ऽ करके, भजन कर-करके, हमें तर जाना है।
गाओ भजन पारस के, तरण तारण के, हमें तर जाना है-2

जिसके स्वामी पारस प्रभु जी, उसको क्या है गम?
हर मुश्किल बाधा टल जाये, कष्ट जायें थम।।
लो ऽ लगा ऽ करके, भजन कर कर के, हमें तर जाना है।
गाओ भजन पारस के, तरण तारण के, हमें तर जाना है-2

गाओ भजन पारस के

चिन्तामणी भगवान हमारे

तर्ज - तुम आशा विश्वास हमारे

तुम पारस भगवान हमारे, चिन्तामणी भगवान हमारे।
घट-घट के, हो नाथ हमारे दाता।।तुम पारस।।

हम सबके तुम तारणहार होऽऽऽऽऽऽ
दुखियों के दुःख हरते सारे होऽऽऽ
ब्रह्मा-विष्णु-महेश आदिक मेंऽ दाताऽऽ
एक तुम्हीं, पितु-मात हमारे दाताऽऽ
तुम पारस भगवान हमारे, चिन्तामणी भगवान हमारे।
घट-घट के, हो नाथ हमारे दाता।।तुम पारस।।

पापों से तुम हमें बचाते, एक तुम्हीं भव पार लगाते-2
जीवन पथ पर, हर मुश्किल में दाताऽऽ
एक तुम्हीं सत् मार्ग दिखाते दाताऽऽ
तुम पारस भगवान हमारे, चिन्तामणी भगवान हमारे।
घट-घट के, हो नाथ हमारे दाता।।तुम पारस।।

तुम ही अनादि, तुम अनन्त होऽऽऽऽऽऽ
सारे जग में, तुम सर्वत्र होऽऽऽ
त्रिभुवन के आधार तुम्हीं होऽ दाताऽऽ
एक तुम्हीं सरताज हमारे दाताऽऽऽ
तुम पारस भगवान हमारे, चिन्तामणी भगवान हमारे।
घट-घट के, हो नाथ हमारे दाता।।तुम पारस।।

कलयुग में फिर से आना रे पारस नाथ

तर्ज - कलयुग में अब न आना रे प्यारे कृष्ण कन्हैया

कलयुग में फिर से आना रे, पारस नाथ सावरिया।
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा देवी मैया।।

काम-क्रोध और माया-लोभ ने, चहुँ गतियों में घेरा,
हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह का है फेरा।
अन्तर की ज्वाला को भगवन, तुम बिन कौन बुझैया।।कलयुग।।

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ पढ़कर, बने जो खुद को पंडित,
अ का उनको ज्ञान नहीं है, उनको करना दंडित।
अ से अहिंसा धर्म बताया, महावीर जिनवरिया।।कलयुग।।

छोटे-छोटे बच्चो भी, करते हैं यहाँ मजदूरी,
बूढ़ा हो जाने पर घर में, हुई बाप से दूरी।
भटक गये जो कर्त्तव्यों से, उनको राह दिखैया।।कलयुग।।

लूट-पाठ में लगी है भगवन, ये सारी ही दुनिया,
अपनो ने अपनो को मारा, दुश्मन भैया-भैया।
एक सहारा तेरा, भगवन पारस नाम जपैया।।कलयुग।।

पारस के दर्शन को म्हारा मन बोले

तर्ज - मंदिर की घण्टी में म्हारा मन डोले

पारस के दर्शन को म्हारा मन बोले।

(चलो-चलो रे)–2 प्रभु के द्वार होले-होले–2

पारस............

एक बार वन्दे जो कोई, नारकी-पशु न होई।

चन्दन है मधुबन की माटी, पावन कण-कण होई।।

(चलो-चलो रे)–2 प्रभु के द्वार होले-होले–2

पारस............

टोंक-टोंक पर ध्वजा विराजे, शोभा खूब बढ़ायें।

ऊँचे-नीचे रास्तों पर, जयकारे गुँजायें।।

(चलो-चलो रे)–2 प्रभु के द्वार होले-होले–2

पारस............

श्री जिनवर का अतिशय ऐसो, बैर-भाव मिट जाये।

एक घाट पर पानी पीने, गाय और शेर आये।।

(चलो-चलो रे)–2 प्रभु के द्वार होले-होले–2

पारस............

है पारस नाम बड़ा प्यारा

तर्ज - है अपना दिल

है पारस नाम बड़ा प्यारा, यही तो पार लगायेगा–2

है पारस.......

दुःखों को हरने वाला, सुखों को देने वाला

सब कष्टों को मिटाने वाला।

मिटाने वाला सब कष्टों को, स्वर्ग-मुक्ति दिलायेगा।।

है पारस.......

निज को पा लेने वाला, पर को भुलाने वाला

स्व में स्थिर कराने वाला।

कराने वाला स्व में स्थिर, ज्ञान की ज्योति जलायेगा।।

है पारस.......

जिस जिस ने भी पुकारा, उसने ही भव सुधारा

हाँ लगता बड़ा प्यारा, प्रभु ये हमारा।

बड़ा प्यारा प्रभु ये हमारा, यही तो पार लगायेगा।।

है पारस.......

पारस ने नाग-नागिन को जलते देखा

तर्ज - जंगल में मोर नाचा किसने देखा

पारस ने नाग-नागिन को जलते देखा।
जलते देखा, जलते देखा, जलते देखा।।

- **चीर के लक्कड़ को दिखलाया,**
  जलते को नवकार सुनाया।
  मरकर पदमा-धरणेंद्र (बनते देखा)–3।।पारस।।
- **मरकर तपसी कमठ कहलाया,**
  बदला लेने वन में आया।
  बदले के भाव में (जलते देखा)–3।।पारस।।
- **एक समय जब पारस स्वामी**
  तप करते थे ध्यान लगाये।
  कमठ का उपसर्ग प्रभु पे (होते देखा)–3।।पारस।।
- **बहुत अधिक पत्थर बरसाये,**
  अग्नि-ओला-वर्षा गिराये।
  प्रभु को लीन तप में (सबने देखा)–3।।पारस।।
- **पद्मावति-धरणेंद्र भी आये,**
  प्रभु के ऊपर फण फैलाये।
  छत्र प्रभु के ऊपर (बनते देखा)–3।।पारस।।
- **चार घातिया कर्म नशाया,**
  प्रभु ने केवल ज्ञान उपाया।
  पारस का समवशरण (सबने देखा)–3।।पारस।।
- **यही जगह अहिक्षेत्र कहलाये**
  दिव्य ध्वनि प्रभु की गुँजाये।
  भक्तों का जय-जयकारा (होते देखा)–3।।पारस।।

पारसनाथ की जय बोलो

तर्ज-चलत मुसाफिर मोह लिया रे

चिन्तामणि पारसनाथ की, जय बोलो रे मिल के।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाले की, जय बोलो रे मिल के।।

तीर्थराज हमें प्राणों से प्यारा, कण-कण को है नमन हमारा।
चौबीसों जिनराज की, जय बोलो रे मिल के।।चिन्तामणी।।

टोंक-टोंक पर ध्वजा है साजे, मेरे प्रभु बड़ी दूर विराजे।
मधुबन वाले बाबा की, जय बोलो रे मिल के।।चिन्तामणी।।

दूर-दूर से यात्री आवें, अपना जीवन सफल बनावें।
बोलो जय-जयकार प्रभु की, बोलो रे मिल के।।चिन्तामणी।।

एक बार वन्दे जो कोई, नर्क-पशु गति कभी न होई।
भाव सहित पूजा कर लो, जय बोलो रे मिल के।।चिन्तामणी।।

रे मन भज-भज पार्श्व जिनन्दा

तर्ज - स्वनिर्मित

रे मन भज-भज पार्श्व जिनन्दा
तेरे प्रभु हैं दुखनीकन्दा।।रे मन।।

काशी जी में जन्म लिया प्रभु
अश्वसेन-वामा के नन्दा।
रे मन भज-भज पार्श्व जिनन्दा
तेरे प्रभु हैं दुखनीकन्दा।।रे मन।।

छोड़ के सब झंझट संसारी
काटे सारे कर्मों के फन्दा।
रे मन भज-भज पार्श्व जिनन्दा
तेरे प्रभु हैं दुखनीकन्दा।।रे मन।।

वीतराग छवि प्यारी-प्यारी
समता सूरत है आनन्दा।
रे मन भज-भज पार्श्व जिनन्दा
तेरे प्रभु हैं दुखनीकन्दा।।रे मन।।

नाम प्रभु का है अति प्यारा
चमके सूरज जैसे चन्दा।
रे मन भज-भज पार्श्व जिनन्दा
तेरे प्रभु हैं दुखनीकन्दा।।रे मन।।

पारस की डगरिया

तर्ज - कौन दिशा में ले के चला रे

सांवलिया रे तेरी आया जो डगरिया-2

हो जी, पारस स्वामी, मोरे अंतर्यामी

करो (पार नैया)–2

सांवलिया रे ....

मधुबन के पर्वत पर गूँजे, तेरी ही जयकार रे

अश्वसैन-वामा के नन्दन, महिमा अपरम्पार रे।

तेरा वन्दन, शीतल चन्दन–2 करुणा के भण्ड़ार रे।।

सांवलिया रे ....

ऊँचे-ऊँचे शिखरों पर, तेरा ऊँचा स्थान रे

सबसे सुन्दर तेरा द्वारा, सबसे ऊँची शान रे।

जो भी तेरे द्वारे आये–2 उसका बेड़ा पार रे।।

सांवलिया रे ....

टोंक-टोंक पर ध्वजा लहराये, झांझर घण्टा बाजे रे

ऊँची-नीची कठिन डगर पर भक्तों की भीड़ अपार रे।

दूर-दूर से यात्री आवें-2, गावें मंगलाचार रे।।

सांवलिया रे ....

चिन्तामणी पारस

तर्ज - ओऽऽ निर्दयी प्रीतम

ओऽऽऽऽ चिन्तामणी पारस, ओऽऽऽऽ चिन्तामणी पारस।
समता सूरत, आनन्द पूरत, मोहनी मूरत ऽऽऽऽऽऽ
ओऽऽऽऽ ....

लोहे को जो स्वर्ण बनाता, वो चिन्तामणि रत्न कहलाता।
तुमको पाकर-तुमको छू कर-2, ये आतम कुन्दन बन जाता।।
तुम अविनाशी, तुम अविकारी, सोहनी सूरत ऽऽऽऽऽ
ओऽऽऽऽ ....

कण-कण में है तेरा वासा, सारे जग में तू ही समाता।
तुम मधुबन के पारस प्यारे, द्वार खड़ा तेरा भक्त पुकारे।।
तू ही नैया-तू ही खिवैया, पार करो भगवन ऽऽऽऽऽ
ओऽऽऽऽ ....

पारस स्वामी जी

तर्ज - कृष्ण मुरारी जी

पारस स्वामी जी, आँख बसे मन भाये।
अंतर्यामी जी, आँख बसे मन भाये।।

जो मैं देखूँ, आप को देखूँ, सोते-जागते, रोज प्रभु जी।
तेरा ही गुणगान करुँ मैं, मुख से बोलूँ जो मैं प्रभु जी।।
भावना हमारी जी, आँख बसे मन भाये।
तन मन वारी जी, आँख बसे मन भाये।। पारस ।।

सुर-नर मुनि जन, तुम गुण गावें, जोगी तेरा ध्यान लगावें।
तुम गुण कहन वचन बल नाही, तेरे गुण कैसे हम गावें।।
गुण भण्डारी जी, आँख बसे मन भाये।
करुणाधारी जी, आँख बसे मन भाये।। पारस ।।

शान्त छवि और मोहिनी मूरत, आकुलता मिट जाये पल में।
तेरे दर्शन को हम आये, मन हर्षाये मन ही मन में।।
आनन्दकारी जी, आँख बसे मन भाये।
मूरत मनहारी जी, आँख बसे मन भाये।। पारस ।।

पारस स्वामी जी 38

ए मेरे स्वामी

तर्ज - ए दिले नादान

ए मेरे स्वामी ए मेरे स्वामी।

तेरे भक्त हम, तेरे भक्त हम।।

सुख की चाह में, दुःख ही दुःख पाये।

चैन नहीं आये।।

दर पे आये हैं, तेरे दर पर हम।

होवें कुछ दुःख कम–2।।ए मेरे।।

मोह-मद में आ, तुमको भूले हाँ।

खुद को समझे ना।।

निज में निज को ला, खुद को पहचानू।

तुमसे लौ लग जा–2।।ए मेरे।।

साथ छूटे ना, जन्मों-जन्मों का।

मोक्ष जब लो ना।।

प्राण जब निकले, तेरा दर चाहूँ।

तेरी हो शरणा–2।।ए मेरे।।

हे मेरे स्वामी

श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।

तर्ज - स्वर्निमित

जय बोलो-जय बोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।
जय बोलो-मुँह खोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।।

जब पर्व अठाई आया था, श्रीपाल का कुष्ट मिटाया था
जय बोलो-जय बोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।
जय बोलो-मुँह खोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।।

अंजन से चोर अधम तारे, सूली से सेठ बचाया था
जय बोलो-जय बोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।
जय बोलो-मुँह खोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।।

सोमा की सुनकर पीर प्रभु, नागों का हार बनाया था
जय बोलो-जय बोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।
जय बोलो-मुँह खोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।।

अंजना का शील बचाया था, द्रोपदी का चीर बढ़ाया था
जय बोलो-जय बोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।
जय बोलो-मुँह खोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।।

पाण्डवों पे कष्ट महाभारी, भवसागर पार लगाया था
जय बोलो-जय बोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।
जय बोलो-मुँह खोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।।

मैं भी हूँ नाथ शरण आया, लाखों को पार लगाया था
जय बोलो-जय बोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।
जय बोलो-मुँह खोलो, श्री शान्तिनाथ की जय बोलो।।

शान्ति विधाता शिव सुखदाता

तर्ज - हे दुःख भंजन

शान्ति विधाता, शिव सुखदाता
करुणा के भण्डार,
सुनो मेरी विनती, हे भगवान-2।।शान्ति।।

- **शान्तिनाथ है नाम तुम्हारा, तूने सबको दिया सहारा-2**
  भव-जग से है तारणहारा-2 तेरा ही उपकार।
  सुनो मेरी विनती, हे भगवान-2।।शान्ति।।

- **कण-कण में प्रभु तू ही समाया, सारे जग पर तेरी छाया -2**
  मैं भी तेरी शरण में आया-2 कर दो बेड़ा पार।
  सुनो मेरी विनती, हे भगवान-2।।शान्ति।।

- **जो भी तेरे द्वारे आता, सोया अपना भाग्य जगाता-2**
  भव सागर से पार हो जाता-2 तुम गुण अपरम्पार
  सुनो मेरी विनती, हे भगवान-2।।शान्ति।।

- ***'संजय'* के प्रभु आप ही स्वामी, हो तुम सारे जग में नामी-2**
  नाम तुम्हारा सबसे प्यारा-2 तेरा ही गुणगान
  सुनो मेरी विनती, हे भगवान-2।।शान्ति।।

शान्ति विधाता विश्व विधाता

तर्ज - तू ही दाता विश्व विधाता

शान्ति विधाता, विश्व विधाता, करुणा के भण्ड़ारी
जय हो जय हो तुम्हारी-2
समता सूरत, आनन्द पूरत, हम हैं तेरे पुजारी।
जय हो-जय हो तुम्हारी-2।।शान्ति।।

- **ऊँचा पर्वत कठिन ड़गरिया, फिर भी भक्त पुकारे-2**
दर्शन करने दर तेरे आये, धन्य हुए नर-नारी।
जय हो-जय हो तुम्हारी-2।।शान्ति।।

- **सुर-किन्नर गण-मुनि गुण गायें, जोगी ध्यान लगायें-2**
शीतल झरना, बहता पानी, धरती झूमे सारी।
जय हो-जय हो तुम्हारी-2।।शान्ति।।

- **ज्ञान की तुमने ज्योति जलायी, अमृत तेरी वाणी-2**
दया-धरम का मार्ग दिखाया, शांत छवि बडी प्यारी।
जय हो-जय हो तुम्हारी-2।।शान्ति।।

कुन्थु प्रभु को नमन

तर्ज - धीरे धीरे मचल

हो कुन्थु प्रभु को नमन, है मेरा बार-बार, मन गाता है।
हो इनके दर्शन को आता है, जो बार-बार तर जाता है।।

हो इनकी माता को शुभ-स्वप्न आने लगे,
इन्द्र स्वर्गों से रत्न बरसाने लगे।
आने वाला है नगरी में, प्रभु जी हमारा मन गाता है।।हो।।

हो इन्द्र प्रभु को मेरु पे ले जाने लगे,
ढोल-बाजे नगर में बजाने लगे।
तीनों लोकों में शान्ति की, महिमा अपार मन गाता है।।हो।।

हो तप करने से कर्म झर जाने लगे,
अपनी आत्मा को कुन्दन बनाने लगे।
अन्तर ध्यान से आत्मा में, आया निखार मन गाता है।।हो।।

हो प्रभु ज्ञान की ज्योति प्रगटाने लगे,
इन्द्र समवशरण को रचाने लगे।
दिव्य ध्वनि में बतलाया, धर्म मार्ग मन गाता है।।हो।।

हो शुद्ध स्वरूप की पूर्णता पाने लगे,
शिखर सम्मेद से मुक्ति को जाने लगे।
एक समय में ही, पा जाते मोक्ष द्वार मन गाता है।।हो।।

श्री नमिनाथ की जय बोलो

तर्ज - स्वनिर्मित

जय बोलो जय बोलो, श्री नमिनाथ की जय बोलो।

जय बोलो..................

जब गर्भ में प्रभु जी आये थे, इन्द्रों ने नगर सजाया था।

जय बोलो-जय बोलो, श्री नमिनाथ की जय बोलो।।

जब मिथुलापुर में जन्म लिया, इन्द्रों ने न्वहन कराया था।

जय बोलो-जय बोलो, श्री नमिनाथ की जय बोलो।।

तज राज-पाट योगीश भये, जा वन में ध्यान लगाया था।

जय बोलो-जय बोलो, श्री नमिनाथ की जय बोलो।।

कर्मों की बेड़ी टूट गई, तब ज्ञान भानु प्रगटाया था।

जय बोलो-जय बोलो, श्री नमिनाथ की जय बोलो।।

सम्मेद शिखर से मोक्ष गये, प्रभु शुद्ध स्वरूप को पाया था।

जय बोलो-जय बोलो, श्री नमिनाथ की जय बोलो।।

तेरी महिमा अपरंपार

तर्ज - भव पार करो भगवान

तेरी महिमा अपरंपार, प्रभु कोई गा न सके–2
गा न सके, गा न सके, गा न सके, गा न सके।
तेरी महिमा ....

टीले में अतिशय दिखलाया, एक गाय ने दुध गिराया–2
प्रगट हुए भगवान, महिमा गा न सके।
तेरी महिमा ....

बरसे ओले-पाथर भारी, ध्यान लगाया थिरता धारी–2
सब बोलें जय-जय कार, महिमा गा न सके।
तेरी महिमा ....

थक गये सब जन भर-भर झारी, तन पर उतरे न जल की धारी–2
बुढ़िया की लुटिया कमाल, जल की धार बहे।
तेरी महिमा...............

संकट मोचन नाम तुम्हारा, तूने सबको दिया सहारा–2
हमको भी पार उतार, तेरे द्वार खड़े।
द्वार खड़े-द्वार खड़े, द्वार खड़े-द्वार खड़े
तेरी महिमा ....

चरणों में हैं पड़े

तर्ज - तेरे कारण मेरे साजन

तेरे द्वारे-तेरे द्वारे, तेरे द्वारे-तेरे द्वारे-2
द्वार पे तेरे खड़े, चरणों में हैं पड़े, पार लगाना भूल न जाना
भगवन तुम हो मेरे, रे तारना।।तेरे द्वारे।।

तेरे द्वारे पे आये, जायें तो कहाँ हम जायें–2
भाये न कोई भाये, भाये न कोई भाये
लाखों जन हैं तरे, झोली अपनी भरें।
पार लगाना, भूल न जाना, भगवन तुम हो मेरे
रे तारणा ।।तेरे द्वारे।।

मूरतिया प्यारी-प्यारी, करुणा के हो भण्डारी–2
लगता है दुनिया सारी, चरणों में है बलिहारी
घण्टा-झांझर बजे, केसरिया रंग सजे।
पार लगाना, भूल न जाना, भगवन तुम हो मेरे
रे तारणा ।।तेरे द्वारे।।

न मैं धन-दौलत चाहूँ, गाड़ी बंगला न चाहूँ–2
चरणों में शीश झुकाऊँ, चरणों में शीश नवाऊँ
शांति सुधारस झरे, आशा पूरी करे।
पार लगाना, भूल न जाना, भगवन तुम हो मेरे
रे तारणा ।।तेरे द्वारे।।

गंधोदक की महिमा

तर्ज - जैसे सूरज की गर्मी से जलते हुए

क्षीर सागर के जल से, भर-भर के कलशों को,
इंद्रों ने प्रभु पे गिराया, ऐसा ये निर्मल जल, मिल जाये
जिसको भी, हो जाये धन्य वो काया, उसकी कायाSSS
क्षीर सागर..

चन्दन से शीतल, चन्द्रमा से शीतल,
हो जाये जल की धारा।
गंधोदक बन जाये, जिसको भी मिल जाये,
मिट जाये कष्टों की काया SSS
मिट जाये कष्टों की काया SSS
उस स्पर्शित जल को, कोढ़ी श्रीपाल ने,
जैसे ही तन से लगाया SSS
कंचन हुई काया रे, कुष्ठ मिटाया रे,
कष्टों से छुटकारा पाया SSS
हाँ जी पा S या S
क्षीर सागर..

जल से भर-भर कलशें

तर्ज - बच्चे मन के सच्चे

जल से भर-भर कलशे, प्रभु का अभिषेक करो रे।
आनन्दकारी-मंगलकारी, है प्रक्षाल करो रे।।जल से।।

वीतरागी छवि प्यारी है, सब सुख देने वाली है।
सब पापों को दूर करे, और दुखों का नाश करे-2
इन्द्रादिक सब मिलकर प्रभु के, ऊपर कलश ढुराये।।जल से।।

श्रीपाल का कुष्ट मिटा, जब गंधोदक तन छिड़का।
दूर भयंकर रोग करे, तन पावन-पवित्र करे-2
एक बार कर ले जो कोई, जीवन सफल बनाये।।जल से।।

मस्तक पर जो लगाते हैं, औरों पर छिड़काते हैं।
स्व का भी कल्याण करें, पर का भी उपकार करें-2
रोते-रोते आने वाले हँसते-हँसते जाये।।जल से।।

जल से भर भर कलशें48

थारा न्वहन करा लूं

तर्ज - नैना में बसालूँ अपने हृदय में बैठा लूँ

थारा न्वहन करा लूं, थारा गंधोदक लगा लूं, जनमा-प्यारा प्रभु जी जनमा रे
होऽऽ जनमा प्यारा प्रभु जी, जनमा रे।।

थारी मूरतिया मन को भाये रे, थारी मूरतिया मन को, भाये रे-भाये रे।
थारी मूरतिया मन को भाये रे।।
थारी शान्ति छवि, मन भाये रे-भाये रे, थारी शान्ति छवि, मन भाये रे।
हो थारी भक्ति को दूर-दूर से, लोग लुगाई आवें, आवे लोग-लुगाई आवें।।
कोई मंगल आरती गावे, कोई पलना झुलावे, आज जीवन सफल हो जाये रे।
होऽऽ अपना जीवन सफल हो जाये रे।।

सारी नगरी उमड़ कर आयी रे, सारी नगरी उमड़ कर आयी रे-आयी रे।
सारी नगरी उमड़ कर आयी रे।।
कोई नाचे रे कोई गाये रे-गाये रे, कोई नाचे रे कोई गाये रे।
हो थारी भक्ति को उर्धलोक से इन्द्र-इन्द्राणी आवें-आवें इन्द्र-इन्द्राणी आवे।।
कोई चौसठ चमर ढुरावे, कोई रतन बरसावे, आज धन्य जनम हो जाये रे।
होऽऽ आज धन्य जनम हो जाये रे।।

अभिषेक पाठ

तर्ज - मीठे रस से भरी रे

क्षीर जल से भरी रे गगरी प्यारी लागे, गगरी प्यारी लागे
करो प्रभु अभिषेक मूरत प्यारी लागे-2

समता सूरत आनन्द पूरत, प्रभु जी प्यारो-प्यारो-2।
वीतराग छवि प्यारी-प्यारी, प्रभु जी प्यारो-प्यारो जी।।
प्यारी लागे, गगरी प्यारी लागे, गगरी न्यारी लागे।
करो प्रभु अभिषेक मूरत प्यारी लागे-2।।
क्षीर जल ....

सिंहासन पर जिनवर सोहें, प्रभु जी प्यारो-प्यारो-2।
तीन छत्र सिर ऊपर राजे, प्रभु जी प्यारो-प्यारो जी।।
प्यारी लागे, गगरी प्यारी लागे, गगरी न्यारी लागे।
करो प्रभु अभिषेक मूरत प्यारी लागे-2।।
क्षीर जल ....

इंद्र चौसठ चंवर ढुराते प्रभु जी प्यारो-प्यारो-2।
घण्टा बाजे, झाँझर बाजे, प्रभु जी प्यारो-प्यारो जी।।
प्यारी लागे, गगरी प्यारी लागे, गगरी न्यारी लागे।
करो प्रभु अभिषेक मूरत प्यारी लागे-2।।
क्षीर जल ....

तेरा द्वारा कितना सच्चा

तर्ज – तेरा चेहरा कितना सुहाना

तेरा द्वारा, कितना सच्चा लगता है।
और नहीं अब, कुछ भी अच्छा लगता है।।

वीतराग छवि प्यारी-प्यारी लगती है।
मन-मंदिर में प्रभु विराजा लगता है।।
और नहीं अब कुछ भी अच्छा लगता है।
तेरा द्वारा कितना सच्चा लगता है।।

रूप अनेक हैं, संतो के भगवंतो के।
भेष दिगम्बर सबसे प्यारा लगता है।।
और नहीं अब कुछ भी अच्छा लगता है।
तेरा द्वारा कितना सच्चा लगता है।।

शरण नहीं यहाँ कोई किसी की लगता है।
परम अहिंसा धर्म सहारा लगता है।।
और नहीं अब कुछ भी अच्छा लगता है।
तेरा द्वारा कितना सच्चा लगता है।।

पंच परमेष्ठी जो हो गये

तर्ज - स्वर्निमित

पंच परमेष्ठी जो हो गये

हर तरफ हर जगह हो गये।

पंच परमेष्ठी.................

हम से तुम से ही दिखते थे जो–2

हो गये वो जिनेन्द्र हो गये–2

पंच परमेष्ठी जो हो गये,

हर तरफ हर जगह हो गये।

कहाँ से आये, कहाँ जाना है–2

आत्म चिंतन में लीन हो गये–2

पंच परमेष्ठी जो हो गये,

हर तरफ हर जगह हो गये।

भेष दिगम्बर, जो धारण किया-2

नयन पथगामी वो हो गये–2

पंच परमेष्ठी जो हो गये,

हर तरफ हर जगह हो गये।

सिद्ध शरणं

तर्ज - ओम नमः शिवाय

सिद्ध शरणं नित सिद्ध शरणं।

भज प्यारे नित सिद्ध शरणं।।सिद्ध शरणं।।

आनन्दकारी सिद्ध शरणं, मंगलकारी सिद्ध शरणं।

पर उपकारी सिद्ध शरणं, करुणाकारी सिद्ध शरणं।।सिद्ध शरणं।।

ज्ञाता-दृष्टा सिद्ध शरणं, नासा-दृष्टा सिद्ध शरणं।

पारस प्यारा सिद्ध शरणं, महावीर प्यारा सिद्ध शरणं।।सिद्ध शरणं।।

जोर से बोलो सिद्ध शरणं, प्रेम से बोलो सिद्ध शरणं।

सब मिल बोलो सिद्ध शरणं, सारे बोलो सिद्ध शरणं।।सिद्ध शरणं।।

निर्विकारी सिद्ध शरणं, निराकारी सिद्ध शरणं।

अविकारी सिद्ध शरणं, पर उपकारी सिद्ध शरणं।।सिद्ध शरणं।।

करो भई सिद्धचक्र विधान

तर्ज - भगत के वश में हैं भगवान

करो भई सिद्धचक्र विधान, करो भई सिद्धचक्र विधान।
ठाट-बाट से पाठ रचाओ, करो प्रभु गुणगान।।

मैना सुन्दरी थी रानी, कोढ़ी पति लख दुखियारी।
नहीं पड़े चैन रैन-दिन, बड़ी व्यथित अकुलानी।।-2
प्रभु के मंदिर जाती, दर्श कर अति हर्षाति।
लखे वहाँ साधु निर्ग्रंथ, चरणों में मुनि के जाती।।-2
बैठ मुनि चरणों में करे निज-2, निन्दा बार-बार।
करो भई सिद्धचक्र विधान, करो भई सिद्धचक्र विधान।।

भर के अश्रु नैनों मे, मुनि को बात बताती।
नैनो से टप-टप आसूँ, सारी व्यथा सुनाती।।-2
बोले मुनि धैर्य धरो, सिद्ध चक्र पाठ करो।
रहे न कुष्ट तन में, काया बन जाये कंचन।।-2
सुनि बहुत हर्षायी मैना-2 हुआ वचन श्रद्धान।
करो भई सिद्धचक्र विधान, करो भई सिद्धचक्र विधान।।

अठाई पर्व है आया, भक्ति युक्त पाठ कराया।
यंत्र का न्वहन कराके, कुष्ट पति संघ छिड़काया।।-2
वसु दिन छिड़कत-छिड़कत, नही रहा कुष्ट किंचित।
पति सही सात शतक की, काया बन जाये स्वर्णिम।।-2
सिद्धचक्र की महिमा देखो-2, हो रही जय जयकार।
करो भई सिद्धचक्र विधान, करो भई सिद्धचक्र विधान।।

जीने की कला सिखाती जिनवाणी

तर्ज - सुनो छोटी सी गुड़िया की

सुनो जिनवाणी माता की, द्वादशांग वाणी–2

जो है तीर्थंकर की ध्वनि, शास्त्र प्रमाणी।

सुनो जिनवाणी माता की प्रमाणी।।

दिन से करो भोजन, और छान के लो पानी।

दया करो जीवों पर, करुणा मन लानी।।

जाने-अनजाने यदि किसी दिल को दुखाया हो।

बातों ही बातों में यदि क्रोध भी आया हो।।

हो SSSSS क्रोध भी आया हो।

छमा लेने से मिलती है मुक्ति बतानी।।

सुनो..................

दान करो-ध्यान करो, मत करो मन मानी।

जन्म से नहीं कर्मों से, जीवन सुखदानी।।

करनी करो ऐसी, जो औरो को सुख देवे।

वचन कहो ऐसे, जो कानों में मिश्री घोले।।

हो SSSS कानों में मिश्री घोले।

जिससे खुद भी हँसो और बने समा सुहानी।।

सुनो..................

साँची जिनवाणी

तर्ज - काँची रे काँची रे

साँची रे-साँची रे, साँची जिनवाणी।
द्वादशाँग माँ जिनवाणी हो ऽ।।

गणधर ने तीर्थंकर ध्वनि सुनि।
अंग रचे चुनि ज्ञान मयी।।
सो जिनवर वाणी शिव सुख दानी।
देती है शाश्वत सुख रेऽऽ।।साँची रे साँची रे।।

सप्त भंगी हैं तरंगी रूप तेरे।
स्यादवाद-अनेकान्त से कथन करे।।
दुःख हरने वाली, सुख देने वाली।
कर्मों के बन्धन, तोड़ देऽऽ।।साँची रे-साँची रे।।

ज्ञान देना माता है काम तेरा।
शास्त्रों में ऊँचा है नाम तेरा।।
राह दिखाना, उस पर चलाना।
मुक्ति के द्वारे, खोल देऽऽ।।साँची रे-साँची रे।।

होली का नया भजन

तर्ज - झिनि झिनि झिनि बिनि झिनी चदरिया

होली खेलें मुनिवर, स्व में मगन में।
अपने ही रंग में, मन मंदिर में।।
ऐसी होली खेलें लगन में-2
होली खेलें................

न कोई रंग, न कोई पिचकारी-2
समता रंग भर-भर लाये मन में-2
होली खेलें..........

हाथ कमण्डल, कर में पिच्छी-2
भीजें करुणा-संयम के जल में-2
होली खेलें..........

हित-मित रंग, धरम की थाली-2
ज्ञान गुलाल उड़ायें गगन में-2
होली खेलें..........

ना कोई संगनि ना कोई साथी-2
मुक्ति रमा को बसायें मन में-2
होली खेलें..........

ध्यान की ऐसी अग्नि लगाई-2
कर्मों की होली जल जाये क्षण में-2
होली खेलें..........

जैन साधु का त्याग

तर्ज - तेरी आँखों के सिवा दुनिया में

जैन साधु, के सिवा दुनिया में, किसका त्याग है

वस्त्र तन पर न रखें, भोजन एक बार करें।

पैदल चलना, केश लौंच करना, राह मुक्ति की चलें।।

जैन साधु....................

कर में ली पिच्छि है, हाथ कमण्डल है, शास्त्र है।

भेष दिगम्बर ही जैन, साधु की पहचान है।।

पैसा रुपया न रखें, कोई परिग्रह न करे।

पैदल चलना, केश लौंच करना, राह मुक्ति की चलें।।

जैन साधु....................

सारा जग सोये जब, इनका चले आतम ध्यान है।

अल्प सी निद्रा लें, शान्त निराकुल परिणाम है।।

चिन्तन तत्वों का करें, सत्पथ की राह चलें।

पैदल चलना, केश लौंच करना, राह मुक्ति की चले।।

जैन साधु....................

न ताना, न बाना, न कोई ठिकाना

तर्ज - ये रातें ये मौसम नदी का किनारा

न ताना, न बाना, न कोई ठिकाना, न कोई पता।
बढ़े जा रहे हैं, ये मुक्ति के पथ पर चमत्कार सा।।

इन्हीं की कृपा से, बने काम मेरे–2
ये गुरुवर नहीं मात-पिता से हैं मेरे।
नहीं कोई लालच, नहीं कोई चाहना
इन्हीं से इन्हीं को, चुरा लूं जरा।।
न ताना....................

सभी लोग कहते, कि गुरुवर हमारा–2
जगे भाग उसके, है जिसने पुकारा।
कहे कोई हमारा, कहे कोई हमारा
लगा लो-लगा लो, लगन ये जरा।।
न ताना....................

ये गुरुवर हमारे नहीं हम से छूटें–2
जमाने के चाहे सभी लोग रुठें।
हमें भी पता है, इन्हें भी पता है
पता हो जमाने, को सारे जरा।।
न ताना....................

मुनिवर विहार करें

तर्ज - हे नीले गगन के तले

हे नीले गगन के तले, मुनिवर विहार करें।

ईर्या समिति पालन करते, मुक्ति की राह चले।। हे।।

हाथ कमण्डल कर में है पिच्छि, कर्मों की धूल झड़े SSS

हे नीले गगन के तले, मुनिवर विहार करें।

न कोई रंग न पिचकारी, ज्ञान गुलाल उड़े SSS

हे नीले गगन के तले, मुनिवर विहार करें।

चारो ऋतु के फल-फूल महके, शीतल पवन बहे SSS

हे नीले गगन के तले, मुनिवर विहार करें।

न कोई बादल न कोई बिजुरी, रिम-झिम बूदें पड़ें SSS

हे नीले गगन के तले, मुनिवर विहार करें।

भक्तों की सारी भीड़ है भारी, गुरुवर के पीछे चले SSS

हे नीले गगन के तले, मुनिवर विहार करें।

भव्य नजारा हर कोई देखे, मन ही मन नमन करे SSS

हे नीले गगन के तले, मुनिवर विहार करें।

जिनके चरणों में झुकता जग सारा

तर्ज - तुम को देखा तो

जिनके चरणों में, झुकता जग सारा–2

उन गुरुवर को, है नमन हमारा।

जिनके.................

आज गुरुवर हमारे आये हैं-2

आज फिर बहती, खुशियों की धारा।

उन गुरुवर को, है नमन हमारा।।

जिनके.................

क्या पता होंगे कल को, फिर ये कहाँ-2

रोक लो बढ़कर, वक्त ये प्यारा।

उन गुरुवर को, है नमन हमारा।।

जिनके.................

मुक्ति की राह ये दिखाते हैं-2

खुद भी तर जाते, औरों को तारा।

उन गुरुवर को, है नमन हमारा।।

जिनके.................

चरणों में झुक जाओ

तर्ज - अगर तुम मिल जाओ

चरणों में झुक जाओ, दुखों से दूर होंगें हम।

प्रभु की शरण में आकर, हमारे न रहेंगे गम।।

बता अपने प्रभु से तेरा कितना सच्चा नाता है,

बताये मार्ग पर चलना तेरे को कितना आता है।

पाप से घबराओ तो इनके पास होंगे हम।।

चरणों......................

लगा कर लो प्रभु से देख ले सुख कितना पाता है,

जो आता है शरण इनकी वो भव से पार जाता है।

साथिया बन जाओ तो इनके साथ होंगे हम।।

चरणों......................

बसा नैनो में जो अपने प्रभु को देख पाता है,

व छूकर आचरण इनके जैसा, ही वो बन जाता है।

निकट इनके आओ तो इनके जैसा होंगे हम।।

चरणों......................

नाम उजागर विद्या सागर

तर्ज - स्वनिर्मित

नाम उजागर विद्या सागर, सच्चा लगता है–2
इनके दर्शन को पाकर के, अच्छा लगता है।

देखो जी देखो विद्या सागर, गागर दिखता है–2
सागर से भी गहरा इनका, ज्ञान झलकता है।
इनके दर्शन ....

कष्ट अगर आ जाये कभी तो, सह लेते हैं खुशी से-2
जिनवाणी का लाल हमारा, पक्का लगता है।
इनके दर्शन ....

जैनो की बात नहीं है इन पर, जैनेतर भी वारी-2
कहने को गुरु शान हमारी, मन ये मचलता है।
इनके दर्शन ....

नैनों की चाहा यही है मैं तो, इन्हें-इन्हें ही देखूँ-2
लेकिन हर कोई साधु दिगम्बर अपना लगता है।
इनके दर्शन ....

दिल चाहता है इनके संग-संग, हस्तिनापुर को जाऊँ-2
***'संजय'* को आशीष मिले तो, हो ये सकता है।**

जो चाहो सुख पाना

तर्ज - मौसम है आशिकाना

जो चाहो सुख है पाना, तो मन को स्थिर करके
गुरु चरणों में ले आना, गुरु चरणों में ले आना।।जो चाहो।।

पापों से छूटने का, ये मार्ग बता रहे हैं
सुख प्राप्त हो हमें भी, चलकर दिखा रहे हैं।
करुणा कर, ये बताना (संसार पार जाना)–2 ।।जो चाहो।।

संसार की डगर में, हुए गिरते प्राणियों को
देते गुरु सहारा, पापी से पापियों को।
घर है न कोई ठिकाना (इनको न भूल जाना)–2 ।।जो चाहो।।

गुरुवर कहीं भी जायें, हम इनको न भुलायें
इनकी दया कृपा से, मिलती हैं हमको राहें।
हर मुश्किल से बचाना (सर चरणों में झुकाना)–2 ।।जो चाहो।।

रख दो हाथ सर पे

तर्ज - अब तो है तुमसे

रख दो हाथ सर पे SSS, हे गुरुवर जी।
दर पे आये है SSS, कृपा कर दो जी, जय हो।।

पापों से तुम बचाते, देखें जमाना
मुश्किल में साथ निभाते, देखें जमाना।
करने दो हमको SSS बन्दगी अपनी, जय हो।।
रख दो हाथ सर पे SSS हे गुरुवर जी।
दर पे आये है SSS कृपा कर दो जी, जय हो।।

माँ ने तो जन्मा है, आपने सँवारा
जीवन हमारा SS, आप से ही प्यारा।
भूल हो जाये तो, माफ करना जी, जय हो।।
रख दो हाथ सर पे SSS हे गुरुवर जी।
दर पे आये है SSS कृपा कर दो जी, जय हो।।

आये शरण में है, दे दो सहारा
डूबती नैया को, दे दो किनारा।
भूल न जाना SSS *'संजय* की अर्जी, जय हो।।
रख दो हाथ सर पे SSS हे गुरुवर जी।
दर पे आये है SSS कृपा कर दो जी, जय हो।।

चन्दन बन जायेगा

तर्ज - एक दिन बिक जायेगा

चन्दन बन जायेगा, गुरु चरणों को छू–2
आनन्द पायेगा, वन्दन कर ले तू।।
आनन्द-आनन्द पायेगा, वन्दन कर ले तू।
ना ही तो पछतायेगा, वंदन कर ले तू।।चन्दन।।
आ-आ ऽ शरण में आ ऽऽऽ–2

भोले-भाले गुरुवर, बैठे सामने तेरे।
प्यारे-प्यारे गुरुवर, बैठे सामने तेरे।।
ये गुरुवर रुठे ना, ये गुरुवर छूटे ना–2।
इनको अपना बनाकर, बन जाओ कुन्दन से।।
ज्ञान की धारा जो बहती है, इनसे बहती है।
बहती धारा बन जा, फिर जयकारा बोल।।चन्दन।।
आ-आ ऽ शरण में आ ऽऽऽ–2

मेरठ वाले भक्त ये कहते गुरुवर मेरे।
कोई कहे मेरे, कोई कहे मेरे, कोई कहे मेरे।।
ये गुरुवर मेरे हाँ, ये गुरुवर मेरे हाँ।
इनको अपना बनाने, को सभी तरसते।।
भक्ति की धारा जो बहती है, ऐसे बहती है।
जैसे कोई जीवन की डोर, खींचे अपनी ओर।।चन्दन।।
आ-आ ऽ शरण में आ ऽऽऽ–2

साधु निर्ग्रन्थ को है नमन

तर्ज - धीरे-धीरे मचल

साधु निर्ग्रन्थ को, है नमन बार-बार, मन गाता है।
इनके चरणों में आता है, जो बार-बार, तर जाता है।।

हो इनको छू कर के, आती है जब एक हवा–2
मेरे मन को लुभाती है, पावन फ़िज़ा–2
इससे सांसो को मिलती है, हर दम रफ्तार मन गाता है
साधु निर्ग्रन्थ को, है नमन बार-बार, मन गाता है।
इनके चरणों में आता है, जो बार-बार तर जाता है।।

हो इनके आने से, हमको दवा मिल गई–2
हँसकर ग़म को भुलाने की, सुध मिल गई–2
हर दम इनका ही आता है, मन में ख्याल मन गाता है
साधु निर्ग्रन्थ को, है नमन बार-बार, मन गाता है।
इनके चरणों में आता है, जो बार-बार तर जाता है।।

ज्ञान सागर गुरुवर को नमन

गुरुवर प्यारा प्यारा लगे

तर्ज - मैं तो छोड़ चली बाबूल का देश

हो जैन साधु दिगम्बर भेष, गुरुवर प्यारा प्यारा लगे-2
हो इनके हित-मित वचन उपदेश, गुरुवर प्यारा प्यारा लगे।

आँखों में इनके है ज्ञान की ज्योति-2
ज्ञान की ज्योति, ये मन मोह लेती-2 हो ये तो नैनों SSS
होSS ये तो नैनों में बसने लगे, गुरुवर प्यारा प्यारा लगे।।

हृदय में इनके है, करुणा का सागर-2
सागर से गहरा है, वात्सल्य गागर-2 हो ये तो साँसो SSS
होSS ये तो साँसों में आने लगे, गुरुवर प्यारा प्यारा लगे।।

चंदा भी आये है, सूरज भी आये-2
चरणों में झुक-झुक के, शीश नवाए-2 हो सारे तारे SSS
होSS सारे तारे भी गाने लगे, गुरुवर प्यारा प्यारा लगे।।

प्यारी है इनकी, मुस्कान-वाणी-2
मुस्कान-वाणी पे, दुनिया दीवानी-2 हो ये तो दिल में SSS
होSS ये तो दिल में समाने लगे, गुरुवर प्यारा प्यारा लगे।।

खुशियाँ मनाये, सब मिल के गाये-2
अवसर ये ऐसा, बार-बार आये-2 हो सारे नर-नारी SSS
होSS सारे नर-नारी झूमें कहे, गुरुवर प्यारा-प्यारा लगे।

हम तो गुरुवर के सहारे

तर्ज - बहारो मेरा जीवन भी सवॉरो

सहारे, हम तो गुरुवर के सहारे
हमें न कोई बाधा, न पीड़ा रेऽ।
सहारे...............
फँसी हो नैय्या चाहे बीच भँवर में-2
भँवर से पार कराते-2 ये गुरु हमारे।।
सहारे...............

न जग में कोई अपना है सहारा-2
शरण में आये इनके-2 तो सब हमारे।।
सहारे...............

सागर से गहरा उसका पुण्य गागर-2
हो जिस पर आप जैसे-2 गुरु की कृपा रे।।
सहारे...............

उसी का जीना हो जाता है जीना-2
जो पग से पग मिला कर-2 साथ चला रे।।
सहारे...............

सभी के दिल में रहता कोई न कोई-2
हमारे दिल में रहते-2 ये गुरु हमारे।।
सहारे...............

प्यारे-प्यारे मुनिराज

तर्ज - छोटी-सी ये दुनिया

प्यारे-प्यारे मुनिराज, आप हृदय में विराजें।

हम मेरठ के बन्दे, करेंगे वन्दे, आप होंगे जहाँ।।

अमंगल को मंगल कर देते, जहाँ-जहाँ आप पधारे।

लोगों का तांता लग जाता (दर्शन को है तुम्हारे)–2

प्यारे-प्यारे मुनिराज, आप हृदय में विराजें।

हम मेरठ के बन्दे, करेंगे वन्दे आप होंगे जहाँ।।

धन्य मुनिवर आपकी महिमा, कैसे किस मुख गावें।

तुम गुण कहन वचन बल नाहि (कैसे हम बतलावें)–2

प्यारे-प्यारे मुनिराज, आप हृदय में विराजें।

हम मेरठ के बन्दे, करेंगे वन्दे आप होंगे जहाँ।।

प्यारे-प्यारे गुरुवर आये रे

तर्ज - मेरा बाबू छैल छबीला

भोले-भाले, प्यारे-प्यारे गुरुवर आये रे
भेष दिगम्बर-धारी मुनिवर, आये-आये रे।
ढोल बजा के, शोर मचा के, मैं तो गाऊँ रे।।

गुरुवर हैं आगे-आगे, हम इनके पीछे-पीछे
कर्मों की धूल उड़ाते, ज्ञान गुलाल लुटाते।
ताली बजा के, मस्ती में आ के, मैं तो गाऊँ रे।।

पुण्य की बड़ी घड़ी है, भक्तों की फौज चली है
गुरुवर के आ जाने से, सबको बड़ी ही खुशी है।
शान में आ के, रंग जमां के मैं तो गाऊँ रे।।

भेष दिगम्बर मुद्रा, लगती है सबसे प्यारी
ये तो सभी के नैनों को, होती है सुख देने वाली।
ठुमका लगा के, कुछ इतरा के, मैं तो गाऊँ रे।।

जिसने यहाँ आकर के, गुरुवर का दर्शन किया है
उसने अपनी-अपनी, मुरादों को पूरा किया है।
भक्ति में आके, शीश झुकाके, मैं तो गाऊँ रे।।

प्रभु दर पर निकलें प्राण

तर्ज - मुझे इश्क है तुझी से

प्रभु आप के ही दर पे, ये प्राण तन से निकलें।
तुम पर नज़र टिकी हो, जब प्राण तन से निकलें।।प्रभु।।

न किसी से मैं बँधा हूँ, न कोई हो मेरे वश में।
बस आप की शरण हो, और आप के चरण हो।।
तुम से ही लो लगी हो, जब प्राण तन से निकलें।
तुम पर नज़र टिकी हो, जब प्राण तन से निकलें।।प्रभु।।

न किसी का मुझको भय हो, न किसी को मुझसे भय हो।
तेरे नाम की लगन हो, जब तक के दम में दम हो।।
हर सांस में बसे हो, जब प्राण तन से निकलें।
तुम पर नज़र टिकी हो, जब प्राण तन से निकलें।।प्रभु।।

पूजा तेरी रचाऊँ, गुणगान तेरा गाऊँ।
परिवार मित्रजन से, मैं राग को हटाऊँ।।
नजरों में तुम ही तुम हो, जब प्राण तन से निकलें।
तुम पर नज़र टिकी हो, जब प्राण तन से निकलें।।प्रभु।।

***'संजय'* की चाहना है, करना प्रभु जी पूरी।**
विषयों की कामनायें, रह जाये चाहे अधूरी।।
चरणों में सर झुका हो, जब प्राण तन से निकलें।
तुम पर नज़र टिकी हो, जब प्राण तन से निकलें।।प्रभु।।

इतनी कृपा तो करना स्वामी

तर्ज - इनती शक्ति हमें देना दाता

इतनी कृपा तो करना स्वामी, मेरे प्राण तेरे दर पे निकलें।
तेरे चरणों में ये सर झुका हो, जब ये प्राण मेरे, तन से निकलें।।

ना तो विषयों की हो कोई आशा, ना ही भोगों की हो कोई इच्छा।
ना तो नरकों का डर कोई सतावे, ना ही स्वर्गों में मन मेरा जावे।।
तेरा द्वारा हो तेरी शरण हो, जब ये प्राण मेरे, तन से निकलें।
तेरे चरणों में ये सर झुका हो, जब ये प्राण मेरे, तन से निकलें।।

ना तो मैं भी किसी से बंधा हूँ, ना ही कोई मेरे से बंधा हो।
ना किसी को भी मेरे से भय हो, ना मुझे भी किसी का भय हो।।
बस तुम्हीं से लगन-लो लगी हो, जब ये प्राण मेरे, तन से निकलें।
तेरे चरणों में ये सर झुका हो, जब ये प्राण मेरे, तन से निकलें।।

ना तो रोगो का कोई डर सतावे, ना ही याद किसी की भी आवे।
मेरा मन तेरी पूजा रचावे, मेरा मन तेरे ही गीत गावे।।
मेरी हर सांस में तुम बसे हो, जब ये प्राण मेरे, तन से निकलें।
तेरे चरणों में ये सर झुका हो, जब ये प्राण मेरे, तन से निकलें।।

सम्मेद शिखर है पावन धरा

तर्ज - आ चल के तुझे

सम्मेद शिखर है पावन धरा, जहाँ से प्रभु मोक्ष गये।
जाते रहे है, जाते रहेंगे (जब तक संसार रहे)–2।।

पर्वत की पावन धरती से, कितनो ने मोक्ष को पाया।
हाँ शाश्वत है ये धरा तो, जहाँ पारस प्रभु जी आया।।
चंदा प्रभु ने, पद्म प्रभु ने, सबने तप-ध्यान किये।
करते रहे हैं, करते रहेंगे (जब तक संसार रहे)–2।।

चन्दन यहाँ की माटी, कण-कण में प्रभु बसेरा।
हमें प्राणों से भी प्यारा, सम्मेद शिखर का सवेरा।।
दर्शन को जब भक्तों की टोली, पर्वत की ओर बढ़े।
बढ़ते रहे हैं, बढ़ते रहेंगे (जब तक संसार रहे)–2।।

पावन यहाँ की भूमि, इसलिये तो सबको लुभाया।
यहाँ जिसने ध्यान लगाया, परमात्म परम पद पाया।।
यहाँ के कण-कण में, यहाँ के घट-घट में, हैं ज्ञान के दीप जले।
जलते रहे हैं, जलते रहेंगे (जब तक संसार रहे)–2।।

यहाँ से तप कर कोई भी ज्ञानी, मुक्ति को पा सकता है।
संसार में रहकर प्राणी, संसार को तज सकता है।।
आचार्यों ने, सर्व साधुओं ने, स्व-पर कल्याण किये।
करते रहे हैं, करते रहेंगें (जब तक संसार रहे)–2।।

करो तीर्थ वन्दन

तर्ज - तुम्ही मेरे मंदिर तुम्ही मेरी पूजा

करो तीर्थ वन्दन, करो कर्म खण्डन–2
करो तीर्थ वन्दन, करो कर्म खण्डन–2

कैलाश गिरि से, आदि जिनेश्वर
मुक्ति को पाया, प्रथम तीर्थंकर।
भरत चक्रवर्ती ने जिनालय बनाकर
उपकार भारी, किया जन-जन पर।।करो।।

प्राणों से प्यारा, शिखर जी हमारा
भव सागर से, दिलाये किनारा।
एक बार वन्दे, भाव सहित जो
सहज ही पावे, वो सुगति को।।करो।।

चम्पापुरी से, वासूपुज्य स्वामी
मुक्ति को पाया, हुए मोक्ष गामी।
इनकी चरण-रज, माथे लगाओ
पाप गलाओ, पुण्य बढ़ाओ।।करो।।

गिरनारी की, छटा है निराली
नेमी प्रभु की, मोक्ष स्थली।
चालो-चालो, गिरनार चालो
नेमी प्रभु को, शीश नवां लो।।करो।।

पावापुरी तीर्थ, पावन हमारा
सारे जगत में, गूँजे एक नारा।
जोर से बोलो, जय महावीरा
सब मिल बोलो, जय महावीरा।।करो।।

हमें प्राणों से प्यारा गिरनार

तर्ज - तुझको पुकारे मेरा प्यार

नेमी प्रभु का दरबार, हो SSS

हमें प्राणों से प्यारा गिरनार, हो SSS

नेमी प्रभु का दरबार।

युगों-युगों से इस, धरा पे बहाई धर्म-प्रेम की गंगा,

इस पर्वत से, मुक्ति को पाया हुए, सिद्ध भगवन्ता।

भक्तों ने पाया दो जहान रेSSS

जैसे अंधे को मिल गई हों, दो आँख रे।।नेमी प्रभु।।

द्वारा प्रभु का, है अति प्यारा, कब्जा क्यों है किसी का

कोई भी आये, शीश झुकाये पाये, दर्श प्रभु का।

डर न किसी को हो यहाँ रे SSS

द्वारा मुक्त कराओ सरकार रे।।नेमी प्रभु।।

नेमी प्रभु की, पावन धरा को मेरा, शत्-शत् वन्दन

शत्-शत् वन्दन, हो अभिनन्दन उनका, पाये जो दर्शन।

बोल सके वो जयकार रे SSS

मिले एक बराबर अधिकार रे।।नेमी प्रभु।।

गिरनार पर्वत की महिमा

तर्ज - आओ बच्चो तुम्हें दिखाये

आओ महिमा तुम्हें दिखायें, एक पर्वत गिरनार की
इस पर्वत पर प्रभु विराजे, नेमीनाथ भगवान की।
सब मिल बोलो जय, नेमी प्रभु की जय–2।।आओ।।

सिंहासन पर जिनवर शोभें, अदभुत रूप निराला है
तीन छत्र सिर ऊपर राजे, वीतराग जिन प्यारा है।
एक घाट पर गाय और शेर, बैठें अजब नजारा है।।
मानस्तंभ देख के सबका मान सभी गल जाता है।
ऐसा आनन्द-आनन्द-आनन्द, बोलो जय भगवान की।।इस पर्वत।।

भाव सहित वंदे जो कोई, तीन लोक यश पाता है
पावन है गिरनार की भूमि, मंगल मय हो जाता है।
रोते-रोते आने वाला, हँसते-हँसते जाता है।।
नेमीनाथ का सुमिरन करके, भव सागर तर जाता है।
ऐसा आनन्द-आनन्द-आनन्द, बोलो जय भगवान की।।इस पर्वत।।

राजुल से प्रभु ब्याह रचाने, रथ जूनागढ़ जाता है
पशुओं का क्रन्दन सुनकर, वैराग उमड़ कर आता है।
सारे बन्धन तोड़ प्रभु का, रथ पर्वत पर जाता है।।
भेष दिगम्बर धारण करके परमातम पद पाता है।
जीवों के प्रति जागी करुणा, बोलो जय भगवान की।।इस पर्वत।।

चलो गिरनार चलो

तर्ज - चलो दिलदार चलो

चलो गिरनार चलो, नेमी के द्वार चलो।

हम हैं तैयार चलो SSSSSS

प्रभु का दर्श बड़ा प्यारा है-2

ये तो नैनो को (हरने वाला है)-2

चलो गिरनार चलो, नेमी के द्वार चलो।

हम हैं तैयार चलो SSSSSS

जो भी दर्शन को यहाँ आता है-2

भाग्य सोया हुआ जगाता है, हाँ जगाता है

चलो गिरनार चलो, नेमी के द्वार चलो।

हम हैं तैयार चलो SSSSSS

सबको सुख-शान्ति देने वाला है-2

दूर कष्टों को (करने वाला है)-2

चलो गिरनार चलो, नेमी के द्वार चलो।

हम हैं तैयार चलो SSSSSS

चलो गिरनार चलो

गिरनार के पर्वत पर

तर्ज - सिमटी हुई ये घड़ियाँ

गिरनार के पर्वत पर, प्रभु नेमी का द्वारा है।
जन्नत का नजारा है, जन्नत का नजारा है।।

हम पाते जहाँ जाके, मुँह माँगी, मुरादें हैं-2
इस ओर जो रुख कर ले (किस्मत ही संवर जाये)-2
गिरनार............

प्रभुनेमी के द्वारे पर, जिसने भी पुकारा है-2
संसार के सागर से (भव पार उतर जाये)-2
गिरनार............

दुख-दर्दों के घेरे में, इनका ही सहारा है-2
अपने बुरे कर्मों से (छुट जाये निखर जाये)-2
गिरनार............

कहते है यहाँ दर पर, तकदीर बदलती है-2
जो डूबने वाली है (वो नाव उबर जाये)-2
गिरनार............

हम इतने निकट आये, हम और करीब आये-2
श्रद्धा के सुमन अर्पित (करते ही चले जाये)-2
गिरनार............

आ जाओ प्रभु आओ, *'संजय'* ने पुकारा है-2
चरणों में हमें ले लो (जायें तो कहाँ जायें)-2
गिरनार............

समवशरण की महिमा

तर्ज - तोता मैना की कहानी

जिनवाणी प्रभु की वाणी, जन-जन की कल्याणी हो गई।
जिनवर की ध्वनि, गणधर ने सुनी, शास्त्रों में प्रमाणित हो गई।।
जिनवाणी.......

क्या खूब है विपुलाचल पर्वत (जहाँ वीर प्रभु के जयकारे)–2
बजे दुंदुभि झांझ और मंजीरे (ढम-ढम ढोल और बाजे नगाड़े)–2
देवांगना रहे नृत्य में मगन, और इन्द्र ढोरें प्रभु पे चौंसठ चंवर।
शोभा ये सुहानी हो गई।।
जिनवाणी...............

चलो मिल चले हम भी वहाँ पर (जहाँ वीर प्रभु जी विराजे)–2
समवशरण की अद्भुत है महिमा (मानस्तंभ मान गलाते)–2
लगती हैं जहाँ पर बारह सभा, नित दिव्य ध्वनि खिरती है जहाँ।
सारी दुनिया दीवानी हो गई।।
जिनवाणी...............

अंग जिनवर के निरखो

तर्ज - स्वनिर्मित

निरखो रे अंग जिनवर के निरखो रे।–2

समवशरण में प्रभु विराजे, वीतराग छवि निरखो रे।।निरखो।।

तीन छत्र सिर ऊपर राजे, त्रिभुवन स्वामी निरखो रे।

सिंहासन पर जिनवर सोहें, नासा दृष्टि निरखो रे।।निरखो।।

इंद्र प्रभु पे चमर ढुरावें, अद्‌भुत महिमा निरखो रे।

सुर किन्नर गण मुनि गुण गावें, गुण भण्डारी निरखो रे।।निरखो।।

एक घाट पर गाय-शेर आवे, शान्ति छवि प्रभु निरखो रे।

देखे मान गलित हो जावे, मोहनी मूरत निरखो रे।।निरखो।।

भामण्डल भव-भव दिखलावे, समता सूरत निरखो रे।

ऐसा आनन्द-आनन्द-आनन्द, वीतराग छवि निरखो रे।।निरखो।।

दशलक्षण धर्म शान हमारी जय वीरा

तर्ज - करुणा के भण्डार हमारे महावीरा

दस लक्षण धर्म शान हमारी जय वीरा, जैनों की पहचान पर्व ये जय वीरा
हर वर्ष आते हैं, याद दिलाते हैं, उन भव्य जीवों के भाग्य जग जाते हैं।
चलते जो दस धर्म मार्ग पर जय वीरा।। दस लक्षण।।

क्रोध नहीं करने से शांति को पाओगे, क्षमावान वीरों की शान बन जाओगे।
मान महा विष रूप त्याग कर पाओगे, नीच गति जाने से खुद को बचाओगे।।
शास्त्र बताते हैं मार्ग दिखाते हैं, उन भव्य जीवों के भाग्य जग जाते हैं।
चलते जो दस धर्म मार्ग पर जय वीरा।। दस लक्षण।।

कपटी कमठ सा न कपट दिखाओगे, सरल स्वभावी बनकर सबको लुभाओगे।
लोभ नहीं करने से पाप घटाओगे, सदा संतोष कर पुण्य बढ़ाओगे।।
शास्त्र बताते हैं मार्ग दिखाते हैं, उन भव्य जीवों के भाग्य जग जाते हैं।
चलते जो दस धर्म मार्ग पर जय वीरा।। दस लक्षण।।

झूठ नहीं बोलने से विश्वास पाओगे, सत्वादी बनकर के स्वर्गों में जाओगे।
संयम के मार्ग पर अगर लग जाओगे, स्वर्ण की भाँति काया को चमकाओगे।।
शास्त्र बताते हैं मार्ग दिखाते हैं, उन भव्य जीवों के भाग्य जग जाते हैं।
चलते जो दस धर्म मार्ग पर जय वीरा।। दस लक्षण।।

तप के प्रभाव से वीर बन जाओगे, वीर बन जाओगे धीर बन जाओगे।
चारों प्रकार का दान कराओगे, लाभ अंतराय को जड़ से मिटाओगे।।
शास्त्र बताते हैं मार्ग दिखाते हैं, उन भव्य जीवों के भाग्य जग जाते हैं।
चलते जो दस धर्म मार्ग पर जय वीरा।। दस लक्षण।।

तृष्णा घटाने से दुःख नहीं पाओगे, धर्म आकिंचन के मार्ग लग जाओगे।
ब्रह्मचर्य पालन कर पूजित हो जाओगे, दस धर्म पेड़ी चढ़ मोक्ष सुख पाओगे।।
शास्त्र बताते हैं मार्ग दिखाते हैं, उन भव्य जीवों के भाग्य जग जाते हैं।
चलते जो दस धर्म मार्ग पर जय वीरा।। दस लक्षण।।

सिद्धों के दरबार में

तर्ज - पापा जल्दी आ जाना

तीन लोक के पार में, सिद्धों के दरबार में-2
गर चाहो वहाँ पर जाना, पापों में न भरमाना।
दशलक्षण धर्म अपनाना, दशलक्षण धर्म अपनाना।।

दशलक्षण पर्व आया है, उत्सव पाठ कराया है।
रोजाना मंदिर जाना, रोजाना पूजा करना।।
दिन से ही भोजन करना, पानी छान कर पीना।
संयम के पथ पर चलना, (क्रोध नहीं कभी करना)-2
पापों में न भरमाना।।दशलक्षण धर्म अपनाना।।

प्रभु मौन लिए बैठे हैं, कहीं हम से ना रूठे हैं।
अपने प्रभु को मनाना है, दया धर्म अपनाना है।।
हिंसा में ना आना है, सत्पथ पर चले जाना है।
सबको गले लगाना, (ज्ञान की जोत जलाना)-2
पापों में न भरमाना।।दशलक्षण धर्म अपनाना।।

मैं खारे समुद्र का पानी

तर्ज - रंग शरबतों का

तुम क्षीर सागर का जल, मैं खारे समुद्र का पानी।
तुम वीतरागी प्रभु जी, मैं हूँ बहुत अभिमानी।।
तुम क्षीर...............

प्रभु गुण अनन्त तुमने, अपने में प्रगटाये,
इसीलिए तो है हम तेरी शरण आये।
हम तेरी शरण आये, बन जायें अभिरामी।।
तुम क्षीर सागर का जल मैं खारे समुद्र का पानी।
तुम वीतरागी प्रभु जी मैं हूँ बहुत अभिमानी।।
तुम क्षीर...............

भवसागर से तुमने, कितनों को तारा है
अब और नहीं हमको, बस तेरा सहारा है।
बस तेरा सहारा है, विश्वास यही सुखदानी।।
तुम क्षीर सागर का जल, मैं खारे समुद्र का पानी।
तुम वीतरागी प्रभु जी, मैं हूँ बहुत अभिमानी।।
तुम क्षीर...............

अंग जिनवर के निहारो

तर्ज - जाने वो कैसे लोग थे

अंग जिनवर के, और निहारो, और निहारो तुम।
निरख-निरख सुख आनन्द पालो, आनन्द पालो तुमऽऽऽ।।अंग जिनवर।।

सोया अपना भाग्य जगा लो, भाग्य जगा लो तुमऽऽऽ–2
अवसर आया प्रभु गुण गा लो, प्रभु गुण गा लो तुमऽऽऽ–2
निरख-निरख सुख आनन्द पालो, आनन्द पालो तुमऽऽऽ।।अंग जिनवर।।

चालो-चालो मंदिर चालो, दर्शन पालो तुमऽऽऽ–2
अष्ट द्रव्य का थाल सजा के, पूजा रचा लो तुमऽऽऽ–2
निरख-निरख सुख आनन्द पालो, आनन्द पालो तुमऽऽऽ।।अंग जिनवर।।

दस धर्मों का पालन करके, पुण्य कमा लो तुमऽऽऽ–2
रत्नत्रय की सीढ़ी चढ़कर, भव दुःख टालो तुमऽऽऽ–2
निरख-निरख सुख आनन्द पालो, आनन्द पालो तुमऽऽऽ।।अंग जिनवर।।

अपने पाप धो लिए

तर्ज - स्वर्निमित

जय जिनेन्द्र बोलिए, अपने मुँह को खोलिए
जय जिनेन्द्र बोल-बोल कर, अपने पाप धोलिए।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र–2

प्रातः जल्द उठ जाया कर, मंदिर को नित जाया कर
अपने प्रभु को दिल में बिठाकर, गीत प्रभु के गाया कर।
नहीं लगेगा मोल रे, मत करना संकोच रे
नहीं चला है नहीं चलेगा कभी किसी का जोर रे।।जय जिनेन्द्र।।

प्रातः जल्द उठ जाया कर, मंदिर को नित जाया कर
अपने प्रभु का न्वहन करा के, पूजा पाठ रचाया कर।
मुख से जो कुछ बोल रे, पहले उसको तोल रे
नहीं रहा है नहीं रहेगा, चला-चली का खेल रे।।जय जिनेन्द्र।।

प्रातः जल्द उठ जाया कर, मंदिर को नित जाया कर
अपने प्रभु का तिलक लगा कर, ध्यान प्रभु का लगाया कर।
कटुक वचन मत बोल रे, अमृत के रस घोल रे
नहीं मरा है नहीं मरेगा, आतम है अनमोल रे।।जय जिनेन्द्र।।

प्रातः जल्द उठ जाया कर, मंदिर को नित जाया कर
अपने प्रभु की आरती गाकर, ज्ञान के दीप जलाया कर।
मत करना तू शोर रे, कर्मों के बन्ध तोड़ रे
यहीं धरा रह जायेगा 'संजय' मुक्ति के पट खोल रे।।जय जिनेन्द्र।।

ऐसी लागी लगन

तर्ज - अच्यूतम केशवं

दर्शनं देव देवस्य पाप नाशनं,

दर्शनं स्वर्ग सोपान मोक्ष साधनं।

ऐसी लागी लगन, ऐसी लागी लगन,

ले लो अपनी शरण, ले लो अपनी शरण।

कौन कहता है आदिनाथ आते नहीं, राजा श्रेयांस के जैसे बुलाते नहीं।

कौन करता है चन्द्रप्रभु आते नहीं, सति सोमा के जैसे बुलाते नहीं।

कौन कहता है शांतिनाथ आते नहीं, सेठ सुदर्शन के जैसे बुलाते नहीं।

कौन कहता है नेमी जी आते नहीं, राजुलमती के जैसे बुलाते नहीं।

कौन कहता है पारस जी आते नहीं, देवी पद्मा के जैसे बुलाते नहीं।

कौन कहता है महावीर आते नहीं, चंदनबाला के जैसे बुलाते नहीं।

कौन कहता है मुक्ति को पाते नहीं, कारण इच्छायें अपनी घटाते नहीं।

कौन कहता है सुख-शांति पाते नहीं, कभी प्यासे को पानी पिलाते नहीं।

जन्म कल्याणक की सुन्दर भक्ति

तर्ज - खुशियों से झुमें मन सारे

खुशियों में झुमें लोग सारे, कि जन्में है, प्रभु जी हमारे-2
सिद्धारथ के दुलारे, कि जन्मे हैं, प्रभु जी हमारे।।खुशियों।।

चैत्र शुक्ल तेरस तिथि आयी, चारो ओर बजे शहनाई-2
बाजे ढोल नगाड़े, कि जन्में हैं प्रभु जी हमारे।।खुशियों।।

कुण्डलपुर की छटा निराली, चारो ओर बड़ी खुशहाली-2
सज गये गली चौबारे, कि जन्में हैं प्रभु जी हमारे।।खुशियों।।

रेशम की डोरी मणियों का पलना, जिसमें झूले त्रिशला का ललना-2
मन में मगन हुए सारे, कि जन्में हैं प्रभु जी हमारे।।खुशियों।।

बाल प्रभु का दर्शन प्यारा, कोई कहे मेरा, कोई कहे हमारा-2
तरसे नैना सारे, कि जन्मे हैं प्रभु जी हमारे।।खुशियों।।

दूर दूर से सब जन आवें, मंगल गीत बधाई गावें-2
भेट में कुछ-कुछ लावें कि जन्में हैं प्रभु जी हमारे।।खुशियों।।

तीन लोक में खुशियाँ छाई, नाचें गावें लोग-लुगाई-2
दुखों से मिले छुटकारे, कि जन्में हैं प्रभु जी हमारे।।खुशियों।।

जन्मा प्रभु जी

तर्ज - मेरा बाबू छैल छबीला

जन्मा प्रभु जी, त्रिशला का ललना, मैं तो गाँऊ रे।
प्यारा-प्यारा, त्रिशला का ललना, मैं तो गाँऊ रे।।
ढोल बजा के, शोर मचा के, मैं तो गाऊँ रे।
हो मैं तो गाँऊ रे, जन्मा प्रभु जी.....

हाथों में लेकर आवें, कोई झाँझ-मझीरे-2
देने को भेंट भी लावें, उत्तम द्रव्य नवीने।
पिता हर्षावें मोहरे लूटावें (बलि-बलि जाऊँ रे)-2
हो मैं तो गाँऊ रे, जन्मा प्रभु जी.....

कहीं बाजे हैं नगाड़े, कहीं बाजे शहनाई-2
झुमे-नाचे-गावें सब जन लोग लुगाई
रत्नों की वर्षा, हो रहीं वर्षा (खुशियाँ छाई रे)-2
हो मैं तो गाँऊ रे, जन्मा प्रभु जी.....

बाल प्रभु की प्यारी, जो भी छवि निहारे-2
बिगड़ी सब बन जावे, सोया भाग्य जगावे
भैया भी गावे, बहना भी गावे (सब मिल गायें रे)-2
हो मैं तो गाँऊ रे, जन्मा प्रभु जी.....

जन्मा प्रभुजी जन्मा रे

तर्ज - चलत मुसाफिर मोह लियो रे

जन्मा प्रभुजी जन्मा रे, म्हारा प्रभु जी जन्मा–2

जन्मा प्रभुजी जन्मा रे, म्हारा प्रभु जी जन्मा–2

बाल प्रभु को इन्द्राणी लावे–2, नाच दिखावे ठुमका लगावे।

इन्द्र को अपने चिढ़ावे रे, म्हारा प्रभु जी जन्मा।।जन्मा प्रभु जी।।

इन्द्र शचि से माँगे प्रभु को–2, वो बोले मैं ना दूँगी प्रभु को।

इन्द्र को ठिंगा दिखावे रे, म्हारा प्रभु जी जन्मा–2।।जन्मा प्रभु जी।।

माल खजाना सारा ही ले लो–2, मेरे प्रभु को मुझको दे दो।

अपनी शचि को मनावे रे, म्हारा प्रभु जी जन्मा।।जन्मा प्रभु जी।।

ऐरावत पर निकली सवारी–2, नाचें गावें सब नर-नारी।

रत्नों की वर्षा हो रही रे, म्हारा प्रभु जी जन्मा।।जन्मा प्रभु जी।।

हाथों में लेकर मणियों के कलशे–2, मेरु पर इंद्र अभिषेक करते।

सहस्रऽठोतर कलशों से, म्हारा प्रभु जी जन्मा।।जन्मा प्रभु जी।।

जन्मा प्रभु जी जनमा रे

जन्म कल्याणक

तर्ज - पंख होते तो उड़ आती रे

ओऽऽऽऽ जन्म होते ही चली आयी रे, इन्द्रों की टोलिया।
सब देख-देख हर्षाये रे।। ओऽऽऽ जन्म।।

हाथों में लेकर मणियों के कलशे, क्षीर सागर से जल भर-भर के
बाल प्रभु न्वहन कराये, धन्य-धन्य-धन्य सब जग में।
पावन हुई ये धरा, सब देख-देख हर्षाये रे।।
जन्म होते ही चली आयी रे, इन्द्रों की टोलियाँ।
सब देख-देख हर्षाये रे।। ओऽऽऽ जन्म।।

देवेन्द्र बोले अपनी शची से, बाल प्रभु को लाओ महल से
मैं भी तो देखूं रूप प्रभु का, नैना तरसे दर्शन को तरसे।
नहीं देर करो लाओ ना, मेरा धैर्य छूट सा जाये रे।।
जन्म होते ही चली आयी रे, इन्द्रों की टोलियाँ।
सब देख-देख हर्षाये रे।। ओऽऽऽ जन्म।।

हाथों में लेकर आयी प्रभु को, खोई सुध-बुध देख प्रभु को
ऐसा सुन्दर रूप प्रभु का, देखा न होगा किसी ने किसी का।
जीवन सफल हो गया, इन्द्र नेत्र हजार बनाये रे।।
जन्म होते ही चली आयी रे, इन्द्रों की टोलियाँ।
सब देख-देख हर्षाये रे।। ओऽऽऽ जन्म।।

जन्मा प्रभु जी आज हमारा

तर्ज - आधा है चन्द्रमा रात आधी

गाओ सब गीत मिल आज प्यारा।

जन्मा प्रभु जी (आज हमारा)–2।।गाओ।।

बड़ी खुशियाँ है, छाई नगर में।
नाभि राजा के, द्वारे अवध में।।
कोई नृत्य करे, कहीं बाजे बजे।
प्रफुल्लित हो गया (जहान सारा)–2।।गाओ।।

तीनों लोकों में शान्ति है छाई।
मंगल गीत और बजती शहनाई।।
दुःख दूर हुए नवजीवन मिले।
बहे प्रेम की गंगा की (आज धारा)–2।।गाओ।।

सारी नगरी उमड़ कर आयी।
पिता माता को देने बधाई।।
देवेन्द्र आये शचि साथ लाये।
और कुबेर लुटायें हैं (धन सारा)–2।।गाओ।।

शुभ अवसर ये ऐसा आया।
बाल रूप प्रभु का मन भाया।।
प्रभु पलना झूलें लाल मोतियन जड़े।
होले-होले झुलाये है (*'संजय'* थारा)–2।।गाओ।।

जन्म कल्याणक की खुशियाँ

तर्ज - मच गया शोर सारी नगरी रे

मच गया शोर सारी जगती रे, सारी जगती रे

जन्मा प्रभु जी त्रिशला का लाल महावीर जी रे–2

तीनों ही लोक में खुशियाँ है छाँई, बजते नगाड़े हैं मंगल शहनाई–2

नाँचें हैं गाँवें हैं, लोग-लुगाई (बाल प्रभु जी ले अंगड़ाई)–2

प्रभु का रूप देखो, देखो रे देखो-देखो–2

सारे के सारे मस्ती में।।जन्मा प्रभु जी..........

मच गया शोर..........

सारी नगरिया उमड़-उमड़ आयी, माता-पिता को देने बधाई–2

इन्द्र भी आये, इन्द्राणी आयी (रत्नों की वर्षा करी-करायी)–2

हाथों में लेके बाजा, सारे बजायें बाजा–2

सारी ही सारी नगरी में।।जन्मा प्रभु जी..........

मच गया शोर..........

पलने में जो झूले ललना है

तर्ज - छू लेने दो

पलने में जो झूले ललना है, कोई और नहीं भगवान हैं यें।
चरणों में झुका लो है माथा, हैं सारे तीरथ धाम हैं यें।।पलने।।

छा जायें जीवन में खुशियाँ, खिले जायें बागों में कलियाँ।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, रत्नों की ऐसी खान हैं यें।।
पलने में जो झूले ललना है, कोई और नहीं भगवान हैं यें।
चरणों में झुका लो है माथा, हैं सारे तीरथ धाम हैं यें।।पलने।।

सब कष्टों को हरने वाले, सुख-शान्ति को देने वाले।
हम सबकी आँखों के तारे, हम सबके तारण हार हैं यें।।
पलने में जो झूले ललना है, कोई और नहीं भगवान हैं यें।
चरणों में झुका लो है माथा, हैं सारे तीरथ धाम हैं यें।।पलने।।

पलने में जो झूले ललना

मणियों के पलने में झूले ललना है

तर्ज - फूलों का तारों का

मणियों के पलने में, झूले ललना है।
रेशम की डोरी है, चमके फूंदना है।।
होले-होले हमें झोटे देना है।
मणियों के पलने में, झूले ललना है।।

देखो-देखो जन्में है, तीन लोक के नाथ।
संग अपने ये लाये हैं, खुशियों की सौगात।।
पाँव में पैंजनियां हाथों में कंगना है।
रेशम की डोरी है, चमके फूंदना है।।

प्यारा-प्यारा लागे है, माँ त्रिशला का लाल।
कारे-कारे नैना और कारे-कारे बाल।।
माथे पे चमके है, जैसे बिंदिया है।
रेशम की डोरी है, चमके फूंदना है।।

बोलो-बोलो-बोलो, जय बोलो प्रभु की आज।
धन्य सारी नगरी, और धन्य है समाज।।
भक्ति में झूमे रे, भव्य नजारा है।
रेशम की डोरी है चमके फूंदना है।।

रथ यात्रा महोत्सव

तर्ज - अपने पिया की मैं तो

स्वर्ण के रथ पे निकली प्रभु की सवारी–2
देखन को आये-आये, सारे नर-नारी जी, निकली सवारी।
स्वर्ण के रथ पे निकली प्रभु की सवारी।।

वीतराग छवि प्यारी लागे, स्वर्णिम के रथ पर प्रभु विराजे-2
प्रभु विराजे, ढोली ढोल बजाये जा, *'संजय'* (गाना गाये जा)-2
भक्ति में झूमे-नाचे हो SSS
भक्ति में झूमे-नाचे, सारे नर-नारी जी-2।।स्वर्ण के रथ।।

इन्द्र-इन्द्रानी मिलकर आवें, धन कुबेर कलशा ले आवें-2
कलशा ले आवें, धन से ये भर जायेगा, कलशा कम पड़ जायेगा
जय-जयकारो से गूंजे हो SSS
जय-जयकारो से गूंजे, नगरी ये सारी-2।।स्वर्ण के रथ।।

कोई प्रभु पे चंवर ठुरावे, कोई मंगल आरती गावे-2
आरती गावे, ज्ञान की जोत जलाये जा, प्रेम की गंगा बहाये जा।
गाते बजाते चले हो SSS
गाते बजाते चले, प्रभु के पुजारी-2।।स्वर्ण के रथ।।

मोक्ष की राह चले

तर्ज - अपनी आँखों में बसाकर

मन में वैराग्य जगाकर, मोक्ष की राह चले।
आत्म विश्वास जगाकर, मोक्ष की राह चले।। मन में।।

सरसो का दाना भी, चुभता था जिन्हें मखमल पर।
काया की सुध ना, हो गीदड़ से तन के कटने पर–2।।
तन से मन-मोह हटाकर, मोक्ष की राह चले।
आत्म विश्वास जगाकर, मोक्ष की राह चले।। मन में।।

नेमी दुल्हा बन कर चले थे, ब्याहने राजुल को।
पशुओं का क्रन्दन, सुन मुड़ गये सत् पथ पाने को–2।।
लक्ष्य गिरनार बनाकर, मोक्ष की राह चले।
आत्म विश्वास जगाकर, मोक्ष की राह चले।। मन में।।

पाँच थे पाण्डव, मुनि अवस्था में तप करते।
लोहे की गर्म सलाखों से, उनके तन जलते–2।।
शुद्धोपयोग बनाकर, मोक्ष की राह चले।
आत्म विश्वास जगाकर, मोक्ष की राह चले।। मन में।।

जन्म हजारों में कोई-कोई पाये रे

तर्ज - इन हवाओं में इन फिजाओं में

जन्म हजारों में कोई-कोई पाये रे–2
जिसको वैराग भाव आये होऽऽऽ
घर में रहकर घर न भाये रे–2
जिसको वैराग भाव आये, उनकी जय हो
जिसको वैराग भाव आये होऽऽऽ

दुर्लभ है नर तन का पाना, उत्तम कुल और जैन घराना।
दुर्लभ से दुर्लभ है मिलना, सत्संग साधु धर्म निभाना।।
जनम अपना सफल बनाये रे, जिसको वैराग भाव आये होऽऽऽ

धन्य हैं वो मुनिवर जिन्होंने, सब कुछ होते घर को छोड़ा।
भेष दिगम्बर धारण करके, आतम हित में बंधन तोड़ा।।
कंचन कोमल काय सुखाये रे, जिसको वैराग भाव आये होऽऽऽ

'जम्बू स्वामी' जग में नामी, वैराग्य की मन में ठानी।
बनने को कई सुन्दर रानी, बात किसी की एक न मानी।।
सबको छोड़ा बंध न पाये रे, जिसको वैराग भाव आये होऽऽऽ

जड़ से भिन्न *'संजय'* ये चेतन, इसका दुनिया से क्या नाता।
ज्यों कीचड़ में खिलता कमल, अपनी सुन्दरता बिखराता।।
बात समझ में उसको आये रे, जिसको वैराग भाव आये होऽऽऽ

प्रभु की पालकी उठाओ

तर्ज - चलो रे डोली

हो ऽऽ प्रभु की पालकी उठाओ यहाँ, दीक्षा दिवस की घड़ी आयी-2
पुण्य का अवसर ये मिलता कहाँ, पालकी उठाओ घड़ी आयी।।प्रभु की।।

जिन महलों में हर सुविधा थी, उन महलों से कर ली दूरी।
रिश्ते नाते न बाँधे कोई डोर है, वैराग की भावना पूरी-पूरी।।
इनके तो पीछे चले भीड़ अपार, दीक्षा दिवस की घड़ी आयी।।
प्रभु की पालकी ....

वन में जाके खुद दीक्षा ली, निज में निज को पा लेने की।
पंचमुस्ठी केश लोंच कर लिया है, दिगम्बरी दीक्षा ऐसी होती।।
तन पे न रखा कोई वस्त्र श्रृंगार, तप करने की घड़ी आयी।
प्रभु की पालकी ....

प्रभु की पालकी उठाओ

श्री आदिनाथ भगवान का नगर में प्रवेश

(प्रथम आहार)

तर्ज - श्री बाहुबली भगवान का मस्तकाभिषेक

श्री आदिनाथ भगवान का, नगर में प्रवेश–2
छःमास के बाद उठे हैं, तप कर आहार लेने।
धन्य-धन्य वे लोग सभी जो, यहाँ प्रभु को देखें।।
नगर में प्रवेश, श्री आदिनाथ..............

द्वार-द्वार पर नगर वासियों के, हाथ में द्रव्य अनेक।
कोई हाथी-घोड़ा लाये, रत्न लाल कोई दिखलाये।।
कोई भोजन थाल सजाये, वस्त्र अनेक कोई दिखलाये।
देख-देख कर आगे बढ़ते, विधि न मिलती वापिस मुड़ते।।
बीत रहे हैं इसी तरह से, दिन पे दिन अनेक।
छः मास हो चुके प्रभु को, हुआ न आहार एक।।
नगर में प्रवेश, श्री आदिनाथ............

एक दिन प्रभु हस्तिनापुर पहुँचे, जहाँ सोमप्रभ राज्य करते।
छोटे भाई श्रेयांश थे जिनके, अत्रो-अत्रो तिष्ठो कहते।।
प्रभु को पड़गाहन कराकर, नवधा भक्ति से आहार कराया।
श्री श्रेयांश के आहार दान की, करें प्रशंसा देव।।
पुष्प वृष्टि आकाश से होती, नाचें-गायें देव।
धन्य-धन्य वे लोग सभी जो, यहाँ प्रभु को देखें।।
नगर में प्रवेश, श्री आदिनाथ..............

श्री आदिनाथ भगवान का

वृक्ष लगाओ धरा बचाओ

तर्ज - तीर्थ बचाओ, धर्म बचाओ

वृक्ष लगाओ, धरा बचाओ, यही हमारा नारा।
जन-जन के अंतर में जागे, शाकाहार विचारा।।
बोलो-बोलो, दया धर्म की जय।
बोलो-बोलो, विश्व धर्म की जय।।

इस धरती पर, इस पृथ्वी पर, जो है प्रभु का प्यारा।
वृक्ष लगाये, धरा बचाये, बनकर शाकाहारा।।
खान-पान पर निर्भर करता, पर्यावरण हमारा।
जन-जन के अन्तर में जागे, शाकाहार विचारा।। बोलो बोलो।।

पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु को, हमें बचाना होगा।
जगह-जगह पर वृक्ष लगायें, अभियान चलाना होगा।।
इन्हीं से जीवन है हमारा, इन्हीं का उपकारा।
जन-जन के अन्तर में जागे, शाकाहार विचारा।। बोलो बोलो।।

जीव-जीव का उपकारक है, प्रभु हमको बतलायें।
स्वर्ग समान बने ये धरती, मैत्री भाव बनायें।।
हिंसा की ज्वाला में होता, किसका कौन सहारा?
जन-जन के अंतर में जागे, शाकाहार विचारा।। बोलो बोलो।।

वृक्ष लगाओ धरा बचाओ, यही हमारा नारा
वृक्ष लगाओ जल बचाओ, यही हमारा नारा
वृक्ष लगाओ अग्नि बचाओ,यही हमारा नारा
वृक्ष लगाओ वायु बचाओ, यही हमारा नारा
वृक्ष लगाओ जीव बचाओ, यही हमारा नारा

सण्डे हो या मंडे, कोई कभी न खाये अण्डे

तर्ज - बच्चे मन के सच्चे

सण्डे हो या मंडे, कोई कभी न खाये अण्डे।
ये कोई शाकाहार नहीं हैं, इनमें चूजे पलते।।सण्डे।।

- इनमें नन्ही जान है जो, समझो न बेजान है वो।
सुख-दुःख अनुभव करते हैं, हम जैसे ही बढ़ते हैं–2
जीवों के दुःख को दुःख समझें, करुणा मन में जगायें।।सण्डे।।

- गर्भ में बालक आता है, रूप न कुछ भी पाता है।
क्या उसमें कोई जान नहीं, उसकी कोई पहचान नहीं–2
जान से ज्यादा सबको होते, अपने प्यारे बच्चे।।सण्डे।।

- एक काँटा लग जाता है, पीड़ित मन हो जाता है।
आकुल-व्याकुल हो जाते, काम नहीं कुछ कर पाते–2
फिर कैसे इनको खा लेते, आश्चर्य ये बढ़के।।सण्डे।।

- जनम-जनम का साथ है, लाख पते की बात है।
आज हम इनको खायेंगे, कल ये हमको सतायेंगे–2
बदले के इस भाव से ही, जनम-मरण है चलते।।सण्डे।।

- अण्डे में ताकत होती, मन की ये झूठी भ्रांति।
भ्रम में जीना छोड़ दो, सत्य से नाता जोड़ लो–2
हमको जिससे ताकत मिलती, फल-सब्जी-अन्न होते।।सण्डे।।

- हाथी की ताकत देखो, घोड़े में शक्ति देखो।
दाना चने का खाता है, विश्व में जाना जाता है–2
पूरा शाकाहारी होकर, पावर ये दिखलाये।।सण्डे।।

- भारत की पहचान बनो, दया धर्म की शान बनो।
आज प्रतिज्ञा करते हैं, संयम पथ पर चलते हैं–2
लाख दुःखों की एक दवा है, शाकाहार अपनायें।।सण्डे।।

जैनी हो तो दिन से खाना

तर्ज - स्वनिर्मित

जैनी हो तो दिन से खाना, रात में खाना-खाना छोड़।
रोजाना मंदिर में जाना, मंदिर आना-जाना न छोड़।।

ये कैसा पागलपन है, घर पर तो तू न खाये।
ब्याह-शादी में रात को खाना, रात में खाना-खाना छोड़।।
जैनी हो तो दिन से खाना, रात में खाना-खाना छोड़।
रोजाना मंदिर में जाना, मंदिर आना-जाना न छोड़।।

मंदिर घर से दूर नहीं है, फिर भी मंदिर न जाये।
दूर अगर हो जाये मंदिर, कभी तो आना-जाना जोड़।।
जैनी हो तो दिन से खाना, रात में खाना-खाना छोड़।
रोजाना मंदिर में जाना, मंदिर आना-जाना न छोड़।।

जीभ लपक के चक्कर में तू, ऐसा-वैसा मत खाना।
'परम अहिंसा धर्म' निभाना, धर्म निभाना न तू छोड़।।
जैनी हो तो दिन से खाना, रात में खाना-खाना छोड़।
रोजाना मंदिर में जाना, मंदिर आना-जाना न छोड़।।

न लुटाओ गऊधन

तर्ज - इंसाफ की डगर पे

निर्यात मांस करके, अब न लुटाओ गऊधन।
अब न लुटाओ गऊधन, और न लुटाओ पशुधन।।

- तेजी से कट रहे हैं, संख्या में घट रहे हैं
  दूध देती गाय-भैंसे, इन्सान डस रहे हैं।
  अपने ही बालकों का, दुग्धपान छीन रहे हैं।।निर्यात।।

- खून जिनके मुँह लगा है, उनका न कुछ पता है
  जब पशु न रहेंगे, फिर हम भी तो कटेंगे।
  कमजोर पड़ गये तो, कल होगी अपनी बारी।।निर्यात।।

- निर्यात मांस से हाँ, ये पृथ्वी सड़ रही है
  जल में जहर घुला है, वायु में भी मिला है।
  बदबू से सारा पर्यावरण बिगड़ रहा है।।निर्यात।।

- संकट की बड़ी घड़ी है, विपत्तियाँ खड़ी है
  आयेंगे तूफाँ भारी, कर लो चलने की तैयारी।
  एक-एक अनेक आह, मिलकर धरा हिलाये।।निर्यात।।

- एक ऐसा कोई बता दो, केवल मांस खाता हो
  नहीं दूध-रोटी खाये, ताकत जरा दिखाये।
  पावर बड़ी दिखाता, घोड़ा है शाकाहारी।।निर्यात।।

- किसने बताया वध है, जीने का सबको हक है
  जिसने हमें बनाया, उस दाता के ही सब है।
  सब उसकी ही निशानी, सब उसकी ही कहानी।।निर्यात।।

दिलों में जहर मत घोलो

तर्ज - न झटको जुल्फ से पानी

दिलों में जहर मत घोलो, सभी का यही ठिकाना है।

चार दिन की ये जिन्दगानी, छोड़कर सबको जाना है।।दिलों में।।

सभी के बाप-दादा ने, बिताया यहीं पे जीवन है–2

यहीं जीना यहीं मरना, मिटा दो भय का साया है।

चार दिन की ये जिन्दगानी, छोड़कर सबको जाना है।।दिलों में।।

यदि हम अपना, बच्चों का, ये जीवन सुखमय चाहते हैं–2

सीखा कर प्रेम की भाषा, दिलों से बैर मिटाना है।

चार दिन की ये जिन्दगानी, छोड़कर सबको जाना है।।दिलों में।।

सभी उस दाता के बन्दे, हमें जिसने बनाया है–2

सभी का एक है सुख-दुःख, एक सी खून-काया है।

चार दिन की ये जिन्दगानी, छोड़कर सबको जाना है।।दिलों में।।

न खेलो खून की होली, बचा लो जिन्दगी अपनी-2

जिओ और जीने दो सबको, सभी धर्मों में आया है।

चार दिन की ये जिन्दगानी, छोड़कर सबको जाना है।।दिलों में।।

खून किसी का नहीं बहाओ

तर्ज - स्वनिर्मित

मंदिर-मस्जिद जाओ न जाओ
खून किसी का नहीं बहाओ।

जीव-जीव का उपकारक है
सबको अपने गले लगाओ।

आग लगे चाहे बुझा न पाओ
कभी किसी का घर न जलाओ।

भूख से चाहे खुद मर जाओ
छुरी किसी पर नहीं चलाओ।

पूजा चाहे कर नहीं पाओ
बलि किसी की नहीं चढ़ाओ।

बच्चे को कुछ पढ़ लिखने दो
उससे बोझा नहीं उठवाओ।

डाक्टर को डाक्टर रहने दो
गर्भ में बेटी नहीं मरवाओ।

प्यार में हद चाहे पार कर जाओ
प्रभु कृपा को नहीं ठुकराओ।

सब धर्मों का सार यही है
इसी राह को तुम अपनाओ।

करुणा-दया निभाना

तर्ज - सजना साथ निभाना

करुणा-दया निभाना, करुणा-दया निभाना।

गिरते हुए को देना सहारा, प्यासे को पानी पिलाना।।

करुणा-दया निभानाSSS

बंगला बड़ा हो, व्यापार बड़ा हो, लाभ नहीं है, जो दिल न बड़ा हो।

झूठी तेरी शान और शौकत, झूठी तेरी प्रभु से मौहब्बत।।

जीवन यूं ही गंवाना-2

करुणा-दया निभानाSSS

कर्मों की होती है, मार बड़ी भारी, आज कोई राजा, है कल वो भिखारी।

सतकर्मों से सब सुख मिलते, पाप कर्म से दुःख ही बढ़ते।।

ये तू भूल न जाना-2

करुणा-दया निभानाSSS

प्रभु जैसी शक्ति, है सब में समाई, व्यर्थ की बातों में, यूँ ही गवाँई।

पहले अपनी शक्ति तोलो, अपने प्रभु की फिर जय बोलो।।

शक्ति को न छिपाना-2

करुणा-दया निभानाSSS

आतम की ज्योति जले

तर्ज - जब तलक गंगा मैया में पानी रहे

जब तलक तन में आतम की ज्योति जले,
तब तलक ही तो ये (जिन्दगानी रहे)–2।
तन में रहता चेतन, तन में न दिखता चेतन।।

दो द्रव्यों की है ये कहानी, जब मिले तब बने नई निशानी।
आतम है अलग और शरीर अलग।।
आतम है अलग और शरीर अलग।
जैसे दूध में घृत न दिखाये पड़े, न दिखाई पड़े।।
तन में रहता.....................

अनादि काल से मिलते बिछड़ते, चारों गतियों में भ्रमण करते।
कभी ऊँट बने, लाद बोझा चले।।
भैंसा बकरा बने, तन काट खाये गये।
बड़े दुःखों की ये जिन्दगानी रहे, जिन्दगानी रहे।।
तन में रहता.....................

सब कर्मों का है लेखा-जोखा, जैसा करता है वैसा ही भरता।
कोई पाप करे, और सुख से रहे।।
कोई सत् कर्म करे, और दुःख सह रहे।
पूर्व कर्मों की भी तो चुकानी पड़े, हाँ चुकानी पड़े।।
तन में रहता.....................

आयेगा आने वाला जाएगा

प्रभु हमको तारो तारदो

शुभारंभ
जिन गुण
भक्ति माला
भाग-2

आया कहाँ से जाना कहाँ है

तर्ज - मेरा जीवन कोरा कागज

आया कहाँ से, जाना कहाँ है, सोच तो जरा।
कौन है तू, तेरा क्या ठिकाना, ढूंढ ले जरा।। आया।।

तन में रहते प्राण जब तक (तब तलक है तू)–2
एक दिन ऐसा भी होगा (न रहेगा तू)–2
तन से पंछी-2, उड़ ये जाये, कौन देश रे।।
आया कहाँ से, जाना कहाँ है, सोच तो जरा।
कौन है तू, तेरा क्या ठिकाना, ढूंढ ले जरा।। आया।।

सजने-धजने में निकल गई (सारी जिन्दगी)–2
विषय भोगों में निकल गई (सारी जिन्दगी)–2
खुद ही खुद को–2, न पहचाना प्रभु को भूल गये।।
आया कहाँ से, जाना कहाँ है, सोच तो जरा।
कौन है तू, तेरा क्या ठिकाना, ढूंढ ले जरा।। आया।।

'संजय' किसको अपना समझे (कौन है तेरा)–2
मेरे सपने मेरे अपने (है ये भ्रम तेरा)–2
मोह माया–2, को हटा, मुश्किल बढ़ायेगा।।
आया कहाँ से, जाना कहाँ है, सोच तो जरा।
कौन है तू, तेरा क्या ठिकाना ढूंढ ले जरा।।

आया कहां से जाना कहां है

आत्मा परमात्मा बन गयी

तर्ज – दूरियाँ नजदीकियाँ बन गई

आत्मा-परमात्मा बन गयी, तप धरम का कमाल है।
आत्मा....................

नर्क गति के दुःखों को, जो सह रहे थे
तिर्यंच गति में आ के, कुछ-कुछ संभल रहे थे।
स्वर्ग गये फिर मानस देह मिली।। तप धरम।।

हम जैसे तुम जैसे, इस धरती पर आये
भेष दिगम्बर लेकर, आचार्य-मुनि कहलाये।
दर्शन को फिर भीड़ जुड़ने लगी।। तप धरम।।

बारह प्रकार का सम्यक, तप कर कर्म मिटाये
छूटे चार घातिया कर्म, अनन्त चतुष्टय पाये।
केवल ज्ञान की ज्योति फिर जल गई।। तप धरम।।

ज्ञान कल्याणक उत्सव, को देव स्वर्ग से आये
करी समवशरण की रचना, जो धर्म सभा कहलाये।
इन्द्रों द्वारा चौंसठ चंवर ढुराए।। तप धरम।।

दिव्य ध्वनि खिरती है, एक दिन में चार बार
भविजन सुन-सुन-सुनकर, करते आत्म कल्याण।
कर्म नाश कर आत्म सिद्धि प्रकटाई।। तप धरम।।

तुझे आतम रस न भाये

तर्ज - तोरा मन दर्पण कहलाये

तुझे आतम रस न भाये, तुझे आतम रस न भाये।
पर द्रव्यों में, फिरे भटकता, हीरा जन्म गवाँये।।तुझे।।

बचपन बीता, बीती जवानी, याद प्रभु नहीं आये–2
होने को जब, खत्म कहानी, रो रो कर पछताये।
(प्यारी आयु ऐसे बीते)–2 पता नहीं चल पाये।।तुझे।।

अविनाशी चेतन को तो तू, याद नहीं कर पाये–2
नश्वर है ये, देह अचेतन, को मल-मल नहलाये।
(कौड़ी को तो खूब सँभाला)–2 लाल रतन नहीं भाये।।तुझे।।

सुख में सुमिरन, याद न आया, दुःख में कर नहीं पाये–2
सुख की चाहा कर-कर तूने, प्रभु को दिया भुलाये।
(जो सुख में सुमिरन कर लेता)–2 तो दुख काहे पाये।।तुझे।।

सिद्धो सम है *'संजय'* ये आतम, तू क्यों समझ न पाये-2
नर से नारायण बनने, की प्रभु युक्ति बतलायें।
(सिद्धों के सुमिरन से प्राणी)–2 परमातम पद पाये।।तुझे।।

आया कहाँ से जाना कहाँ है

तर्ज - बोल मेरी तकदीर में क्या है

कौन है तू और आया कहाँ से, जाना कहाँ है ये तो बता।

तेरा यही फसाना है, जनम हुआ कभी मरण हुआ।।

कौन है तू...............

तू शुद्ध-बुद्ध और सिद्ध समान, ज्ञाता दृष्टा आतम राम

नहीं शरीर तेरी पहचान, नश्वर काया निश्चय जान।

नहीं रहा है नहीं रहेगा, राजा हो या रंक यहाँ।।

तेरा यही...................

आ निगोद से, लाख चौरासी योनी में भरमाया

पुण्य उदय का अवसर आया, तब ये नर तन पाया।

बड़े भाग्य से जन्म ये हीरा, पाकर यूँ ही गवाँ दिया।।

तेरा यही...................

सारे बन्धन तोड़ के तुझको, मोक्ष पुरी को जाना

रत्नत्रय को धारण करके, जीवन सफल बनाना।

यही सत्य है, यही धर्म है, दिव्य ध्वनि में प्रभु ने कहा।।

तेरा यही...................

जाना नहीं खुद को

तर्ज - रहना नहीं देश विराना है

जाना नहीं खुद को न जाना है-2

सब कुछ देखा सब कुछ जाना।

आतम को न पहचाना है।।जाना नहीं।।

दर-दर भटक जनम यूं ही बीते-2

मंजिल को नहीं पाना है।।जाना नहीं।।

पल पल बीते जाये उमरिया-2

जीवन यूं ही गवाना है।।जाना नहीं।।

घर संसार कुटुम्ब परिवारा-2

इनको अपना माना है।।जाना नहीं।।

सार नहीं संसार में कोई-2

जन्म लिया मर जाना है।।जाना नहीं।।

सच्चा सुख *'संजय'* गर चाहो-2

निज में निज को लाना है।।जाना नहीं।।

जाना नहीं खुद को

चेतन की पहचान नहीं

तर्ज - चाँदी की दीवार न तोड़ी

चेतन की पहचान न कोई, देह से नाता जोड़ लिया–2
नश्वर काया को अपनाकर, आतम से मुख मोड़ लिया।।चेतन।।

पर द्रव्यों में बुद्धि लगाई, निज की कोई पहचान नहीं।
पढ़-लिख कर अपने को समझे, मेरे कोई समान नहीं।।
मात-पिता की सेवा न करनी, यारों के संग मस्त रहा।
अपने हाथों अपना जीवन, व्यसनों में ही गवा दिया।।
चेतन की पहचान न कोई, देह से नाता जोड़ लिया–2
नश्वर काया को अपनाकर, आतम से मुख मोड़ लिया।।चेतन।।

मोह-महामद को पी-पी कर, पर परणति में अटक रहा।
मृग सम-मृग तृष्णा के कारण, दर-दर-दर-दर भटक रहा।।
पूर्व जनम के पुण्य का खाता, पापों में ही पटक रहा।
भव सागर में कैसे अपना, महँगा जीवन लुटा दिया।।
चेतन की पहचान न कोई, देह से नाता जोड़ लिया–2
नश्वर काया को अपनाकर, आतम से मुख मोड़ लिया।।चेतन।।

चेतन आतम का नाम

तर्ज - जीवन चलने का नाम

चेतन आतम का नाम, देह में है जिसका धाम–2

हो इसकी महिमा अपरम्पार, जो करता है इसका शृद्धान।

हो जाता है वो भव से पार, हो जाता है वो भव से पारऽ।।

चेतन..................

काटे से ये कभी न कटता, मारे से न मरता–2

अग्नि से ये जले न जलता, बाँधे से न बँधता।

हो इसकी अजर-अमर पहचान, जो करता है इसका शृद्धान

हो जाता है वो भव से पार–2

चेतन आतम का नाम, देह में है जिसका धाम–2

हो इसकी महिमा अपरम्पार, जो करता है इसका श्रद्धान।।

हो जाता है वो भव से पार, हो जाता है है वो भव से पारऽ।।

चेतन..................

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु में, वनस्पति में होता–2

चींटी से लेकर हाथी में सबकी काया ढोता।

हो इसकी शक्ति को पहचान, जो करता है इसका श्रद्धान।।

हो जाता है वो भव से पार।–2

चेतन आतम का नाम, देह में है जिसका धाम–2

हो इसकी महिमा अपरम्पार, जो करता है इसका श्रद्धान।

हो जाता है वो भव से पार, हो जाता है है वो भव से पारऽ।।

चेतन..................

अपने में ही मस्त रहो।

तर्ज - स्वनिर्मित

मस्त रहो भई मस्त रहो,
अपने में ही मस्त रहो।
कोई विपत्ती आ जाये,
उससे न तुम ग्रस्त रहो।।

स्वस्थ रहो भई स्वस्थ रहो,
जीवन में सब स्वस्थ रहो।
कोई वायरस आ जाये,
उससे न तुम लिप्त रहो।।

हँसते रहो भई हँसते रहो,
आपस में सब हँसते रहो।
कोई अनहोनी हो जाये,
उससे न तुम ग्रसित रहो।

बढ़ते रहो भई बढ़ते रहो,
आगे-आगे बढ़ते रहो।
कोई विपत्ति आ जाये,
उसको न तुम पकड़े रहो।।

वीर बनो भई वीर बनो,
अपने में महावीर बनो।
कोई शत्रु आ जाये,
उसको मिलकर पस्त करो।।

तू है शुद्ध-बुद्ध सिद्ध समान

तर्ज - मेरा जूता है जापानी

तू है शुद्ध-बुद्ध सिद्ध समानी, अपनी शक्ति न पहचानी
विषयानुरागो में पड़कर, बीती जाय जिंन्दगानी।
तू है शुद्ध-बुद्ध सिद्ध समानी।।

बचपन बीता खेल-कूद में (यौवन मस्त गँवाया)–2
अर्ध मृतक सम बुढ़ापन है (चाहा कुछ कर नहीं पाया)–2
खेलने-सोने में गँवा दी, रोने-धोने में गँवा दी
विषयानुरागों में पड़कर, बीती जाये जिन्दगानी।
तू है शुद्ध बुद्ध सिद्ध समानी।।

दुर्लभ है नर तन का पाना (दुर्लभ जैन घराना)–2
दुर्लभ से दुर्लभ है मिलना (सत्संग-धर्म निभाना)–2
अपनी शक्ति न पहचानी, अपनी किस्मत है गँवानी
विषयानुरागों में पड़कर, बीती जाय जिन्दगानी।
तू है शुद्ध-बुद्ध सिद्ध समानी।।

धन्य है वो मुनिवर जिन्होंने (जग से नाता तोड़ा)–2
भेष दिगम्बर धारण करके (प्रभु से नाता जोड़ा)–2
तूने इनकी बात न मानी, है तू कैसा अभिमानी
विषयानुरागों में पड़कर, बीती जाय जिन्दगानी।
तू है शुद्ध-बुद्ध सिद्ध समानी।।

ज्ञाता दृष्टा आतम राम

तर्ज - स्वीकारो मेरे परिणाम

तू अपनी, शक्ति को पहचान
ज्ञाता दृष्टा, आतम राम-2
तेरा, ज्ञाता दृष्टा आतम राम।

- **तेरा प्रभु है तेरे भीतर, बाहर इत-उत मत भटके।**
  भीतर ज्ञान की ज्योति जला और मन-वच-तन को वश करके,
  तू निज को निज और पर को पर कर,
  प्राप्त कर ले सच्चा श्रृद्धान।।ज्ञाता दृष्टा।।

- **परमातम के जैसा आतम, वीतराग गुण प्रगटा ले।**
  राग-द्वेष है दुःख का कारण, दूर हटा और सुख पा ले
  तू जन्म-मरण का भेद मिटाकर,
  सिद्ध शिला पर कर विश्राम।।ज्ञाता दृष्टा।।

प्रभु जी तुम्हारे दर पर बेचारे

तर्ज - स्वर्निमित

प्रभु जी तुम्हारे दर पर बेचारे,

दे दो सहारा धन्य भाग हमारे।

प्रभु जी..................

है पूजा की मैंने, रीत न जानी–2

कृपा करना स्वामी, कृपा रे-कृपा रे।

प्रभु जी तुम्हारे दर पर बेचारे,

दे दो सहारा धन्य भाग हमारे।

हो भक्ति का तेरी, जादू हम पर–2

कदम खुद पे खुद ही, शरण हो तिहारे।

प्रभु जी तुम्हारे दर पर बेचारे,

दे दो सहारा धन्य भाग हमारे।

मैं भवसागर में, भटक रहा हूँ–2

करो नैया मेरी, किनारे-किनारे।

प्रभु जी तुम्हारे दर पर बेचारे,

दे दो सहारा धन्य भाग हमारे।

आनन्द आनन्द पाये

तर्ज - सर जो तेरा चकराये

भाग्य तेरा बिगड़ाये, या कर्म कोई सताये।
प्रभु नाम का पी ले प्याला (आनन्द आनन्द पाये)–2
धुन-धुन-धुन, कर्मों को धुन, गलत मार्ग को मत चुन-चुन।
लाख दुःखों की एक दवा है, प्रभु चरणों में आयें।।
(आनन्द आनन्द पाये)–2

दुःखों से ना घबराना, इनका तो आना जाना।
सुख जायेगा दुःख देकर, दुःख जायेगा सुख देकर।।
धुन-धुन-धुन.....................

दुःख में तो सुमिरन करता, सुख में न याद करता।
जो सुख में सुमिरन किया होता, दुःख काहे को भरता।।
धुन-धुन-धुन.....................

तूने जैसा कर्म किया है, फल वैसा ही मिला है।
जो बोया है सो पायेगा, बात पते की ये है।।
धुन-धुन-धुन.....................

ज्योतिष हो या वास्तु, कुछ नहीं करता जान तू।
प्रभु शरण में जो भी आया, बल्ले-बल्ले मान तू।।
धुन-धुन-धुन.....................

खिवैया प्रभु खिवैया

तर्ज - रमैया वस्ता वयैया

खिवैया प्रभु खिवैया, खिवैया प्रभु खिवैया–2
सबकी नैया का भैया, सबकी नैया का भैया।।खिवैया।।

चन्दना को तारा, मैना रानी को तारा
जाने सारा जमाना, जाने सारा जमाना–2
अंजन को तारा, सेठ सुदर्शन को तारा
जाने सारा जमाना, जाने सारा जमाना–2
मेरी भी नाव खड़ी, बीच भँवर में पड़ी–2।।खिवैया।।

हैं तारों में तू, बहती धारों में तू
कण-कण मधुबन के, ऊँचे पहाड़ों में तू–2
आती साँसों में तू, जाती साँसों में तू
दिल की धड़कन धड़कती, पुकारों में तू–2
प्रातःकाल समय, भक्त ये गाते चलें–2।।खिवैया।।

संसार में, हाँ जी हर काल में
मिले तेरी शरण, मिले तेरी शरण–2
हर बार में, हाँ जी घर-बार में
रहूँ तेरी शरण, रहूँ तेरी शरण–2
जब तक ना ही तरे, जब तक ना ही तरे–2
मिले प्रभु तेरी शरण, मिले प्रभु तेरी शरण।।खिवैया।।

लागी लगन

तर्ज - स्वर्निमित

तुमसे लागी, लागी लगन–2

तुमसे लागी, लागी लगन–2

अँखिया तुम दर्शन की प्यासी–2

ले लो चरण-शरण।।तुमसे।।

चारों गति में दुःख ही पायो–2

तुम जानो भगवन।।तुमसे।।

पल-पल बीते जाये उमरिया–2

मेटो जनम-मरण।।तुमसे।।

स्वार्थ की प्रभु सारी नगरिया–2

सम्बन्धी परिजन।।तुमसे।।

वीतराग छवि प्यारी लागे–2

दर्शन समवशरण।।तुमसे।।

***'संजय'* के प्रभु आप ही स्वामी–2**

करुणा रूप नगन।।तुमसे।।

निशदिन प्रभु का भजन करूँ

तर्ज - घड़ी-घड़ी मेरा दिल धड़के

घड़ी-घड़ी प्रभु भजन करूं

पल-पल में, छिन-छिन में।

निशदिन प्रभु का भजन करूं।।घड़ी-घड़ी।।

रोम-रोम से निकले प्रभु जी, नाम तुम्हारा, नाम तुम्हारा।

भक्ति में मिल झूमे प्रभु जी, मन ये हमारा, मन ये हमारा।।

घड़ी-घड़ी प्रभु भजन करूं, पल-पल में, छिन-छिन में।

निशदिन प्रभु का भजन करूं।।घड़ी-घड़ी।।

चरण-शरण में आया प्रभु जी, दास तुम्हारा, दास तुम्हारा।

पूजन कर हर्षाया प्रभु जी, दिल ये हमारा, दिल ये हमारा।।

घड़ी-घड़ी प्रभु भजन करूं, पल-पल में, छिन-छिन में।

निशदिन प्रभु का भजन करूं।।घड़ी-घड़ी।।

कण-कण में रहता है प्रभु जी, वास तुम्हारा-वास तुम्हारा।

दर्शन को ले आया प्रभु जी, तन ये हमारा-मन ये हमारा।।

घड़ी-घड़ी प्रभु भजन करूं, पल-पल में, छिन-छिन में।

निशदिन प्रभु का भजन करूं।।घड़ी-घड़ी।।

अपने प्रभु जी से बातें करो

तर्ज - आज जाने की जिद न करो

अपने प्रभु जी से बातें करो–2
उनसे सारी शिकायत करो–2
अपने प्रभु जी से बातें करो,
वो समझ जायेंगे, मार्ग दिखलायेंगे।
उनके चरणों में लो, शरण लो SSS।।अपने प्रभु जी।।

पास जब जाओगे, कुछ न कह पाओगे
बिन कहे जान लेंगे, जो चाहते हो तुम–2
आ गया जो शरण जान लो।
उसका कष्टों से छुटकारा हो SSS।।अपने प्रभु जी।।

प्यारा अहसास है, प्रभु के विश्वास का
कौन अपना यहाँ, है इन्हें छोड़कर-2
पा गया जो शरण जान लो।
उसको किसी बात का ग़म न हो SSS।।अपने प्रभु जी।।

कितना अहसान है, प्रभु का हम पर यहाँ
पाप कितने किये, फिर भी उपकार है-2
हमको भी है खबर जान लो।
आप जगति के तारण हार हो SSS।।अपने प्रभु जी।।

दर्शन को पाकर धन्य हुए

तर्ज - आपके पहलू में आकर

आपके दर्शन को पाकर धन्य हुए।
शीश चरणों में झुकाकर धन्य हुए।।

चाहता तो मैं शरण तेरे रहूँ-2
काम घर के भी करुँ, कैसे करुँ।
राह कोई आप दिखला दीजिए।।
आपके दर्शन को पाकर धन्य हुए।
शीश चरणों में झुकाकर धन्य हुए।।

नैन भर-भर आ रहे आँसू मेरे-2
भेंट में कुछ भी नहीं, लाया तेरे।
हाथ खाली जोड़ कर हम जा रहे।।
आपके दर्शन को पाकर धन्य हुए।
शीश चरणों में झुकाकर धन्य हुए।।

आऊँ मैं दर्शन को फिर तेरे प्रभु-2
जाऊँ ना फिर लौटकर, वापस विभु।
कोई ऐसा मार्ग बतला दीजिए।।
आपके दर्शन को पाकर धन्य हुए।
शीश चरणों में झुकाकर धन्य हुए।।

प्रभु पार लगा दो नैया

तर्ज - तुझे सूरज कहूँ या चँदा

प्रभु पार लगा दो नैया, नहीं तुम बिन कोई खिवैया।
मेरी बार करो मत देरी, हे जग के तारण हारा।।प्रभु।।

मैं भटक रहा भव वन में, दुःख दूर करो हे स्वामी।
हूँ द्वार तुम्हारे आया, मुझे पार लगाओ स्वामी।।
रहूँ चरण-शरण में तेरी, तुम्ही हो एक सहारा।
मेरी बार करो मत देरी, हे जग के तारण हारा।।प्रभु।।

संसार में रहकर मैंने, है पाप ही पाप कमाये।
नहीं नेक काम कोई किया, जीवों के कष्ट बढ़ाये।।
हूँ आज समझ मैं पाया, तेरा ही कोई उपकारा।
मेरी बार करो मत देरी, हे जग के तारण हारा।।प्रभु।।

पल-पल बीते जाये उमरिया

तर्ज - मैली चादर ओढ़ के कैसे

पल-पल बीते जाये उमरिया, भजन नहीं कर पाऊँ।
हे जिनवर स्वर दीजिए मुझको, तेरे ही गुण गाऊँ।।पल-पल।।

सारा जीवन यू ही गवाया, दर्शन कर नहीं पाया
दर्शन को जब मंदिर आया, विषयों में भरमाया।
महिमा तेरी गा नहीं पाया, कैसे मैं बतलाऊँ।।
पल-पल बीते जाये उमरिया, भजन नहीं कर पाऊँ।
हे जिनवर स्वर दीजिए मुझको, तेरे ही गुण गाऊँ।।पल-पल।।

तारा तुमने कितनो को तारा, जाने है जग सारा
पापी से पापी तर जाये, जिसने लिया सहारा।
मैं भी तेरी शरण में आया, और कहाँ मैं जाऊँ।।
पल-पल बीते जाये उमरिया, भजन नहीं कर पाऊँ।
हे जिनवर स्वर दीजिए मुझको, तेरे ही गुण गाऊँ।।पल-पल।।

अपनी-अपनी भक्ति का फल, सबने ही यहाँ पाया
मुझको भी स्वर दीजिए प्रभु जी, इतनी अर्ज मैं लाया।
चन्दन सम बन मैं भी तेरे, चरणों में चढ़ जाऊँ।।
पल-पल बीते जाये उमरिया, भजन नहीं कर पाऊँ।
हे जिनवर स्वर दीजिए मुझको, तेरे ही गुण गाऊँ।।पल-पल।।

पल पल बीती जाए उमरिया
127

मिले प्रभु शरण में चैन

तर्ज - तेरे होटों के दो फूल

प्रभु दर्शन को हम आये तेरे द्वारे–2
मिले शरण तुम्हारी (ही चैना)–2

छोड़ तेरी शरण कहाँ जाऊँ,
चाँदनपुर के महावीर स्वामी।
छूटे चाहे परिवार, रिश्ते नाते संसार।।
मुझे धन-दौलत से (क्या लेना)–2
प्रभु दर्शन को हम आये तेरे द्वारे–2
मिले शरण तुम्हारी (ही चैना)–2

भवसागर भटक रहा हूँ,
मुक्ति दो तरस रहा हूँ।
छूटे चाहे परिवार, रिश्ते नाते संसार।।
मुझे धन-दौलत से (क्या लेना)–2
प्रभु दर्शन को हम आये तेरे द्वारे–2
मिले शरण तुम्हारी (ही चैना)–2

कर्मों से प्रभु जी छुड़ाना,
***'संजय'* को पार लगाना।**
छूटे चाहे परिवार, रिश्ते नाते संसार।।
मुझे धन-दौलत से (क्या लेना)–2
प्रभु दर्शन को हम आये तेरे द्वारे–2
मिले शरण तुम्हारी (ही चैना)–2

कर्मों की मार घनेरी

तर्ज - हरि बिन कौन सहाई मन का

प्रभु मेरी बार करो मत देरी, कर्मों की मार बहुत है घनेरी।
और करो मत देरी, प्रभु मेरी बार करो मत देरी।।

- **पापी से पापी तर जाये, आये शरण जो तेरी।।**
  प्रभु.................

- **भव सागर में नैया डोले, पार लगाओ मेरी।**
  प्रभु.................

- **करुणा सागर करुणा कीजिये, पीर हरो जी मेरी।**
  प्रभु.................

- **दीनों के प्रभु आप ही स्वामी, धीर बँधाओ मेरी।**
  प्रभु.................

- **जनम जनम की तुम सब जानो, जानो तेरी-मेरी।**
  प्रभु.................

- **'*संजय* के प्रभु आप ही स्वामी, बांह पकड़ लो मेरी।**
  प्रभु.................

ना जाने जीवन की कब शाम होवे

तर्ज - तुम्ही हो माता-पिता तुम्ही हो

प्रभु से लो को लगा के रखना,
ना जाने जीवन की कब शाम होवे।।प्रभु।।

बना के अपना है संगी-साथी,
कह न सको जो कह देना इन से।
ना मन की मन में छुपा के रखना,
ना जाने जीवन की कब शाम होवे।।प्रभु।।

न होती पूरी आशाएँ मन की,
आशाएँ अपनी घटा के रखना।
मिला है नरतन विचार कर लो,
ना जाने जीवन की कब शाम होवे।।प्रभु।।

हमारी भूलों को माफ करते,
हमारे पापों का प्रक्षाल करते।
बुराईयों का करो सफाया,
ना जाने जीवन की कब शाम होवे।।प्रभु।।

उन बेसहारो को दो सहारा,
जिनका न कोई अपना हमारा।
दया की दृष्टि बना के रखना,
ना जाने जीवन की कब शाम होवे।।प्रभु।।

बिन तेरे कौन तरे

तर्ज - स्वनिर्मित

बिन तेरे, बिन तेरे, बिन तेरे।

कौन तरे, प्रभु कौन तरे ।।बिन तेरे।।

नाम तुम्हारा, तारण हारा।

भक्त तेरे हम, दर पे खड़े ।।बिन तेरे।।

पार लाग दो, नैया हमारी।

भव सागर में, अटके पड़े ।।बिन तेरे।।

दूर बहुत है, तेरा द्वारा।

ऊँचे-नीचे, रास्ते बड़े ।।बिन तेरे।।

बाँह पकड़ लो, अब तो प्रभु जी।

नजरें हमारी, तुम पर गड़े ।।बिन तेरे।।

मैं तुम्हारे गुण गाऊँ

तर्ज - स्वनिर्मित

मैं तुम्हारे गुण गाऊँ, मैं तुम्हारे गुण गाऊँ।

मूरख ही कहलाऊँ, मैं तुम्हारे गुण गाऊँ।।

इन्द्रादिक गणपति न तुम्हारी, महिमा को कह पाये।

मैं मति हीन हूँ दास तुम्हारा, चाहकर गा नहीं पाऊँ।।

मैं....................

अपरम्पार प्रभु तेरी महिमा, सारा जग ये जाने।

कर न सकूँ गुणगान तुम्हारा, गा-गा तुतला जाऊँ।।

मैं....................

शर्म नहीं आती है मुझको, फिर भी दर पर आया।

रिझा सकूँ मैं तुम्हें प्रभु, वो भजन कहाँ से लाऊँ।।

मैं....................

थोड़ी सी सांसें बाकी

तर्ज - स्वनिर्मित

थोड़ी सी सांसें बाकी,
कर भजन प्रभु दिन राती।

इस नरतन का मोल न जाना,
जीवन व्यर्थ ही जाती।
कर भजन प्रभु दिन राती।।
थोड़ी सी सांसे बाकी, कर ....

विषयों में जाता जीवन है,
न करी प्रभु की बाती।
कर भजन प्रभु दिन राती।।
थोड़ी सी सांसे बाकी, कर ....

इस तन को तो खूब सजाया,
पूजा करी न जाती।
कर भजन प्रभु दिन राती।।
थोड़ी सी सांसे बाकी, कर ....

भोगों में धन खूब लूटाया,
दान करी ना जाती।
कर भजन प्रभु दिन राती।।
थोड़ी सी सांसे बाकी, कर ....

प्रभु हम पे दया करना

तर्ज - प्रभु हम पे कृपा करना

प्रभु हम पे दया करना, प्रभु हमको क्षमा करना
मैं भक्त हूँ तुम्हारा, मुझ पर कृपा करना–2

भवसागर में फँसा हूँ, आया मैं दर पे तेरे–2
जाऊँ तो कहाँ जाऊँ (मैं छोड़ द्वार तेरे)–2
मझधार में है नैया–2 तुम पार हमें करना।
मैं भक्त............. प्रभु.............

लाखों को तारा तुमने, अंजन से चोर तरते–2
पापी से पापी तरते, (जो आया शरण तरते)–2
मैं दास हूँ तुम्हारा,–2 चरणों में जगह देना।
मैं भक्त............. प्रभु.............

आयेंगे द्वार तेरे, जब तक है श्वास मेरे–2
रोके से न रुकेंगे (अब तो ये पाँव मेरे)–2
चरणों में झुका माथा, आशा पूरी करना।
मैं भक्त............. प्रभु.............

सत्यमेव जयते भक्ति

हम तो जग से चल दिये

तर्ज - दिल के टुकड़े-टुकड़े करके

सज के धज के धज के सज के, हम तो जग से चल दिये।

रोने वाले रोते ही रह गये, हम तो हँस के चल दिये।।

न कोई हमारा, हम न किसी के, पल दो पल के साथ सभी के

मिलना होगा, बिछड़ना भी होगा।

आने वाले, आते रहेंगे, जाने वाले, जाते रहेंगे

सूरज उगता-ढलता रहेगा।

चार दिन की है जिन्दगानी को, निभा कर चल दिये।।

सज के धज के ....

लोग भी होंगे, जाने-अनजाने, मन से बे मन से चाहने वाले

इनसे कह दो मिलना न होगा।

जाने अनजाने, गलती से भी, दिल दुखाया गर हो किसी का

माफ करना, करना ही होगा।

है भला इसमें सभी का, नफ़रत मिटा कर चल दिये।।

सज के धज के ....

प्रभु से प्रीत को जोड़ो

तर्ज - सजन रे झूठ मत बोलो

प्रभु से प्रीत को जोड़ो, प्रभु सच्चा हमारा है

है सारी स्वार्थ की दुनिया, मतलब का जग संसारा है।

प्रभु......................

हमारे सारे संबंधी, लगाते व्यर्थ बातों में–2

(डुबोते भव सागर में)–2 नहीं कोई हमारा है।

प्रभु......................

तरण-तारण प्रभु होते, लगाते पार नैया है–2

(यही तो एक खिवैया है)–2

नहीं कोई सहारा है।

प्रभु......................

छोड़कर कर सारे बंधनों को, हमें मुक्ति को पाना है-2

(प्रभु की शरण जाना है)–2

समर्पण भाव लाना है।

प्रभु......................

चरणों में ध्यान लगा ले

तर्ज - चाँद आहें भरेगा

चरणों में ध्यान लगा ले, मन में प्रभु को बसा ले।

सोया तू भाग जगा ले, खुद को कर प्रभु हवाले ।।चरणों।।

जैसा प्रभु जी है तेरा, वैसा ही रूप तेरा

तूने खुद को भुला कर, विषियों में खुद को घेरा।

छोड़ दे सारी दुनिया, भव से तू पार पाले–2

सोया तू भाग जगा ले, खुद को कर प्रभु हवाले ।।चरणों।।

मौत का फन्दा लटका, चारो गतियों में भटका

कर्मों की मार भारी, खाये झटके पे झटका।

तोड़ कर बन्धनों को, खोल मुक्ति के ताले–2

सोया तू भाग जगा ले, खुद को कर प्रभु हवाले ।।चरणों।।

किसका अभिमान करना, कैसा अभिमान करना

हाथ खाली ही आया, जायेगा साथ कुछ ना।

सत्य की राह पकड़ कर, अपनी शक्ति को पाले–2

सोया तू भाग जगा ले, खुद को कर प्रभु हवाले ।।चरणों।।

भव पार कैसे होगा

तर्ज - चाहूँगा मैं तूझे

जाऊँ कहाँ तज, शरण तिहारे

घेरे हुए हमें, कर्म घनेरे-2

भव पार कैसे होगा-2।।

जाऊँ कहाँ तज ....

मात भी तू, पिता भी तू, भ्राता भी तू, सखा भी तू-2

भगवानSSSS, भगवान है प्रणाम, तुमको बार बार

भव पार कैसे होगा।-2

जाऊँ कहाँ तज ....

धरम भी तू, करम भी तू, शरण भी तू, लगन भी तू,-2

भगवानSSSS, भगवान है प्रणाम, तुमको बार बार

भव पार कैसे होगा।-2

जाऊँ कहाँ तज ....

उसका जीवन प्यारा है

तर्ज - एक तेरा साथ

है प्रभु एहसास–2 जिसको, उसका जीवन प्यारा है–2

जीने का उसे सहारा है ।।है प्रभु।।

पाप के वश में, जब काम होते हैं,

प्रभु हमको रोकते हैं।

ओर दिलों में जिनके, भगवान होते हैं

प्रभु उनको बोधते हैंऽऽ

न करो कोई काम-2 ऐसा जो दुःख देने वाला है,

जीने का उसे सहारा है ।।है प्रभु।।

कर्म अच्छें हों, तो याद आते हैं,

वो सबको याद आते हैं।

नाम से उनके, संस्थान बन जाते हैं,

नगर भी बस जाते हैंऽऽ

काम करो कोई काम-2 ऐसा जो सुख देने वाला है

जीने का उसे सहारा है ।।है प्रभु।।

कण-कण में तू ही समाये

तर्ज - नैनों में बदरा छाये

कण-कण में तू ही समाये, तेरे ही हम है साये,

पार लगा दो प्रभु जी, शरण में आये।

कण-कण में तू ही समाये।।

कर्मों के मारे-मारे, पापों से हारे-हारे–2

दिखते नहीं किनारे, मिलते नहीं सहारे

घट-घट के आप ही स्वामी, दर तेरे आये।

कण-कण में तू ही समाये।।

लाखों को तारा तूने, दिया सहारा तूने-2

पार लगाया तूने, दुःखों से छुड़ाया तूने

द्वारे पे आने वाले, सुख-शान्ति पाये।

कण-कण में तू ही समाये, तेरे ही हम है साये

पार लगा दो प्रभु जी, शरण में आये।

कण-कण में तू ही समाये।।

प्रभु तेरे दर पे तेरा भक्त गाये

तर्ज - वो जब याद आये

प्रभु तेरे दर पे, तेरा भक्त गाये
नहीं भेंट कोई, चढ़ाने को लाये।
फकत हाथ खाली, शरण तेरी आये।।प्रभु तेरे दर पे।।

रीति पूजा की भी, मैंने जानी नहीं
और भक्ति तेरी, कर मैं पाता नहीं।
प्रभु ज्ञान की ऐसी, जोत जलाओ
कदम खुद पे खुद ही, शरण हो तिहारे।।प्रभु तेरे दर पे।।

चाहना कुछ नहीं, फिर भी माँग रहा
मन में विश्वास है, इसलिए कह रहा।
मेरी प्रार्थना है, स्वीकारो प्रभु जी
मिला लो स्वयं में हमें न रुलायें।।प्रभु तेरे दर पे।।

मांगना है बुरा, गर लगे आपको
छोड़ देना प्रभु, तुम मेरे साथ को।
मगर सोच लेना, मैं भक्त हूँ तुम्हारा
हँसी हो तुम्हारी, मेरा कुछ न जाये।।प्रभु तेरे दर पे।।

तू प्राणों से प्यारा है

तर्ज - तू प्यार का सागर है

तू प्राणों से प्यारा है, तू प्राणों से प्यारा है

तुम्हीं से जीवन है सुन्दर, तुम्ही से जीवन है सुन्दर

सांसो में बसे हो तुमSS, सांसो में बसे हो तुम

प्रभु जी तेरे पुजारी हम, प्रभु जी तेरे पुजारी हम SS

तू प्राण हमारा है SS

तुम बिन जग में, और न दूजा (करुणा के भण्डार)–2

आये शरण में, जो भी तुम्हारी (उसका बेड़ा पार)–2

हमको भी उबारो हाँ SS, हमको भी उबारो हाँ

प्रभु जी तेरे सहारे हम, प्रभु जी तेरे पुजारी हम SS

तू प्राण हमारा है SS

नाथ शरण में, आये तुम्हारी (हमको है विश्वास)–2

जैसे तुमने, लाखों को तारा (आज हमारी बारी)–2

ना देर करो स्वामी SS, ना देर करो स्वामी

पुकारें भक्त तुम्हारे हम, पुकारें भक्त तुम्हारे हम SS

प्रभु नाम जपते-जपते

तर्ज - तुम्हे याद करते-करते

प्रभु नाम जपते-जपते, बीते ये जिन्दगानी
बीते ये जिन्दगानी, है भावना हमारी।।प्रभु नाम।।

विषयों में है गवांया, अनमोल सारा जीवन–2
अनमोल सारा जीवन, महँगा ये सारा जीवन।
नहीं और कुछ मैं चाहूँ, आया समझ हमारी
मुझे दास तुम बनाओ, है भावना हमारी।।प्रभु नाम।।

छोटी-सी आशा मेरी, छोटा सा मैं पुजारी–2
बांह पकड़ लो मेरी, देना मुझे उबारी।
सही अब न ओर जाती, कर्मों की मार भारी
ले लो शरण में अपनी, है भावना हमारी।।प्रभु नाम।।

जिनके मन में प्रभु तुम होते

तर्ज - तुम जो हमारे मीत न होते

जिनके मन में प्रभु तुम होते,

उनको कोई दुःख ना होते।

जी चाहता है मैं कुछ गाऊँ-2

गा-गा कर प्रभु तुमको रिझाऊँ।

जिनके दिलो में प्रभु तुम होते,

उनको कोई गम न होते।

जिनके मन में प्रभु तुम होते,

उनको कोई दुःख ना होते।।

इन पैरों से मंदिर आऊँ-2

दर पर तेरे शीश झुकाऊँ।

भाग्य हमारे जग गये होते,

दर्शन पहले कर गये होते।

जिनके मन में प्रभु तुम होते,

उनको कोई दुःख न होते।।

सुख में रहो चाहे दुख में रहो

तर्ज - बस्ती-बस्ती, पर्वत-पर्वत

सुख में रहो चाहे दुख में रहो, सब करो भजन प्रभु का प्यारा
होगा जीवन सुखकारा-2

धन दौलत कितनी भी जोड़े, साथ नहीं वह जाये
मुट्ठी बाँध के आने वाले, हाथ पसारे जायें।
सुख में रहो ....

नाम प्रभु का है अति प्यारा, जो भी ध्यान लगाये
रोते-रोते आने वाला, हँसता-हँसता जाये।
सुख में रहो ....

एक दिन सबको छोड़ के जाना, जीवन यही बताये
अच्छा होगा अगर तू अपनी, मृत्यु अमर बनाये।
सुख में रहो ....

दो दिन की तेरी जिन्दगानी, चला-चली में जाये
गीत प्रभु के गाकर अपना, जीवन सफल बनायें।
सुख में रहो ....

प्रभु के नाम का प्याला

तर्ज - कजरा मौहब्बत वाला

प्रभु के नाम का प्याला, पीवे वो किस्मत वाला।
हो जाये भव से बेड़ा पार, महिमा प्रभु की है अपार।।

अष्ट द्रव्य से पूजा, का शुभ एक थाल सजाऊँ।
हृदय कमल पर अपने, प्रभु को मैं बिठाऊँ।।
अपने ही मन के अन्दर, प्रभु की जोत जलाऊँ-2
कर्म नशाने वाला, पाप गला ने वाला।
कराये भव से बेड़ा पार, महिमा प्रभु की है अपार।।
प्रभु के नाम ....

ना मैं धन-दौलत चाहूँ, गाड़ी-बंगला ना चाहूँ।
दर्शन की है अभिलाषा, चरणों में शीश झुकाऊँ।।
लाखो को तारा तुमने, मैं भी भव से तर जाऊँ-2
सच्चा सुख देने वाला, मुक्ति दिलाने वाला।
कराये भव से बेड़ा पार, महिमा प्रभु की है अपार।।
प्रभु के नाम ....
हो जाये..............................

मैं प्यासी तेरे दर्शन की

तर्ज - मैं तुलसी तेरे आंगन की

मैं प्यासी, तेरे दर्शन कीSS
ये दुनिया प्रभु-3, स्वारथ कीSS
मैं प्यासी तेरे दर्शन कीSS।।मैं प्यासी।

तन-मन-धन प्रभु सब कुछ तेरा
सब कुछ तेरा, कुछ नहीं मेरा–2
मैं दासी तेरे चरणं की।।मैं प्यासी।।

द्वार खड़े-खड़े तरस गई
अखियाँ तक थक दर्शन को गई-2
लाज रखो प्रभु भक्तन कीSS
मैं प्यासी, तेरे दर्शन कीSS।।मैं प्यासी।।

मेरे तो प्रभु आप ही स्वामी
निशदिन तुमको शीश नवाति-2
मैं हूँ पुजारन चरणं कीSS।।मैं प्यासी।।

स्वारथ की प्रभु सारी नगरिया
पल-पल बीते जाये उमरिया-2
पीढ़ा मेटो भव-भव कीSS
मैं प्यासी, तेरे दर्शन कीSS।।मैं प्यासी।।

हाथों में पैरों में तन पर बेढ़ी
बिगड़ी हालात ओ रे प्रभु जी
देखो-देखो चंदना कीSS
मैं प्यासी, तेरे दर्शन कीSS।।मैं प्यासी।।

शरण रखना

तर्ज - रसिक बलमा

शरण रखनाऽऽऽ, मोहेऽऽऽ

द्वारे पे आया तेरे, द्वारे पे आया।।

तेरे द्वारे पे आया, तेरे द्वारे पे आया।

शरण रखनाऽऽऽ, मोहेऽऽऽ

जय-जय हो महावीर स्वामी, घट-घट के अन्तर्यामी।

आये शरण है तिहारी, होऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

आये शरण है तिहारी, करुणा के हो भण्डारी।

शरण रखनाऽऽऽ मोहेऽऽऽ।।द्वारे पे।।

छोड़ शरण को तुम्हारी, जाये कहाँ ये पुजारी।

हाथ है दोनो खाली होऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

हाथ है दोनों खाली, चरणों में धोक हमारी।

शरण रखनाऽऽऽ मोहेऽऽऽ।।द्वारे पे।।

अष्ट द्रव्य के थाल सजा के

तर्ज - दिल में तुझे बिठा के

अष्ट द्रव्य के थाल सजा के, मंदिर में तेरे आके।
पूजा करूं मैं तेरी, पूजा करूं मैं तेरी।।

चन्दन सम बन मैं भी तेरे, चरणों में लग जाऊँ।
निशदिन तेरा ध्यान करुं मैं, जीवन सफल बनाऊँ।।
द्वारे ऽ पे तेरे आके, चरणों में शीश झुका के।
पूजा करुं मैं तेरी, पूजा करुं मैं तेरी।।

घट-घट के प्रभु आप ही स्वामी, तुम हो अन्तर्यामी।
तुमसे मैं प्रभु कुछ नही चाहूँ, तेरी ही जोत जलाऊँ।।
चरणों में तेरे आके, दीपक यहाँ जला के।
पूजा करुं मैं तेरी, पूजा करुं मैं तेरी।।

जब मैं खोलू आँखें प्रभु जी, तेरा दर्शन पाऊँ।
मुख से बोलूं जो मैं प्रभु जी, तेरे ही गुण गाऊँ।।
मन में तुम्हें समा के, दृढ़ता हृदय में ला के।
पूजा करुं मैं तेरी, पूजा करुं मैं तेरी।।

प्रार्थना करो

तर्ज - ठुकराओ अब कि

गुण गाओ, गुण गाओ प्रभु का नाम जपो।

प्रार्थना करो।।

हर सुबह और शाम करो।

प्रार्थना करो।।

अपने प्रभु को अपने, हृदय में बसाइये-2

फिर पूजा और पाठ करो, प्रार्थना करो।

गुण गाओ............

अपने प्रभु को अपने, ही मन में समाइये-2

फिर मन की सारी बात करो, प्रार्थना करो।

गुण गाओ............

अपने प्रभु को अपने नयन में छुपाइये-2

फिर जाप और ध्यान करो, प्रार्थना करो।

गुण गाओ............

कृपा रे-कृपा रे

तर्ज - आँसू भरी है

जाऊँ कहाँ मैं शरण तेरी आये-2
कृपा करना स्वामी, कृपा रे कृपा रे।

नहीं तुमसा कोई, दयालु-कृपाला-2
लाखों को तारा, है जिसने पुकारा।
दुःखों से हैं व्याकुल, दो राह दिखाये।।
कृपा करना स्वामी, कृपा रे, कृपा रे।
जाऊँ कहाँ मैं...................

नहीं अपना कोई, यहाँ संगी-साथी-2
स्वारथ की दुनिया, है मतलब की बाती।
ऐसे जहाँ से, लो हमको बचाये।।
कृपा करना स्वामी, कृपा रे, कृपा रे।
जाऊँ कहाँ मैं...................

सुना तुमने तारे, अधम चोर पापी-2
हमको भी तारो, हैं तेरे पुजारी।
तेरी शरण तज, कहाँ और जाये।।
कृपा करना स्वामी, कृपा रे, कृपा रे।
जाऊँ कहाँ मैं...................

दयालु कोई नहीं, हे प्रभु तुम्हारी तरह

तर्ज - किया है प्यार जिसे हमने जिन्दगी की तरहा

दयालु कोई नहीं, हे प्रभु तुम्हारी तरह-2
कहाँ मैं जाऊँ, बताओ हे प्रभु, तेरे सिवा।

सुना है दर पे तेरे, बिगड़ी बात बनती है-2
सवँरती जिन्दगियाँ, आपकी कृपा से यहाँ।
कहाँ मैं जाऊँ ....

बढ़ा जो राग मेरा, तेरा साथ छूट गया-2
मैं कर सका न इबादत, बन के भक्त, तेरी यहाँ।
कहाँ मैं.....

करम तो ऐसे किये, जैसे करता कोई नहीं-2
कबूल करता हूँ मैं, होके आज दर पे खड़ा।
कहाँ मैं.....

शरण में आया तेरी, आसरा दो हे स्वामी-2
रखाये रखना मेरे, सर पे हाथ अपने सदा।
कहाँ मैं.....

हमको भी तारो

तर्ज - तस्वीर तेरी दिल में

भगवान मेरी नैया, भव पार लगा देना
जैसे तूने और तारे, अंजन से चोर तारे।
हमको भी तारो नाऽऽ।।भगवान।।

द्वारे पे तेरे आये प्रभु, जायें कहाँ हम जायें प्रभु-2
भाये नहीं कोई हमें-2, सारी ही जगती मेंऽऽ
भगवान मेरी नैया...........

समता की सूरत तुम हो प्रभु, आनन्द पूरत तुम हो प्रभु-2
छवि प्यारी लागे हमें-2, आये तेरे दर पेऽऽ
भगवान मेरी नैया...........

कर्मों के हम सताये हुए, दुःखों से हम घबराये हुए-2
(मेटो मेटो जन्म-मरण)-2, तेरे भरोसे रेऽऽ
भगवान मेरी नैया...........

सुमिरन कर प्रभु राम रे

तर्ज - सारंगा तेरी याद में

सुमिरन कर प्रभु राम रे, सुबहा से शाम रे।

पल-पल बीते उमरिया, कब निकले प्राण रे।।

सुमिरन कर ....

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे जो कोये,

उसकी नैया पार है, गम न उसे कोई होये।

दुःख में जो मुस्कुरा रहे–2, खुशियाँ ही खुशियाँ होये।।

सुमिरन कर ....

राम नाम अति प्यारा है, जीवन में जोत जले

दूर अंधेरे हो रहे, उजियारा छा रहे।

सुख देना दुःख मेटना, प्रभु की बान रे।।

सुमिरन कर ....

न जाने किस रुप में नारायण मिल जाये

तर्ज - गा लो मुस्करा लो

आओ गले लगा लो, सबको गले लगा लो।

न जाने किस रुप में, नारायण मिल जाये।।

बांधे मन की डोर, न हो कमजोर।

न जाने किस रुप में, नारायण मिल जाये।।

आओ गले लगा लो।

उन बे सहारो को देना सहारा, जिनका न कोई अपना हमारा।

आज दया की दृष्टि बना लो।।

आओ गले लगा लो............

पल-पल तेरी बीते जाये उमरिया, जाग-जाग-जाग ओ रे बावरिया।

मन के मंदिर में जोत जला लो।।

आओ गले लगा लो, सब को गले लगा लो।

न जाने किस रूप में, नारायण मिल जाये।।

बांधे मन की डोर, न हो कमजोर।

न जाने किस रूप में, नारायण मिल जायें।।

आओ गले लगा लो।

हजारों में एक

तर्ज - हुश्न पहाड़ों का

जन्म हजारों में, कोई लेता है जग में,

जो औरों का दुःख समझे।

जन्म ....

हमने तो खाई कसम, किसी के काम न आयेंगे हम-2

चाहे कोई जिए -मरे, या अपना सर पटके।

रोता है तो रोता रहे।।

जन्म हजारों में ....

हम तो यहाँ सांसें भरे, वहाँ सीमा पे फौज़ी डटे-2

ले सीने पे गोली-गोले, तब अपनी सांसे चलें।

इतना तो याद रहे।।

जन्म हजारों में ....

उनका जीना-जीना है, जो औरों के काम आते हैं

उनका जन्म लेना सफल है, जो औरों पे मिट जाते हैं।

हम भी कुछ ऐसा करें, कि जग सारा याद करे

करता है करता रहे।।

जन्म हजारों में ....

मेरा वतन

तर्ज - बड़े अच्छे लगते हैं

बड़े अच्छे लगते हैं ये झरने, ये नदियाँ, ये पर्वत।
और, मेरा वतन।।

सबसे प्यारी सुबह तेरी, सबसे रंगी शाम।
तेरे दामन से हम महके तुझपे दिल कुर्बान।।
बड़े पक्के लगते हैं, ये फौजी, सरफरोशी।
जय जवान-जय किसान।।

मंदिर-मस्जिद गुरुद्वारे और कण-कण में भगवान।
हिन्दू-मुस्लिम, सिख-इसाई, जैनों के श्रद्धान।।
बड़े सच्चे लगते हैं, परमातम, धर्मायतन, विद्यालय।
और, और गुरु।।

माँ की ममता, पिता का प्यार, बड़ों का सम्मान।
बहना की राखी, और दीवाली, सारे तीज त्यौहार।।
बड़े सुन्दर सजते हैं, यहाँ गलियाँ, चौबारे, घर सारे।
और, और बाजार।।

देश हमको प्राणों से प्यारा

तर्ज - सारा प्यार तुम्हारा मैंने

सारा देश हमारा, हमको प्राणों से भी, प्यारा है।
हम इसकी गोद में पले-बड़े, ये भारतवर्ष हमारा है।।

उच्छल जलधि तिरंगाऽऽऽऽ।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल बंगा।।
झंडा ऊँचा हमारा, विंध्य हिमाचल यमुना गंगा।
उच्छल जलधि तिरंगा, झंडा ऊँचा हमारा।।
होऽ देश भक्ति की जोत जलाकर।
वतन बचाना हैऽऽऽ।।सारा देश।।

कुर्बान हो जायेंगे, जब वक्त कोई आयेगा।
दुनिया को दिखादेंगे ताकत, दुश्मन भी थर्रायेगा।।
दस-दस पर एक भारी, पड़ कर हस्ती मिटा दे उसकी।
जिसने बुरी नजर डाली, दस-दस पर एक भारी।।
होऽ धरती माँ की गोद का हमको।
कर्ज चुकाना हैऽऽऽ।।सारा देश।।

आज का दिन अति पावन

तर्ज - आज को जुनली रात मा

आज का दिन अति पावना, मंगलमय शुभ आवना।

कुछ बहनों का मन ये बना, आर्यिका बन जाओ ना।।

इनके निर्णय को नमन। आज....................

घर संसार में सुख न जाना, पर को दुःख का कारण माना।

छोड़ दिया परिवार रे।। आज...................

एक दिन मुनिवर को है देखा, चमकाने को भाग्य की रेखा।

सौंप दिया खुद आप रे।। आज...................

कई वर्षों तक इन्हें पढ़ाया, ज्ञान-ध्यान और त्याग कराया।

बन जाओ बलवान रे।। आज...................

छोड़ न दे हमको ये जमाना, इससे पहले छोड़ के जाना।

करने को कल्याण रे।। आज...................

पापों से बचना है

तर्ज - एक प्यार का नगमा है

पापों से बचना है, सत्कर्म को करना है।
एक पल का भरोसा नहीं, जीवन तो ढलना है।।पापों।।

आधार हो जीवन का, हमें मोक्ष को पाना है।
संसारी सुख साधन, यूँ ही मिल जाना है।।
इसके लिये न हमको, कुछ अलग से करना है।
एक पल का भरोसा नहीं, जीवन तो ढलना है।।पापों।।

आतम का हित जानो, सच्चा सुख पहचानो।
आकुलता रहित है जो, उस मोक्ष को तो जानो।।
मुक्ति के पथ पर चल कर, हमको बढ़ना है।
एक पल का भरोसा नहीं, जीवन तो ढलना है।। पापों।।

तूफाँ हैं बहुत भारी, भव पार उतरना है।
फंसी बीच भंवर नैया, बस तू ही खेवैया है।।
प्रभु चरणों में आकर, *'संजय'* को तरना है।
एक पल का भरोसा नहीं, जीवन तो ढलना है।।पापों।।

वीर का नाम तो हम जपते रहे

तर्ज - कैसे-कैसे हादसे सहते रहे

वीर का नाम तो हम जपते रहे, महावीर नाम तो हम जपते रहे।

फिर भी दो और चार में अटके रहे।।वीर।।

हेरा-फेरी से न बाज आये हम, दिखते कुछ हैं और कुछ करते रहे

वीर का नाम तो हम जपते रहे, महावीर नाम तो हम जपते रहे।

फिर भी दो और चार में अटके रहे।।वीर।।

कितनी कमियां हैं हमारे व्यवहार में, और शिकायत ओरों की करते रहे

वीर का नाम तो हम जपते रहे, महावीर नाम तो हम जपते रहे।

फिर भी दो और चार में अटके रहे।।वीर।।

अपने दुःख से नहीं, यहाँ कोई दुःखी, दूसरों के सुख-चैन से दुखते रहे

वीर का नाम तो हम जपते रहे, महावीर नाम तो हम जपते रहे।

फिर भी दो और चार में अटके रहे।।वीर।।

मिथ्यात्व के पाँच भेद

तर्ज - करवटें बदलते रहे

मिथ्यात्व में अटकते रहे, अनादि काल हम।
पाप करें हम SSS, पाप करें हम SSS।।

वीतरागी देव छोड़, रागी-द्वेषी भाये
रुचे न गुरु निर्ग्रन्थ भेष, बहु परिग्रही गुरु भाये।
विनय न कर सका गुणों की, निकल गया दम।।पाप करें हम।।

स्वर्ग-नर्क होते भी हैं, या नहीं होते हैं,
किसने देखा किसने जाना, कैसे ये होते हैं।
जिन वचन में संशय नहीं, ऐसे भक्त कम।।पाप करें हम।।

मैं हूँ गोरा, मैं हूँ काला, मैं सुखी-दुःखी हूँ
मैं हूँ राजा, मैं हूँ राणा, मैं ही छत्रपति हूँ।
ऐसी विरुद्ध मान्यता, कर न सके कम।।पाप करें हम।।

खुद को पर का, कर्त्ता माना, पर को भी अपना माना
जिन धर्म को न पहचाना, खुद को खुद न जाना।
आत्मा की सुध नहीं, शरीर को नमन।।पाप करें हम।।

जन्म होने पर समझता, जन्म हुआ मेरा,
मरण होने पर समझता, मरण हुआ मेरा।
ऐसी गलत मान्यता, पालता हर दम।।पाप करें हम।।

प्रभु चरणों में ध्यान लगाते

तर्ज - चॉदी जैसा रंग

प्रभु चरणों में ध्यान लगाते, जो नित सुबह-शाम
एक वही धनवान है जग में, बाकी सब कंगाल।

रोजाना मंदिर में आते न्वहन प्रभु का करते-2
पूजा पाठ रचाते प्रभु के गुणों का स्तवन करते,
स्वाध्याय करते, दान करते, संयम पालन करते
षट आवश्यक पालन करते-2 दया धरम को धार
एक वही धनवान है जग में ....

जिनवर की मूरत है प्यारी मन को हरने वाली-2
संशय-भरम मिटाने वाली शक्ति देने वाली
मनवॉछित फल देने वाली, झोली भरने वाली
भाव सहित वंदे जो कोई हो जाये खुशहाल
एक वही धनवान है जग में ....

सज-धज कर मंदिर से निकली अपने प्रभु की सवारी-2
गाजे-बाजे, ढ़ोल-नगाड़े बजते है जी भारी
उमड़-उमड़ कर नर-नारी भक्तों की भीड़ सारी
चंवर ढुरातें नृत्य करते गातें मंगलाचार
एक वही धनवान है जग में ....

तन मै तू काहे को व्यसन करें

खाना गुटखा नहीं खाना

तर्ज - रोना कभी नहीं रोना

खाना गुटखा नहीं खाना, जीवन को ये खाये।
इसे नहीं खाना, न खाना-न खाना।।
गुटखा नहीं...................

इस पर लिखी चेतावनी, बारम्बार बताये।
तू क्या खाये मुझको, मैं ही तुझको खाये।।
एक दिन ऐसा होगा, जब कुछ न होगा।
बस रोना-धोना ही होगा।।खाना गुटखा नहीं।।

छोटा सा परिवार है, मात पिता का साथ है।
बीवी-बच्चों के लिये, तू ही तो भगवान है।।
एक दिन ऐसा होगा, जब तू न होगा।
परिवार दुखी-दुखी होगा।।खाना गुटखा नहीं।।

भारत की पहचान बनो, देश की ऊँची शान बनो।
जीवन ये अनमोल है, मरने का न काम करो।।
मरना है तो, तुम देश पर मरो।
संसार याद कर रहा होगा।।खाना गुटखा नहीं।।

प्रभु गुण गा रे

तर्ज - अभी न जा मेरे साथी

न गवाँ यूँ ही जिन्दगानी,

प्रभु गुण गा रे, गा रे-गा रे-गा रे।

बचपन बीता बीत गई जवानी,

आया बुढ़ापा खत्म होने को कहानी।

अन्त समय को व्यर्थ की बातों में न लगा रे।।प्रभु गुण गा रे।।

विषयों की चाहा में तू तो रोया

पाया कम है खोया ही है खोया।

पुण्य उदय से जो भी मिला है, उसको बचा रे।।प्रभु गुण गा रे।।

काल सिंह ने मृग चेतन को घेरा,

नहीं बचावन होगा कोई तेरा।

स्वार्थ के सब संगी-साथी, धर्म सिवा रे।।प्रभु गुण गा रे।।

दुर्लभ है निगोद से त्रस काय पाना,

दुर्लभ से दुर्लभ है नर-तन पाना।

नर तन को तू सफल बना ले, गुण गुणा रे।।प्रभु गुण गा रे।।

कर्म तजता है जो, पुजता है वो

तर्ज - स्वनिर्मित

कर्म घाति-कर्म अघाति तजता है जो, पुजता है वो।

तीर्थों पर, कण-कण में, जन-जन के, मन-मन में, सर्वकाल में।।

चारों कर्मों की प्रकृतियाँ क्षय कर गये।

ज्ञानावर्णी, दर्शनावणी, मोहनीय, अन्तराय।।

कर्म घाति-कर्म अघाति तजता है जो, पुजता है वो।

तीर्थों पर, कण-कण में, जन-जन के, मन-मन में, सर्वकाल में।।

बाकी के कर्मों की प्रकृतियाँ न रहे।

आऽयु, नाऽम, गोत्र, वेदनीय।।

कर्म घाति-कर्म अघाति तजता है जो, पुजता है वो।

तीर्थों पर, कण-कण में, जन-जन के, मन-मन में, सर्वकाल में।।

पहले के चार तजे तो अरिहन्त हो गये

बाकी के चारों को छोड़ा तो सिद्ध हो गये।

समवशरण - सिद्ध शिला पर विराजे।।

कर्म घाति-कर्म अघाति तजता है जो, पुजता है वो।

तीर्थों पर, कण-कण में, जन-जन के, मन-मन में, सर्वकाल में।।

सारे कर्मों से दुखिया रे

तर्ज - जा रे-जा रे उड़ जा रे पंछी

सारे SSS सारे कर्मों से दुखिया रे SSS
भटकते यहाँ पे वहाँ पे लाख 84 योनी में।
गुजर रहे यूँ ही जीवन सारे।।दुखिया।।

है कर्मों की कतार बड़ी, इनकी मार सबको पड़ी–2
बड़े-बड़े वीर ढाये रे।।दुखिया।।

दुःखों को सहते-सहते, बहुत काल बीत गये–2
नहीं सच्चा सुख पाये रे।।दुखिया।।

ये जीवन की डोर पड़ी, कमजोर होती बड़ी–2
उलझ-पुलझ टूट जाये रे।।दुखिया।।

खिलौना ये माटी का, बड़ा ही है घाटी का–2
खेल-खेल में टूट जाये रे।।दुखिया।।

रे बचपन में ज्ञान न था, जवानी में ध्यान न था–2
बुढ़ापा तो बिगड़ा जाये रे।।दुखिया।।

167

एक ना एक दिन कोई बहाना बनेगा

तर्ज - एक न एक दिन ये कहानी बनेगी

एक न एक दिन कोई बहाना बनेगा,
छोड़ के हमको भी जाना पड़ेगा।
प्रीत पराई निभाना पड़ेगा,
अपनो से दूऽर जाना पड़ेगा।।एक ना एक।।

चाहे राजा हो, चाहे रंक हो, चाहे ग्रन्थ हो या निर्ग्रन्थ हो-2
इन सबका भेद मिटाना पड़ेगा, छोड़ के हमको भी जाना पड़ेगा।
प्रीत पराई निभाना पड़ेगा, अपनो से दूर जाना पड़ेगा।।एक ना एक।।

भारत वाला हो, लंदन वाला हो, चाहे काला हो या गोरा हो-2
रंगों का भेद मिटाना पड़ेगा, छोड़ के हमको भी जाना पड़ेगा।
प्रीत पराई निभाना पड़ेगा, अपनो से दूर जाना पड़ेगा।।एक ना एक।।

चाहे हिन्दू हो, चाहे मुस्लिम हो, चाहे जैन हो चाहे सिख हो-2
सबको गले से लगाना पड़ेगा, छोड़ के हमको भी जाना पड़ेगा।
प्रीत पराई निभाना पड़ेगा, अपनो से दूर जाना पड़ेगा।।एक ना एक।।

रेत में से तेल न निकले

तर्ज - रेशमी सलवार कुर्ता जाली का

रेत में से तेल न निकले, खाली का।

है परिश्रम व्यर्थ में, मनमानी का।।रेत में।।

सुख की चाह में, भटकता तू फिरे।

सुख है अपने अन्दर की, स्व लाली का।।रेत में।।

अपना लोटा छान सको तो छान लो।

छान सका न कुआं है कोई, पानी का।।रेत में।।

चाहता तो लाभ, जीवन में मिले।

काम करता है मगर सब, हानि का।।।रेत में।।

औरों का दिल जीतेगा, कैसे भला।

तूने अपना दिल न जीता, काली का।।।रेत में।।

अभी भी मौका है, भला गर चाहता।

'*संजय*' ले तू आश्रय, जिनवाणी का।।रेत में।।

प्रभु द्वारा ज्ञानबोध

तर्ज - स्वर्निमित

देखो भविजन स्व में आओ, पर द्रव्यों में लुभा रहे क्यों।
देखो भविजन.............

जगजन-परिजन तेरे नहीं है, तेरा तुझमें है बाहर नहीं है।
जान बूझकर ना समझे तू, कैसी आदत बना ली है।।
देखो भविजन.............

जैसा मैं हूँ वैसा तू है, तू भी ज्ञानानन्द मयी है।
मेरी शक्ति मेरे में है, तूने बाहर गँवा दी है।।
देखो भविजन.............

लेकर मेरा अवलम्बन तू, अपना जीवन सुन्दर कर ले।
पर रहना अपने में ही तू, जिनवाणी माँ बता रही है।।
देखो भविजन.............

संग-संग रहता कर्मों का रेला

तर्ज - मेरे संग संग आया तेरी

तेरे संग-संग रहता, तेरे कर्मों का रेला।
न आया अकेला तू, हाँ तू, न जाये अकेला ऽ।।
तेरे संग...................

पुण्य उदय से, सब कुछ पाया
पाकर इसको व्यर्थ गँवाया।
बीत गया सारा जीवन न काम किसी के आया ऽऽऽऽऽ
तेरे संग...................

जैसा किया है, वैसा भरेगा
पाप करम से दुःख ही मिलेगा।
भूखे को यदि भोजन न दिया तो भूखा तड़पेगा ऽऽऽऽऽ
तेरे संग...................

पुण्य करम से, आज मिला है
पाप करम से कल न रहेगा।
अपनी-अपनी करनी का फल भोगना पड़ेगा ऽऽऽऽऽ
तेरे संग...................

पाप को दिल से निकालो

तर्ज - ठहरिये होश में आ लूँ तो चले जाइएगा

पाप को दिल से निकालो, तो भला होइएगा।
सत्य की राह पे चालो, तो भला होइएगा।।

किस कदर खूबसूरत है हमारी, आज की दुनिया।
अपना फिर कल ना बिगाड़ो, तो भला होइएगा।।
पाप को दिल से निकालो, तो भला होइएगा।
सत्य की राह पे चलो, तो भला होइएगा।।

जिस तरह कीचड़ में, खिलकर कमल, सुन्दर दिखता।
खुद को भी ऐसा बना लो, तो भला होइएगा।।
पाप को दिल से निकालो, तो भला होइएगा।
सत्य की राह पे चलो, तो भला होइएगा।।

सर्पों से लिपटा हुआ, चन्दन का तरु जैसे महके।
अपने गुण ऐसे संभालो, तो भला होइएगा।।
पाप को दिल से निकालो, तो भला होइएगा।
सत्य की राह पे चलो, तो भला होइएगा।।

लूट ले लूट ले, जीवन में रे तू, भक्ति का मजा।
मन में प्रभु ज्योति जला लो, तो भला होइएगा।।
पाप को दिल से निकालो, तो भला होइएगा।
सत्य की राह पे चलो, तो भला होइएगा।।

मौत का फंदा सर पे लटके

तर्ज - मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे

मौत का फंदा, सर पे लटके–2

ना जाने कब आये बुलावा, नाम प्रभु का रट ले-रट ले।

मौत का फंदा, सर पे लटके–2

पल-पल बीते जाये उमरिया, अरिहन्तों का सुमिरन कर ले।

मौत का फंदा, सर पे लटके–2

क्रोध-मान को दूर हटा ले, भाव क्षमा को मन में धर ले।

मौत का फन्दा, सर पे लटके–2

पापों में बीते जिन्दगानी, सत्य-धरम की राह पकड़ ले।

मौत का फंदा, सर पे लटके–2

भोगों में जीवन है गवाया, मन-वच-तन को वश में कर लें।

मौत का फंदा, सर पे लटके–2

चरणों में ध्यान लगा ले

तर्ज - चाँद आहें भरेगा

चरणों में ध्यान लगा ले, मन में प्रभु को बसा ले।
सोया तू भाग्य जगा ले, खुद को कर प्रभु के हवाले।।
चरणों में ध्यान लगा ले,

जैसा प्रभु जी है तेरा, वैसा ही रूप तेरा।
तूने खुद को भुलाकर, विषयों में आप घेरा।।
छोड़ कर सारा जहाँ रे, पा के प्रभु के सहारे।
सोया तू भाग्य जगा ले, खुद को कर प्रभु के हवाले।।
चरणों में ध्यान लगा ले,

तूने खुद को न जाना, क्या है तेरा ठिकाना।
आया है तू कहाँ से, जाना है कहाँ जाना।।
चरणों की रज को उठा ले, माथे अपने लगा ले।
सोया तू भाग्य जगा ले, खुद को कर प्रभु के हवाले।।
चरणों में ध्यान लगा ले,

खोया है क्या है पाया, भोगों में सब गवाया।
कर्मों की श्रृंखला से, जकड़ी है तेरी काया।।
तोड़ कर सारे बन्धन, ज्ञान की जोत जला ले।
सोया तू भाग्य जगा ले, खुद को कर प्रभु के हवाले।।
चरणों में ध्यान लगा ले,

पापों से डर के

तर्ज - तारों में सजके
पापों से डर के, कर्मों से बच के।
भैया रहो सदा डट के।।पापों।।

कर्मों का जाला, फैला हुआ सारा
घिर रहा जिसमें प्राणी (बेचारा)-2
न घबरायें, संभल जायें।
तेरे प्रभु तो है तुझमें।।
पापों से डर के, कर्मों से बच के।
भैया रहो सदा डट के।।पापों।।

सांस की धारें, चलती जो हमारे
टूट कब जाये, किसको पता (प्यारे)-2
न सतायें संभल जायें।
सुख-दुःख सबका, है एक जग में।।
पापों से डर के, कर्मों से बच के।
भैया रहो सदा डट के।।पापों।।

संसार सागर में, कब से रहे भटके
कौन है अपना, किसको शरण (समझे)-2
न अकुलायें, संभल जायें।
तेरे प्रभु तो है तुझमें।।
पापों से डर के, कर्मों से बच के।
भैया रहो सदा डट के।।पापों।।

जीवन अपना है अनमोल

तर्ज - कस्तूरी तो नाभि में है

जीवन अपना है अनमोल, व्यर्थ में न रोले रे-2

तेरे प्रभु हैं तेरे भीतर, बाहर में न डोले रे।

जीवन अपना ....

खुद को पर का कर्त्ता माना, पर को भी अपना माना-2

ऐसी न कर भूल मूल में-2 मूल में भूल को धो ले रे।

तेरे प्रभु हैं तेरे भीतर, बाहर में न डोले रे।।

जीवन अपना ....

अब तक झूठा मान किया है, झूठा ही व्यापार किया-2

सत्य धर्म की राह पे चल कर-2, सत्-सत्-सत् बोले रे।

तेरे प्रभु हैं तेरे भीतर, बाहर में न डोले रे।।

जीवन अपना ....

विषयों की चाह में तूने, खुद को खुद ही लुटा दिया-2

पर दृव्यों से ध्यान हटा ले-2 प्रभु का सुमिरन कर ले रे।

तेरे प्रभु हैं तेरे भीतर, बाहर में न डोले रे।।

जीवन अपना ....

पाप की कमाई नहीं पचती

तर्ज - आज की मुलाकात बस इतनी

पाप की कमाई नहीं पचती, पापी से सारी दुनिया बचती-2

पाप.......................

बेइमानी करके कमाया हुआ, या फिर किसी को सताया हुआ।

भोगों में रोगों में बह जायेगा, हाथों से एक दिन निकल जायेगा।।

पाप.......................

कुछ दिन महीने कुछ वर्षों तक, मौज उड़ा पाओगे कब तक।

छोड़ के एक दिन जाओगे जब, कोई न जायेगा श्मशान तक।।

पाप.......................

चोरी का काम अगर अच्छा होता, इनके भी नाम से नगर होता।

चोरों के पुर कभी बसते नहीं, पुर छोड़ो घर भी दिखते नहीं।।

पाप.......................

छुप-छुप के जीने में क्या है मजा, सबको पता हो घर का पता।

आते हों जाते हों लोग जहाँ, मिल-जुल के रहते हों लोग जहाँ।।

पाप.......................

जन्म लिया मर जायेगा

तर्ज - कभी न कभी कहीं न कहीं

अभी न सही कभी तो सही, एक दिन छोड़ के जायेगा।
जीवन तो ढल जायेगा, जन्म लिया मर जायेगा।।अभी।।

कर ले चलने की तैयारी, आसान होगी राह तेरी
अपनी बार करे मत देरी, टिक-टिक चलती जाये घड़ी।
जितनी जल्दी ये सच जाने, उतना कम घबरायेगा।।अभी।।

इस सत्य को समझ ले पगले, कष्ट नहीं फिर पायेगा
हँसते-हँसते निकलेगा दम, जन्म सफल हो जायेगा।
मुट्ठी बाँध के आने वाले, हाथ पसारे जायेगा।।अभी।।

जिस घड़ी तेरा मरण ये होगा, उसी घड़ी होगा जन्म तेरा
एक तरफ रोएंगे जब सब, एक तरफ खुशियों का समाँ।
किसको तू अपना मानेगा, किसको तू झुठलायेगा।।अभी।।

नहीं बिगाड़ो अपने शुभ परिणाम

तर्ज - स्वर्निमित

बात-बात में नहीं बिगाड़ो, अपने शुभ परिणाम रे।
बैठ प्रभु के चरण-शरण में, पावे शान्ति अपार रे।।

क्रोध आदि कषायों को छोड़ो, अपने प्रभु से नाता जोड़ो।
मिलेगा सुख फिर बावरे, मिलेगा सुख फिर बावरे।।
बात-बात में नहीं बिगाड़ो, अपने शुभ परिणाम रे।
बैठ प्रभु के चरण-शरण में, पावे शान्ति अपार रे।।

हिंसा-झूठ से नाता तोड़ो, सत्य अहिंसा की जय बोलो।
बनोगे फिर बलवान रे, बनोगे फिर बलवान रे।।
बात-बात में नहीं बिगाड़ो, अपने शुभ परिणाम रे।
बैठ प्रभु के चरण-शरण में, पावे शान्ति अपार रे।।

ज्ञानानन्द मयी *'संजय'* तू, क्यों करता अभिमान रे।
ये तो नीच गति का कारण, इतना तो पहचान रे।।
बात-बात में नहीं बिगाड़ो, अपने शुभ परिणाम रे।
बैठ प्रभु के चरण-शरण में, पावे शान्ति अपार रे।।

धर्म शरण हो

तर्ज - पल-पल दिल के पास

जप-तप-संयम-त्याग जीवन भर हो

जब तक तन में प्राण धर्म शरण हो।।जप-तप।।

कभी भूल न पाऊँ, मैं उन दस धर्मों को

जो देते सुख शान्ति, जीवन भर हम सबको।

अभ्यास में लाऊँ, कम क्रोध कर पाऊँ।।

सब जीवों के प्रति, मैं प्रेम निभाऊँ।

सब मेरे हो जावें, मैं सबका हो जाऊँ।।जप-तप।।

रत्नत्रय पालन कर, दस सीढ़ी चढ़ जाऊँ

कर्मों का क्षय करके, मुक्ति को पा जाऊँ।

मैं भावना भाऊँ, संसार तर जाऊँ।।

संसार में रहकर, कुछ ऐसा कर जाऊँ।

सतपथ की राह चलकर, प्रभु जैसा बन जाऊँ।।जप-तप।।

जब लो नहीं शिव लहूं तब लो

तर्ज - सायो नारा, सायो नारा वादा निभाऊँगी

जब लो नहीं शिव लहूं तब लो, प्रभु अपनी शरण में लो।
यही भावना भाता हूँ, प्राण रहे तन में जब लो।।जब लो।।

जिसको अपना समझा है, छोड़ के वो चल देता है।
एक दिन सबको जाना है, ऐसी सम्यक दृष्टि दो।।जब लो।।

पापों में रम जाता है, जीवन बीता जाता है।
सत्पथ की मैं राह चलूं, हम को मन की शक्ति दो।।जब लो।।

साथ नहीं कुछ जाता है, छोड़ यहीं सब जाना है।
फिर क्यों कहता अपना हूँ, विषयों से विरक्ति दो।।जब लो।।

जन्म-मरण देह करता है, आतम कभी न मरता है।
इस सत्य को पहचानूं, हमको ऐसी बोधि दो।।जब लो।।

जैसे दूध में रहे पानी, ऐसे आतम देह जानी।
अलग-अलग इनकी पहचान, भेद ज्ञान की दृष्टि दो।।जब लो।।

क्यों हर जगह सर झुका रहे

तर्ज - तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो

क्यों हर जगह सर झुका रहे हो–2
विवेक क्यों न लगा रहे हो–2।।क्यों।।

राम, कृष्ण, महावीर को भूले–2
न जाने किस-किस को ध्यान रहे हो–2
विवेक क्यों न लगा रहे हो।।क्यों।।

सच्चे गुरु की पहचान कर लो–2
किसको फरिश्ता बता रहे हो–2
विवेक क्यों न लगा रहे हो।।क्यों।।

डरा के तुमको लूटेगा हर कोई–2
दुःखों से जो तुम घबरा रहे हो–2
विवेक क्यों न लगा रहे हो।।क्यों।।

औरों से पहले जय अपनी बोलो–2
क्यों अपनी शक्ति छुपा रहे हो–2
विवेक क्यों न लगा रहे हो।।क्यों।।

पापों से बचकर चलना होगा

तर्ज - झिल मिल सितारों का

पापों से बचकर चलना होगा-

जीवन तभी तो सुन्दर होगा–2

मैत्री भाव जगत में सबसे रखना होगा।

पापों से................

संयम के पथ पर चलकर, हम सारे पाप गलायेंगे-2

पापी से नफरत न करके, उसको राह दिखायेंगे।

सबको समझकर चलना होगा, जीवन तभी तो सुन्दर होगा।।

पापों से................

प्रभु आपके उपकारों को, हम न भूलायेंगे-2

जिओ और जीने दो सबको, नारा यही लगायेंगे।

भय न किसी का किसी को होगा, जीवन तभी तो सुन्दर होगा।।

पापों से................

सारे जग में भारत की, पहचान बनायेंगे

जात-पात का भेद भूलकर, एक हो जायेंगे

एक में सबको ढलना होगा, जीवन तभी तो सुन्दर होगा।।

पापों से................

जप ले आतम राम रे

तर्ज - स्वनिर्मित

श्वास-श्वास में सुमिरन कर ले,

जप ले आतम राम रे।

न जाने किस श्वास में भैया,

निकले तेरे प्राण रे।।श्वास-श्वास।।

काल अनादि यूँही गँवाया,

झूठी है जग की सुख छाया।

जिनवाणी सुन समझ ले भाया,

मंत्र जपो णमोकार रे।।श्वास-श्वास।।

भेद ज्ञान कुछ कर नहीं पाया,

मोह-माया में मन भरमाया।

जिनवाणी सुन समझ ले भाया,

होगा बेड़ा पार रे।।श्वास-श्वास।।

नेक काम कुछ कर नहीं पाया,

भोगों में धन व्यर्थ गँवाया।

जिनवाणी सुन समझ ले भाया,

कर ले *'संजय'* दान रे।।श्वास-श्वास।।

भजन बिना भी क्या जीना

तर्ज - ओ साथी रे तेरे बिना

ओ प्राणी रेऽऽऽऽऽ (भजन बिना भी क्या जीना)–2

उस दिन की क्या गिनती, जिस दिन लबों से

नाम प्रभु का लिया नाऽऽऽ।।भजन।।

श्वास-श्वास में हो सुमिरन उसका,

जिसने तुझको जीवन बक्शा।

इस पृथ्वी से दूर गगन तक,

कण-कण में है अस्तित्व जिसका।

उसके अहसानों को ऽऽऽ–2 उसके रहमो कर्म को

कभी भुला तू न देना ऽऽऽ।।भजन।।

सुबह से लेकर शाम तक, शाम से लेकर सुबह तक

प्रभु नाम की, रट ले माला, हो जायेगा बेड़ा पार।

सुख के दिनोंऽ में ऽऽऽऽ–2 दुख के दिनों ऽ में

कभी भुला तू न देना ऽऽऽ।।भजन।।

मन-वच-तन से, ध्यान लगा ले, अपने प्रभु को, दिल में बसा ले

पल-पल बीते, जाये उमरिया, गीत प्रभु के, गा ले-गा ले।

आती हर सांसो में ऽऽऽ–2 जाती हर सांसो में

कभी भुला तू न देना।।भजन।।

बन्दे मत कर अभिमान

तर्ज - जीवन चलने का नाम

बन्दे मत कर अभिमान तेरी नहीं ये पहचान

तू खुद को अंश प्रभु का जान तेरे भीतर भी है भगवान

तू अपनी शक्ति तो पहचान, बन्दे.......

- **रणभूमि में गिरते देखा, बहुत बड़ा अभिमानी।**
  सोने की लंका थी जिसकी, मंदोदरी रानी।।
  तू....................

- **श्रीपाल राजा था सुन्दर, कुष्ट रोग ने घेरा।**
  कोढ़ी बनकर वन-वन भटका, दुःखी हुआ भतेरा।।
  तू....................

- **धन-दौलत कितनी भी जोड़े, साथ नहीं कुछ जावे।**
  मुट्ठी बाँध के आने वाले, हाथ पसारे जावें।।
  तू....................

- **दो दिन की तेरी जिन्दगानी, चला चली का खेला।**
  अपनी साँसों को तू जी ले, उजड़ जायेगा मेला।।
  तू....................

कर्त्ता मैं न किसी का

तर्ज - स्वर्निमित

कर्त्ता मैं न किसी का, कोई नहीं मेरा रे।
पाप-पुण्य को लेकर प्राणी, जन्मे मरे अकेला रे।।

मैं जो चाहूँ वो हो जाये कब ऐसा होता है।
पुण्य उदय से पा जाता है पाप उदय से खोता है।।
कर्त्ता मैं न किसी का, कोई नहीं मेरा रे।
पाप-पुण्य को लेकर प्राणी, जन्मे मरे अकेला रे।।

जो बोया है सो पायेगा, कोई न देने वाला।
अपनी-अपनी करनी का फल, भोगे भोगने वाला।।
कर्त्ता मैं न किसी का, कोई नहीं मेरा रे।
पाप-पुण्य को लेकर प्राणी, जन्मे मरे अकेला रे।।

पाप और पुण्य के कारण ही, सुख-दुःख आवे जावे।
जब तक भोग नहीं हम लेवें, प्राण निकल नहीं पावे।।
कर्त्ता मैं न किसी का, कोई नहीं मेरा रे।
पाप-पुण्य को लेकर प्राणी, जन्मे मरे अकेला रे।।

कब क्या हो जाये पता नहीं

तर्ज - दिल के एक लहर सी उठी है अभी

पल में कब क्या से क्या हो जाये अभी,
ये किसी को कभी पता ही नहीं।

चली बारात प्रभु नेमी की,
हुआ वैराग ब्याह किया ही नहीं
ये किसी को ....

राम के राज तिलक की खुशियाँ,
मिला वनवास वो खुशी न रही।
ये किसी को ....

मैना सुन्दरी थी पुत्री राजा की,
कोढ़ी संग ब्याह दिया सोचा नहीं।
ये किसी को ....

सो रहे लोग चैन से घर में,
उठ न पाये वो जिन्दगी न रही।
ये किसी को ....

शानो-शौकत से राजा जीता था
कब्र को दो भी गज जमीन न मिली।
ये किसी को ....

हर दिन एक समान

तर्ज - एक प्यार का नगमा है

एक साल का जाना है, एक वर्ष का आना है।
अन्तर क्या दोनों में, कुछ समझ न पाना है।।

अब तक जो हुआ है, आगे वही होना है।
जीना है मरना है, मरना है जीना है।।
मिलना है बिछड़ना है, बिछड़कर मिलना है।
अन्तर क्या दोनों में, कुछ समझ न पाना है।।

रोना है हँसना है, हँसना है रोना है।
सोना है जगना है, जगना है सोना है।।
गिरना है संभलना है, संभलकर गिरना है।
अन्तर क्या दोनों में, कुछ समझ न पाना है।।

तू है बड़ा धनवान

तर्ज - दुनिया में तेरा है बड़ा नाम

ओ प्राणी तेरा क्या है मुकाम, आया कहाँ से जाना कहाँ।
मत बने भिखारी है तू, तू है बड़ा धनवान।
शक्ति को पहचान ले अपनी, तू है मेरे समान।।ओ प्राणी।।

दुनिया है एक रैन बसेरा–2
क्यों करता है मेरा-मेरा।
ये तेरी साँसें आनी-जानी,
जैसे बहता दरिया पानी, हो जायेगा भव पार।
शक्ति को पहचान ले अपनी, तू है मेरे समान।।ओ प्राणी।।

नैन मिले तू दर्शन कर ले–2
मुख से अपने भजन कर ले।
इन हाथों से दान कराना, अपनी क्षमता को न छुपाना
बन जायेगा बलवान।
शक्ति को पहचान ले अपनी, तू है मेरे समान।।ओ प्राणी।।

किसको समझे पगले अपना–2
झुठी दुनिया झुठा सपना।
मन में ज्ञान की जोत जलाले,
खुद को कर तू खुद के हवाले।
हो जायेगा कल्याण।
शक्ति को पहचान ले अपनी, तू है मेरे समान।।ओ प्राणी।।

पाप में जीवन मत घोलो

तर्ज - सजन रे झूठ मत बोलो

पाप में जीवन मत घोलो, नहीं पल का ठिकाना है

चार दिन की ये जिन्दगानी, छोड़कर सबको जाना है।।पाप।।

कर्म खोटे किये सारे, भला कैसे तेरा होगा।

बुरे का फल बुरा होगा–2, यही प्रभु ने बताया है।।पाप।।

विषय भोगो में तू खोया, खुली आँखे हैं पर सोया।

किसी का मार कर हिस्सा–2, नहीं फूला समाया है।।पाप।।

वचन मीठे-सरल बोलो, ज्ञान के अपने पट खोलो।

स्वयं की शक्ति को तोलो–2, प्रभु ने कर दिखाया है।।पाप।।

खरे सोने के जैसा शुद्ध बनेगा

तर्ज - पापा कहते है बड़ा नाम करेगा

खरे सोने के जैसा शुद्ध बनेगा,

तप करके तू भी अरिहन्त बनेगा।

मगर हों जब तेरे इरादे, सच्चे साधु की तरह।।खरे।।

छोड़नी होगी आशाएं सारी, आशाएं देती दुख-दर्द हैं–2

जोड़नी होगी प्रीति उन्हीं से, जो चल रहे मुक्ति पथ हैं।

पिच्छी - कमंडल से न काम चलेगा, भेष दिगम्बर लेके बढ़ना पड़ेगा

मगर हों जब तेरे इरादे, सच्चे साधु की तरह।।खरे।।

तोड़नी होगी वो ड़ोर सारी, कर्मों से बाँधे हमें जो है–2

वो रिश्ते नाते, वो सारी बाते, जो लग रही हैं अच्छी हमें।

व्यर्थ की बातों से जब मन हटेगा, तेरे में तुझको तेरा प्रभु दिखेगा

मगर हों जब तेरे इरादे, सच्चे साधु की तरह।।खरे।।

मोड़नी होगी उस ओर नैया, पार उतारे जो भव से-2

सौंपनी होगी पतवार उनको, मोक्ष मार्ग के जो नेता हैं।

भव-भव की सारी बाधाएं हरेगा, सिद्धों के जैसा तू भी सिद्ध बनेगा

मगर हों जब तेरे इरादे, सच्चे साधु की तरह।।खरे।।

जो पाप के कार्यों से दूर रहते

तर्ज - हम आप की आँखों में

जो पाप के कार्यों से, दूर रहते वो प्यारे हैं।
वो रहते प्रभु दिल में, सुख शांति को पाते हैं।।
जो पाप................

जो औरों के दुःख-दर्द को, अपना ही समझते हैं।
वो स्वर्गों की यात्रा कर, मुक्ति को पा लेते हैं।।
जो पाप................

माँ-बाप की सेवा में, जो खुद को लगाते हैं।
भगवान की पूजा का, फल पूरा वो पाते हैं।।
जो पाप................

जो औरों की खातिर, धन अपना लगाते हैं।
पुण्य को बढ़ाते वो, सम्मान को पाते हैं।।
जो पाप................

दो दिन की जिन्दगानी है

तर्ज - आदमी मुसाफिर है

दो दिन की जिन्दगानी है, चला-चली का खेला है।
चला-चली के खेले में, न कुछ कर पाता है।।दो दिन।।

आया कहाँ से जाना कहाँ है,
आया कहाँ से जाना कहाँ है।
इतना तो सोचो ये तो विचारो,
इतना तो सोचो ये तो विचारो।
सपनों में जीवन खो जाता है।।दो दिन।।

जीवन को अपने सुन्दर बनाओ,
जीवन को अपने सुन्दर बनाओ।
पापों में इसको मत है गँवाओ,
पापों में इसको मत है गँवाओ।
अपने ही हाथो लुट जाता है।।दो दिन।।

रोते हुए को देना हँसाना,
रोते हुए को देना हँसाना।
गिरते हुए को देना उठाना,
गिरते हुए को देना उठाना।
सुमिरन प्रभु का हो जाता है।।दो दिन।।

चलने की अपने कर लो तैयारी,
चलने की अपने कर लो तैयारी।
आसान होगी राह हमारी,
आसान होगी राह हमारी।
प्रभु से मिलन अवसर आता है।।दो दिन।।

रे मन काहे भटक रहा

तर्ज - तेरा मेरा प्यार अमर

रे मन काहे भटक रहा, चरणों में प्रभु ध्यान लगा–2

रे मन..................................

छोटी सी ये जिन्दगी, छोटा सा परिवार है।

झूठी जग की सुख-छाया, झूठा ये जहान है।।

रे मन काहे भटक रहा, चरणों में प्रभु ध्यान लगा–2

रे मन..................................

काहे का गुमान है, काहे का अभिमान है।

मतलबी जहान है, काहे का अहसान है।।

रे मन काहे भटक रहा, चरणों में प्रभु ध्यान लगा–2

रे मन..................................

समय से पहले, भाग्य से ज्यादा नहीं

तर्ज - आज से पहले

समय से पहले, भाग्य से ज्यादा–2

कभी किसी को मिला नहीं।।समय।।

दुःख से न घबराना, दुःख न रहेगा

कांटों में फूल खिलेगा।

आगे ही कदम बढ़ाना, पीछे न हटना

खुशियों का हार मिलेगा।।

समय से पहले, भाग्य से ज्यादा-2

कभी किसी को मिला नहीं।।समय।।

सब्र से जीना सीखो, आसान होगा

जीने का मकसद मिलेगा।

चिन्तायें करना छोड़ो, कुछ न मिलेगा

खाली ये हाथ मलेगा।।

समय से पहले, भाग्य से ज्यादा

कभी किसी को मिला नहीं।।समय।।

उमरिया पूरी होने को आयी

तर्ज - अठरा बरस की तू

उमरिया पूरी, होने को आयी रे, क्यों भटके है SSSS।
भजन कुछ कर ले, कुछ कर ले, भजन कुछ कर ले।।

सर के रंग ले तू अपने, चाहे भी कितने बाल हैं–2
मुँह में लगालेSS, चाहे (आर्टीफिशियल दाँत है)–2
लेकिन दम निकलेगा जब पता न चलेगा SSSS
जतन कुछ कर ले, कुछ कर ले, भजन कुछ कर ले।।

होSSS कर ले कुछ तैयारी, चलने की तैयारी-2
कर ले कुछ तैयारी निकल न जायें घड़ियाँ-2
सोचता क्या पगले कटेंगी कर्म कड़ियाँ-2
मत बाँधें पाप गठरिया-2, रहा न रहेगा SSSS
ये तन कुछ कर ले, कुछ कर ले, भजन कुछ कर ले।।

क्रोध की अग्नि बुझाते चलो

तर्ज - जोते से जोत जलाते चलो

क्रोध की अग्नि बुझाते चलो-2, नीर क्षमा का बरसाते चलो-2,

भूल से आये जो क्रोध कभी-2, याद प्रभु की जगाते चलो।

नीर छमा का बरसाते चलो।।

आग बबूला जो कोई होवे, उसका न कोई सहारा।

जो क्रोधी है, जो बैरी है, वो न किसी को प्यारा।।

बैर दिलो SSSS, बैर दिलों से मिटाते चलो।

नीर क्षमा का बरसाते चलो।।

ज्यादा क्रोध करे जो कोई, जाये वो नरको में।

अपने हाथों अपना जीवन, लुटवा दे दर्दों में।।

प्रेम दिलो SSSS, प्रेम दिलों में जगाते चलो।

नीर क्षमा का बरसाते चलो।।

दुःख से न घबराये

तर्ज - कोई जब राह न पाये

दुःख से न घबरायें प्रभु गुण गायें

मिले खुशियों की राहें, (कहते गुरु-शास्त्र अपार)-2

थोड़ी सी ये जिन्दगानी, त्याग दो कटुक वाणी।

बुरा मत सोचो, बुरा मत बोलो-2

सबको क्षमा कर पायें, न क्रोध में आयें।

मिले खुशियों की राहें ऽऽ

कहते गुरु शास्त्र अपार-2

आपस में रहें मिल के, भेद-भाव नहीं करके

जिओ-और जीने दो, सुख सबके–2

सबको गले से लगायें, प्रभु गुण गायें।

मिले खुशियों की राहें ऽऽ

कहते गुरु शास्त्र अपार-2

दुःखों से भरी है ये जीवन की राहें

तर्ज - आँसू भरी है

दुःखों से भरी हैं, ये जीवन की राहें
प्रभु तेरे दर पे तेरा भक्त गाये।

नहीं हमसा कोई अधम और पापी-2
सत् कर्म हमने, किये ना कदापि।
लाखों को तारा, ये शास्त्र बतायें।।
प्रभु तेरे दर पे तेरा भक्त गाये।
दुःख से भरी है।।

नहीं अपना कोई, यहाँ संगी-साथी-2
मतलब की दुनिया, है स्वार्थ के साथी।
न कोई सहारा, तुम्हारे सिवाय।।
प्रभु तेरे दर पे, तेरा भक्त गाये।
दुःखों से भरी हैं ये जीवन की राहें।।
प्रभु तेरे दर पे तेरा भक्त गाये।
दुःख से भरी है।।

सुख-दुःख दोनों जीवन श्रृंगार हैं

तर्ज - ये आँसू मेरे दिल की जुबान हैं

ये सुख-दुःख दोनों जीवन श्रृंगार हैं।-2
तू दुःख से क्यों घबराता है, दुख के बाद ही, सुख आता है।।
ये सुख...........

सुख की चाहना रखने वाले, ही जीवन में घबराते हैं।
समता भाव रखे जो कोई, कष्टों से वो बच जाते हैं।।
ये सुख दुख दोनों जीवन श्रृंगार हैं।
तू दुःख से क्यों घबराता है, दुख के बाद ही सुख आता है।।
ये सुख...........

जीवन पथ पर चलने वाले, दुःख आये तो मुंह न मोड़ो।
दर्दों-गम से मत घबराओ, सच्चाई से नाता जोड़ो।।
ये अपने ही किये कर्मों की मार है।
तू दुःख से क्यों घबराता है, दुख के बाद ही सुख आता है।।
ये सुख...........

सुख आया है तो जायेगा, दुःख आया है तो जायेगा।
सुख जायेगा तो दुःख देकर, दुःख जायेगा तो सुख देकर।।
ये मानो जैसे धूप और छांव हैं।
तू दुःख से क्यों घबराता है, दुख के बाद ही सुख आता है।।
ये सुख...........

माटी में मिल जाना

तर्ज - साथी हाथ बढ़ाना

माटी में मिल जाना, माटी में मिल जाना,
अपनी-अपनी बारी सबको, माटी में मिल जाना
माटी में मिल जाना, माटी में मिल जाना
माटी में मिल जाना माटी में-2

विषयों की चाह में तूने, जीवन यूँ ही गंवाया।
रिश्ते-नातों में बँधकर के, है संसार बढ़ाया।।
इनकी खातिर तूने कितने, पाप ही पाप कमाये।
अन्त समय में तेरे अपने, काम नहीं कोई आये।।
माटी में मिल जाना, माटी में मिल जाना........

कर्म किये जा फल की इच्छा, ना रखना ना बढ़ाना।
राह में आये जो दीन दुःखी, तो उसको गले लगाना।।
सत्य धर्म की राह पे चलकर, जीवन सफल बनाना।
पापों के दल-दल में फँसकर, खुद को नहीं रुलाना।।
माटी में मिल जाना, माटी में मिल जाना........

आशाएं पूरी नहीं होती, आशाओं को घटाना।
मुट्ठी बांध के आने वाले, हाथ पसारे जाना।।
किस की खातिर ऊँचे-ऊँचे, महल पे महल बनाये।
किस की खातिर धन-दौलत के ऊँचे ढेर लगाये।।
माटी में मिल जाना, माटी में मिल जाना........

प्रभु नाम की माला जप ले

तर्ज - जरा सामने तो आओ छलिये

प्रभु नाम की माला जप ले, हो जायेगा भव से पार है।
इन सांसो का क्या है भरोसा, आज है कल नहीं ये सांस है।।

न कुछ लेकर आया जग में, न कुछ लेकर जाना है-2
मुट्ठी बाँध के आने वाले, हाथ पसारे जाना है।।
इस सत्य को जल्दी पहचान ले, हो जायेगा जीवन सार है।
इन सांसो का क्या है भरोसा, आज है कल नहीं ये सांस है।।
प्रभु नाम की माला जप ले, हो जायेगा भव से पार है।
इन सांसो का क्या है भरोसा, आज है कल नहीं ये सांस है।।

मात-पिता व संगी-साथी, जिनके भी तू साथ रहे-2
अन्त समय जब निकलेगा दम, न कोई तेरे साथ चले।।
ये आखिरी सच्ची बात है, कर जल्दी इसे स्वीकार है।
इन सांसो का क्या है भरोसा, आज है कल नहीं ये सांस है।।
प्रभु नाम की माला जप ले, हो जायेगा भव से पार है।
इन सांसों का क्या है भरोसा, आज है कल नहीं ये सांस है।।

प्रभु नाम की माला जप ले

चल चेतन प्यारे

तर्ज - ओ जाने वाले

चल चेतन प्यारे, प्रभु शरण में तेरा ठिकाना-2
यहाँ रहना नहीं, एक न एक दिन, सबको जाना।
चल चेतन प्यारे, प्रभु शरण में तेरा ठिकाना।।

कर्मों की पड़ी मार बड़ी, है हमें रुलाये-2।
कभी ऊँट बने, भैंसा बने, और बकरा, गाय।।
दुर्लभ से भी दुर्लभ है, मनुष्य तन का पाना।
चल चेतन प्यारे, प्रभु शरण में तेरा ठिकाना।।

आशाएँ बड़ी और बड़ी, पूरी हो न पायें-2।
घट पायें नहीं और बढ़े, बढ़ती-बढ़ती जायें।।
है जाल ये कैसा तू कहीं, फँस न जाना।
चल चेतन प्यारे प्रभु शरण में तेरा ठिकाना।।

तेरे द्वारे जिसने आ कर

तर्ज - ऐ दिल मुझे बता दे

तेरे द्वारे जिसने आ कर, सर को झुका लिया है
है सोया भाग्य उसने, अपना जगा लिया है।।तेरे द्वारे।।

मजधार में है नैया, न कोई है किनारा।
विश्वास तेरा करके, जब आप को पुकारा।।
भव पार नाव उसकी, आनन्द आ गया है।
है सोया भाग्य उसने अपना जगा लिया है।।तेरे द्वारे।।

जीने की हो न आशा, अविश्वास और निराशा।
रोगों में रात बीते, तकलीफ सहते-सहते।।
श्रद्धान करके तेरा, सुख-शांति पा गया है।
जीने का आज उसको आनन्द आ गया है।।तेरे द्वारे।।

पाप ही पाप कमाये रे

तर्ज - तेरे मन में राम तन में राम

तेरे मन में पाप, तन में पाप, पाप ही पाप कमाये रे।
पापों में ही, तेरा सारा, जीवन बीता जाये रे।।
छोड़ पाप, छोड़ पाप, छोड़ पाप-पाप-पाप-2

काम तो करता सब हानि के, पर अच्छा फल चाहे।
भला किसी का कर न सका, पर बुरा न अपना चाहे।।
अब क्यों रोवे अन्त समय, जब तेरा बिगड़ा जाये रे।
छोड़ पाप......................
तेरे मन में पाप, तन में पाप, पाप ही पाप कमाये रे।
पापों में ही, तेरा सारा, जीवन बीता जाये रे।।
छोड़ पाप, छोड़ पाप, छोड़ पाप-पाप-पाप-2

नकली चेहरा सामने लाता, असली चेहरा छिपाये।
दिखता कुछ है, कहता कुछ है, करता कुछ भी जाये।।
जैसी करनी-वैसी भरनी, अब काहे पछताये रे।
छोड़ पाप......................
तेरे मन में पाप, तन में पाप, पाप ही पाप कमाये रे।
पापों में ही, तेरा सारा, जीवन बीता जाये रे।।
छोड़ पाप, छोड़ पाप, छोड़ पाप-पाप-पाप-2

प्रभु मिलेंगे

तर्ज - घूँघट के पट खोल रे

ज्ञान के पट खोल रे, तुझे प्रभु मिलेंगे।
मोह नींद को तोड़ रे, तुझे प्रभु मिलेंगे।।
ज्ञान के पट खोल रे।

हित मित वचन मधुर हो वाणी।
कटुक वचन मत बोल रे, तुझे प्रभु मिलेंगे।।
ज्ञान के पट खोल रे, तुझे प्रभु मिलेंगे।
ज्ञान के पट खोल रे।।

पल-पल बीते जाये उमरिया।
धन-दौलत मत तोल रे, तुझे प्रभु मिलेंगे।।
ज्ञान के पट खोल रे, तुझे प्रभु मिलेंगे।
ज्ञान के पट खोल रे।।

क्रोध-मान को दूर हटा ले।
पापों में मत रोल रे, तुझे प्रभु मिलेंगे।।
ज्ञान के पट खोल रे, तुझे प्रभु मिलेंगे।
ज्ञान के पट खोल रे।।

सहना नहीं धर्म निभाना है

तर्ज - रहना नहीं देश विराना है

सहना नहीं धर्म निभाना है-2, धर्म से सब सुख पाकर प्राणी-2
भव सागर तर जाना है-2, सहना नहीं धर्म निभाना है।

धर्म अहिंसा-धर्म दया है-2, क्रोध को अपने गलाना है-2
सहना नहीं धर्म निभाना है।
धर्म से सब सुख पाकर प्राणी, भवसागर तर जाना है।।
सहना नहीं ....

धर्म है सत्य-धर्म अचौर्य-2, माया से भय खाना है-2
सहना नहीं धर्म निभाना है।
धर्म से सब सुख पाकर प्राणी, भवसागर तर जाना है।
सहना नहीं ....

धर्म अकिंचन, धर्म ब्रह्मचर्य-3, संयम पथ अपनाना है-2
सहना नहीं धर्म निभाना है।
धर्म से सब सुख पाकर प्राणी, भवसागर तर जाना है।
सहना नहीं ....

बीती जाये रे उमरिया

तर्ज - कैसे सपरी हो रामा कैसे सपरी (गीत)

बीती जाये रे उमरिया, मत कर मन मर्जी-2

मतकर मन मर्जी, मतकर मन मर्जी।

बीती..................

मात-पिता की सेवा न करनी, धर्म का मूल न जाना।

पूजा करना मंदिर जाना, झूठा-फर्जी।।

बीती जाये रे ....

प्यासे को पानी न पिलाया, भूखे को न खिलाया।

बड़े-बड़े भण्डारे करके, पैसा खूब बहाया।।

बीती जाये रे ....

पुण्य उदय से मिला हे नरतन, सेवा करले भाया।

सेवा का फल मिलता मीठा, प्रभु ने है बतलाया।।

बीती जाये रे ....

कर्मों से सदा पिटता ही रहा

तर्ज - घुँघरु की तरहा

कर्मों से सदा, पिटता ही रहा हूँ मैंऽऽऽ

कभी नरकों में, कभी स्वर्गों में, अटका ही रहा हूँ मैं ऽऽ

कर्मों से सदा, पिटता ही रहा हूँ मैंऽऽ

मैं करता रहा खुद मनमानी, मैंनें बात प्रभु की न मानी।

कभी इस घर में, कभी उस घर में, मरता ही रहा हूँ मैंऽऽ

कर्मों से सदा......

कभी मंदिर गया, कभी मस्जिद में, मैं समझा नहीं, प्रभु है मन में।

कभी इस दर पे, कभी उस दर पे, गिरता ही रहा हूँ मैंऽऽ

कर्मों से सदा......

अपनों में रहा, कभी सपनों में, मैं बंधता रहा, सम्बन्धों में।

कभी पुत्र बना, कभी बाप बना, रोता ही रहा हूँ मैंऽऽ

कर्मों से सदा......

शक्ति को पहचान ले अपनी

तर्ज - चाँदी जैसा रंग

बात-बात में नहीं बिगाड़ो, अपने शुभ परिणाम।
शक्ति को पहचान ले अपनी, तू है मेरे समान।।

- **तेरा प्रभु जी तुझमें विराजे, तू बाहर क्यों खोजे-2**
  एक बार निज में आ जाओ, मुक्ति के पट खोले
  राग-द्वेष से रहित अनन्ता भगवन के सुख भोगे
  गुणी जनों को देख हृदय में ऽऽऽ
  गुणी जनों को देख हृदय में, प्रेम का हो संचार
  शक्ति...

- **मैं हूँ राजा, मैं हूँ राणा, मैं ही चक्रवर्ति हूँ-2**
  मैं हूँ गोरा, मैं हूँ काला, मैं ही सुखी-दुखी हूँ
  मैं हूँ ज्ञानी, मैं हूँ ध्यानी, मैं ही कर्म यति हूँ
  इन बातों में पड़कर तेरा ऽऽऽ
  इन बातों में पड़कर तेरा, कैसे हो कल्याण
  शक्ति...

- **क्रोध आदि कषायों को छोड़ो, इनसे नाता तोडों-2**
  अपने प्रभु को दिल में बसाकर, उनसे नाता जोडों
  वीतरागी-सर्वज्ञ-हितंकर, प्रभु की शक्ति तोलो
  ज्ञानानन्द मयी तू संजय ऽऽऽ
  ज्ञानानन्द मयी तू '*संजय*', सुन ये सच्ची बात
  शक्ति...

कर्मों की मार कैसे टलेगी

तर्ज - अब ना बनी तो

कर्मों की मार कैसे टलेगी-2
कर्म तू बार-बार वही करता।।

- **हिंसा-झूठ से तेरा नाता-2**
  अपने प्रभु के पास न जाता-2
  नैया तेरी कैसे पार लगेगी-2
  कर्म तू बार-बार वही करता।

- **सुख की चाह में देखा न भाला-2**
  मन में जो आया वो कर ड़ाला-2
  पुण्य की गगरी कैसे भरेगी-2
  कर्म तू बार-बार वही करता।

- **अपना भला अगर '*संजय*' चाहो-2**
  सत् कर्म कर और प्रभु गुण गाओ-2
  मुक्ति रमा तुझे कैसे मिलेगी-2
  कर्म तू बार-बार वही करता।

पंच कल्याणक की आरती

1. तर्ज - ताकते रहते तुझको सांझ सवेरे

आरती उतारो श्रीमत जिनवर की, (धर्म जिनेश्वर तीर्थंकर की)–2
बोलो आदिनाथ की जय, महावीर प्रभु की जय–2।।बोलो।।

पहली आरती प्रभु उर आये, माता को शुभ स्वप्न दिखाये।
तीर्थंकर प्रभु गर्भ में आये, (रत्नों की वर्षा हो जाये–2)।।बोलो।।

दूसरी आरती जन्मोत्सव की, इन्द्रों से पूजित जिनवर की।
पांडुक शिला पर न्वहन करें इन्द्र, (मंगलमय मंगल हो निशदिन–2)।।बोलो।।

तीसरी आरती वैरागी की, भेष दिगम्बर धारा प्रभु जी।
राजपाट तज वन को जायें, (तप कर आतम ध्यान लगाये–2)।।बोलो।।

चौथी आरती केवल ज्ञानी, चार घातिया कर्म नशानी।
समवशरण में प्रभु की वाणी, (उपकारी सबको हितकारी–2)।।बोलो।।

पाँचवीं आरती सिद्ध भगवन्ता, कर्म रहित सर्व गुण अनन्ता।
सुर-नर आवें आरती गावें, (अपना जीवन सफल बनावें–2)।।बोलो।।

पंचकल्याणक आरती, पढ़े-सुने जो कोय
'संजय' फल जाने प्रभु, बाधा रहे न कोय

संध्या ढले दीप जले

तर्ज - शाम ढले खिड़की तले

संध्या ढले दीप जले (आरती प्रभु की बोलो)-2
हाथों में ले दीप सजे (आरती प्रभु की बोलो)-2
संध्या ढले............

जगमग दीपक हाथों में लेकर (आरती प्रभु की उतारो)-2
दर्शन प्रभु का है अति प्यारा (आकर के भाग जगा लो)-2
हाथों में ले दीप सजे (आरती प्रभु की बोलो)-2
संध्या ढले ....

मंगल दीपक हाथों मे लेकर (आरती प्रभु की उतारो)-2
शांत छवि बड़ी प्यारी प्यारी (मूरत प्रभु की निहारो)-2
हाथों में ले दीप सजे (आरती प्रभु की बोलो)-2
संध्या ढले ....

सोने के दीपक हाथों में लेकर (आरती प्रभु की उतारो)-2
आरती प्रभु की इस विधि कीजिए (हृदय में गुण प्रगटा लो)-2
हाथों में ले दीप सजे (आरती प्रभु की बोलो)-2
संध्या ढले ....

माँ की याद

तर्ज - मैं तुलसी तेरे आँगन की

तुम हो माँ, मेरे जन्मों की–2 कोई नहीं माँ
कोई नहीं माँ, कोई नहीं माँ, तेरे जैसा भी।
तुम हो माँ..................

काहे को तू, हमें छोड़ गई माँ, क्या हमसे कोई, गलती हुई माँ–2
तुम मूरत हो ममता की।
तुम हो माँ..................

चिट्ठी नहीं, संदेश नहीं कोई, जाने कौन से देश गई माई–2
अखियाँ प्यासी दर्शन की।
तुम हो माँ..................

सत्यम-शिवम-सुन्दरं हो माता, तेरे आगे, कुछ नहीं भाता–2
यादें आती पल-पल की।
तुम हो माँ..................

जान हमारी, तुम हो माता, पुचकारा चाहे, कुछ नहीं आता–2
वाणी तेरी दया की।
तुम हो माँ..................

मजबूर माँ का दर्द

तर्ज - स्वनिर्मित

माँ की बात सुने न कोई, माँ का दर्द जाने न कोई।
मजबूरी में, हालातों में, माँ का दुख पहचाने न कोई।।

- **ये कैसा पागलपन है, बेटी को कोई न चाहे**
  गर्भ में बेटी मरवा देना, माँ की ममता जाने न कोई
  माँ की बात...

- **वह अपना अधिकार समझता, करता हर मन मानी है**
  डाक्टर को लालच देकर के, कत्ल कराये बचाये न कोई
  माँ की बात...

- **बेटे को माने घर का चिराग, बेटी को पराई है**
  अपने खून से खेले होली, हाथ रंगाये रोके न कोई
  माँ की बात...

सम्यक दर्शन

तर्ज - मन रे तू काहे ना धीर धरे

तन से, तू काहे को व्यसन करे,
ध्यान लगा ले, मन वश पा ले,
आत्मा की शुद्धि कर ले SSS।

शरीर अलग ये आत्मा अलग ये,
जो व्यक्ति ये माने
पंचइन्द्रियों को वश में कर ले,
शुद्धातम को पाले।
'सम्यक दर्शन' कहे।।

तन से, तू काहे को व्यसन करे,
ध्यान लगा ले, मन वश पा ले,
आत्मा की शुद्धि कर ले SSS।

सम्यक ज्ञान

तर्ज - मन रे तू काहे ना धीर धरे

तन से, तू काहे को व्यसन करे,
ध्यान लगा ले, मन वश पा ले,
आत्मा की शुद्धि कर ले ऽऽऽ।

वस्तु स्वरूप जैसा जिसका,
उसको वैसा जाने
कथनी-करनी एक सी होवे,
फर्क न उसमें आवे।
'सम्यक ज्ञान' कहे।।

तन से, तू काहे को व्यसन करे,
ध्यान लगा ले, मन वश पा ले,
आत्मा की शुद्धि कर ले ऽऽऽ।

सम्यक चारित्र

तर्ज - मन रे तू काहे ना धीर धरे

तन से, तू काहे को व्यसन करे,
ध्यान लगा ले, मन वश पा ले,
आत्मा की शुद्धि कर ले SSS।

कामनाओं का शमन करे जो,
ब्रह्मचर्य व्रत पाले
माता-बहन या फिर बेटी,
पर स्त्री को माने।
'सम्यक चारित्र' कहे।। तन से.........

''ये सब सारी भक्तियाँ, पढ़े-सुने जो कोई
सेवक फल जाने प्रभु, स्वर्ग-मुक्ति सुख होई''

इतिश्री
महावीर नाम भक्ति
भजन गीत माला-जिन गुण भक्ति माला

जय जिनेंद्र

रचयिता का परिचय

नाम - संजय कुमार जैन, दयाँचल असौड़ा हाऊस, मेरठ

पिता - श्री रमेश चन्द जैन, रिटायर्ड सीनियर ऑडिटर सैन्ट्रल डिफैन्स ऑफिस, दयाँचल असौड़ा हाऊस, मेरठ

माता - स्व० श्रीमति दया जैन सुपुत्री स्व0 श्री घासीराम जैन, ज्वालापुर

जन्म - 2 दिसम्बर, 1962, मवाना, जि० मेरठ

शिक्षा - स्नातक, मेरठ कॉलेज, मेरठ

व्यवसाय - नवरंग राखी, मेरठ

पत्नि - श्रीमति प्रीति जैन पुत्री स्व० श्री परमेष्ठी दास जैन, पारस नाथ स्ट्रीट, आबू पुरा, मुज्जफरनगर (प्रकाश ज० स्टोर वाले)

पुत्री - सौम्या जैन - श्री रचित जैन (दामाद) पुत्र श्री राकेश जैन गीता कॉलोनी, मेरठ

पुत्र - हर्षित जैन

परिवार

भाई-भाभी - अजय जैन-नीलम जैन, मेरठ

- मनोज जैन-रीमा जैन, मेरठ

- लकी जैन-नीलिमा जैन, मेरठ

बहन - नीरु जैन, W/o श्री अश्विनी कुमार जैन, कविनगर, गाजियाबाद

भतीजे - प्रियंक जैन, मयंक जैन, सक्षम जैन, आर्जव जैन

भतीजी - सम्पदा जैन, संस्कृति जैन

चाचाओं का परिचय

चाचा - श्री नरेश चन्द जैन मवाना, स्व० श्री सतीश चन्द्र जैन दिल्ली, श्री सुभाष चन्द जैन इन्द्रापुरम गाजियाबाद, श्री विनय कुमार जैन एवं चाची श्रीमति सुनीता जैन मवाना जिला मेरठ

भाई-भाभी - स्व० पारुल जैन-प्रीति जैन, मणि जैन-यज्ञवी जैन, सौरभ जैन-विशाखा जैन, शोभित जैन-स्वस्ति जैन

बहन - परीना जैन W/o स्व० श्री सुधीर जैन (टीचर कवि नगर जैन मंदिर गाजियाबाद), डिम्पल जैन W/o श्री अशोक जैन मुम्बई,

पायल जैन W/o श्री रवि जैन शामली, स्वीटि जैन W/o श्री राहुल जैन दिल्ली, सुरभि जैन W/o श्री अरविन्द जैन खतौली, स्वाति जैन W/o श्री वैभव जैन शामली।

बुआओं का परिचय

बुआ - स्व० श्रीमति माला जैन W/o स्व० श्री कामता प्रसाद जैन सरधना। स्व० श्रीमति शांति देवी जैन W/o स्व० श्री विलास चन्द जैन, जैन मौहल्ला शामली। श्रीमति मंजू जैन W/o स्व० श्री राकेश जैन मंगलौर। श्रीमति अंजू जैन W/o स्व० अनिल कुमार जैन, मयूर विहार दिल्ली।

*हमारा खानदान ''कुन्दन परिवार'' मूल निवासी जैन मण्डी मवाना के नाम से जाना जाता है। श्री कुन्दन लाल जी मेरे पड़बाबा जी थे जिन्होंने अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में ग्रहस्थ जीवन त्याग कर उदासीन ब्रह्मचर्य जीवन को जीते हुए अपने प्राणों को त्यागा। आपके ''सात'' पुत्र व एक पुत्री थी जिनमें तीसरे नम्बर पर मेरे बाबा जी स्व० **श्री किशन लाल जैन** ''भगत जी'' के नाम से जाने जाते थे। इनके लघु भ्राता पं० शील चंद जैन ''शास्त्री'' सम्पूर्ण भारत वर्ष में अपने समय के उच्च कोटि के प्रसिद्ध विद्वान रहे। आप मवाना तहसील के चेयरमैन भी रहें। चेयरमैन पद पर रहते हुए आपने अपने अथक प्रयास से उत्तर प्रदेश का प्रथम बुचडखाना बंद करवाया था।*

सभी बाबाओं ने सत्य-संयम-शील का जीवन यापन किया। वही संस्कार पीढ़ी दर पीढ़ी आज फल फूल रहे है।

बाबाओं के नाम

1. स्व० श्री बनारसी दास जैन
2. स्व० श्री बूलचन्द जैन
3. स्व० श्री किशन लाल जैन
4. स्व० श्री शील चन्द्र जैन शास्त्री
5. स्व० श्री लखमी चन्द जैन
6. स्व० श्री जुगमन्दर दास जैन
7. स्व० श्री मोती राम जैन

श्री महावीर नाम भक्ति, भजन गीत माला...

स्व० श्री किशन लाल जैन
दादा जी

श्री महावीर नाम भक्ति
भजन गीत माला ...

स्व० श्रीमती जैनमति जैन
दादी जी

दयाँचल परिवार

हमारा मवाना परिवार

सौभाग्यशाली भक्ति के क्षण
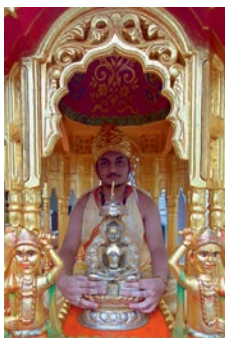
कोविड के दौरान लॉकडाउन में परिवार ने घर में मनाया श्री महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव

गुरू चरणों में नमन

सौभाग्यशाली भक्ति के क्षण
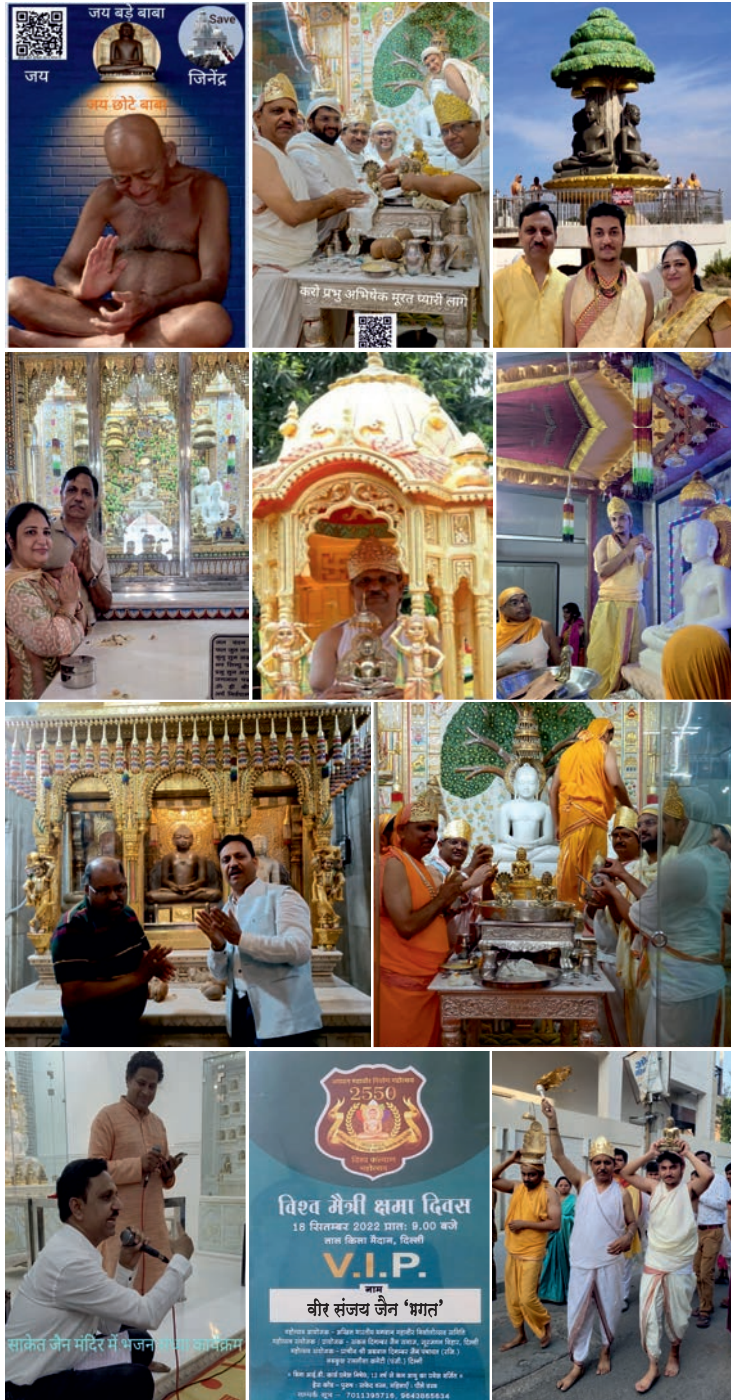
श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर असौडा हाऊस मेरठ के पंचकल्याणक में मूलनायक भगवान की प्रतिमा जी को स्थापित करने का महा सौभाग्य परिवार को प्राप्त हुआ।

श्री मंदिर जी के भूमि पूजन में भी सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पंचकल्याणक के मंच पर गुरूवर के सानिध्य में मेरी भजन सीढ़ी के विमोचन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

श्री महावीर जिनालय कचहरी रोड के कार्यक्रम में पुरूस्कार व सर्टिफिकेट प्राप्त करते हुए।

सौभाग्यशाली भक्ति के क्षण

सौभाग्यशाली भक्ति के क्षण

सौभाग्यशाली भक्ति के क्षण

जय जिनेन्द्र के माध्यम से धर्मानुरागी बन्धुओं से जुड़ने की कला

ख्वाहिशों ने ही भटकाए है
जिंदगी के रास्ते
वरना रूह तो उतरी थी
जमी पर मंजिल का पता लेकर
जय जिनेंद्र
आशीर्वाद मिले बड़ो से
स्नेह मिले अपनों से
खुशियाँ मिले जग से
यही प्रार्थना है प्रभु से
जय जिनेन्द्र
जय जिनेंद्र
खुशी एक ऐसा एहसास हैं,
जिसकी हर किसी को तलाश हैं
गम एक ऐसा अनुभव हैं,
जो सबके पास हैं
मगर जिंदगी तो वही जीता हैं,
जिसको खुद पर विश्वास हैं।
जय
जिनेंद्र
दिमाग कचरे का डब्बा नहीं, जिसमें आप
क्रोध, लोभ, मोह, अभियान और
जलन रखें ॥
दिमाग एक खजाना है जिसमें आप
प्यार, सम्मान, ज्ञान, विज्ञान, मानवता,
दया, जैसी बहुमूल्य चीजें रखी जाती है॥
हम भी वही हैं, संबंध भी वही हैं
रास्ते भी वही हैं
बदलते हैं तो सिर्फ
हमारे मन के परिणाम
जय जिनेंद्र जी
फूलों की तरह महकते रहो; सूरज
की तरह चमकते रहो; किस्मत से
मिली है ये ज़िंदगी; खुद भी हंसो
और औरों को भी हंसाते रहो।
जय जिनेंद्र
जय जिनेंद्र
जलेबी सिर्फ मीठी ही नहीं,
एक महत्वपूर्ण संदेश
भी देती है...
खुद कितने भी उलझे रहो,
पर दूसरो को हमेशा
मिठास दो...
जय जिनेन्द्र
प्रभु तेरे दर पर निकले प्राण
तुम पर नजर टिकी हो
जब तन से निकले प्राण
प्रभु तेरे दर पर निकले प्राण
निम्न सुंदर पंक्तियां सुनने के लिए अपने मोबाइल में
जय
जिनेंद्र
खुशियाँ तो चंदन की तरह होती है
किसी और के माथे पर लगाओ तो
अपनी ऊँगलिया भी
महक उठती हैं
मस्त रहो, खुश रहो, हंसते रहो
जय जिनेंद्र
आनंद एक आभास है,
जिसे हर कोई ढूंढ रहा है!
दुःख एक अनुभव है,
जो आज हर एक के पास है!
फिर भी जिंदगी में कामयाब वही है,
जिसको खुद पर विश्वास है।
जय जिनेंद्र
समय और समझ
दोनों एक साथ बस किस्मत वालों को ही
मिलते है, क्योंकि अक्सर समय पर समझ
नहीं आती और समझ आने पर समय
निकल जाता है।
भक्ति, मुक्ति के
लिये कारण है
और भुक्ति संसार
के लिये।
जय जिनेंद्र
Save

रचयिता की कलम से

जय जिनेन्द्र देव की

बचपन से ही भजन गाने का बड़ा शौक था। श्री द्यानतराय जी, श्री दौलत राम जी आदि-आदि कवियों के भजन गाते-गाते कब अपनी रचनायें बनने लगी पता ही नही चला। प्रभु जी की असीम कृपा, गुरुजनों का आशीर्वाद और आप सभी का प्यार मिला तो ऐसा सम्भव हो सका। मेरी कोशिश रही है कि मंदिर व धार्मिक आयोजनों में नये-नये भजन व गीतों को स्वयं लिख कर गा सकूँ। आप सभी ने मेरे भजनों व गीतों को सराहया तब जाकर ऐसा सम्भव हुआ। आप सराहते गये मैं लिखता चला गया और आज भी यह लेखन का कार्य निरंतर चल रहा है।

''महावीर नाम भक्ति'' भजन गीत माला...... दो भागों में छपकर एक पुस्तक बनी है। पहले भाग में 108 भजन, दूसरे भाग में 108 भजन व रत्नत्रय के 3 भजन कुल मिलाकर 219 भजन हैं। जाप की माला में भी 108 दाने होने से इस पुस्तक के नाम को माला शब्द से सजाया गया है। प्रत्येक अवसर पर गाये जाने वाले भजन व गीत इस पुस्तक में प्रकाशित किये गये हैं, जैसे- णमोकार भक्ति, महावीर नाम भक्ति, पारस नाम भक्ति, तीर्थंकर नाम भक्ति, अभिषेक भक्ति, देव-शास्त्र-गुरु भक्ति आदि-आदि 30 प्रकार की भक्तियाँ विषय सारणी में दिखायी गयी है।

मेरा प्रथम गीत ''संडे हो या मंडे कोई कभी न खाये अण्डे'' आज भी आपको किसी भी टी०वी० चैनल पर सुनने को मिल सकता है। लगभग 12 वर्ष पूर्व इस गीत का पारस टी०वी० ने अपने टी०वी० चैनल पर काफी लम्बे समय तक प्रसारण किया। मैं पारस टी०वी० का आभारी हूँ।

इस गीत को जब मैंने आर्चाय श्री ज्ञान भूषण जी महाराज को सुनाया तो ऐसा आर्शीवाद मिला जिसे मैं जिन्दगी भर नहीं भूला सकता। आचार्य श्री ने कहा कि मैं चाहता हूँ कि इस भजन पर राष्ट्रपति जी के हस्ताक्षर मिलें।

''सम्मेदाचल'' न्यूज़ पेपर में मेरे भजन कई वर्षों तक निरन्तर छपते रहे हैं। इसके लिए मैं स्व० नवनीत जैन सम्पादक सम्मेदाचल का भी आभारी हूँ। आप जहाँ भी रहें जैन धर्म की प्रभावना करते हुए अपना मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करें ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

संडे हो या मंडे कोई कभी न खाये अण्डे यह गीत इतना प्रभावशाली है कि मैंने जहाँ कहीं भी इस गीत को सुनाया, सुनकर अण्डे खाने वाला व्यक्ति सोचने को मजबूर हो गया कि क्या करूँ क्या न करूँ। ऐसी अनेक घटनाएँ हैं। मैं बता नही सकता।

आशा करता हूँ कि मेरी जीवन भर की मेहनत सफल होगी। आप पुस्तक का पूरा-पूरा लाभ लेंगे आपको यह पुस्तक कैसी लगी comment कर you tube channel पर बताये अथवा नीचे दिये गये फोन पर भी मेरे से बात कर सकते हैं।

लेखन में यदि किसी प्रकार की त्रुटि हो तो ज्ञानी जन अल्पज्ञ समझ मुझ सेवक को क्षमा प्रदान करें।

आप सभी से हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि मेरे You Tube Channel "Veer Sanjay Jain Bhagat" को अवश्य subscribe करें अभी के अभी और Bell Icone को भी दबायें, इससे मेरे द्वारा चैनल पर ड़ाली गई सभी Video का Link आपको आसानी से मिल सकेगा।

इस पुस्तक के काफी सारे भजन You Tube Channel "Veer Sanjay Jain Bhagat" पर सुने जा सकते है।

आपका अपना

धन्यवाद वीर संजय जैन 'भगत'

मेरठ

ई-मेल : sj4430416@gmail.com

मो० नं० 9997513543

प्रूफ़ रिडिंग—जिस प्रकार पूजा की सामग्री तीन बार पानी से धोने पर शुद्ध हो जाती है और फिर प्रभु के चरणों में चढ़ाई जाती है ठीक उसी प्रकार पुस्तक छपने से पहले तीन बार प्रूफ़ रिडिंग करायी गयी है ताकि कोई त्रुटि न रहे और प्रभु भक्ति के योग्य बन सके

प्रूफ़ रिडिंग में सहयोग

१. श्री मति अंजू जैन (बुआ जी) मयूर विहार, दिल्ली

२. श्रीमति डॉ० स्वाति जैन 'स्वस्ति' (चाचा जी की पुत्र वधु) जैन मण्डी, मवाना

३. गुरू जनो द्वारा

मैं सभी का हृदय से बहुत-बहुत आभारी हूँ
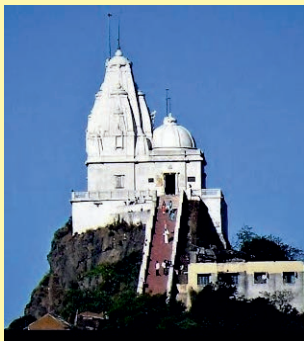
सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी की महिमा

सम्मेद शिखर है पावन धरा, जहाँ से प्रभु मोक्ष गये।
जाते रहे है, जाते रहेंगे (जब तक संसार रहे)–2।।

पर्वत की पावन धरती से, कितनो ने मोक्ष को पाया।
हाँ शाश्वत है ये धरा तो, जहाँ पारस प्रभु जी आया।।
चंदा प्रभु ने, पद्म प्रभु ने, सबने तप-ध्यान किये।
करते रहे हैं, करते रहेंगे (जब तक संसार रहे)–2।।

चन्दन यहाँ की माटी, कण-कण में प्रभु बसेरा।
हमें प्राणों से भी प्यारा, सम्मेद शिखर का सवेरा।।
दर्शन को जब भक्तों की टोली, पर्वत की ओर बढ़े।
बढ़ते रहे हैं, बढ़ते रहेंगे (जब तक संसार रहे)–2।।

पावन यहाँ की भूमि, इसलिये तो सबको लुभाया।
यहाँ जिसने ध्यान लगाया, परमात्म परम पद पाया।।
यहाँ के कण-कण में, यहाँ के घट-घट में, हैं ज्ञान के दीप जले।
जलते रहे हैं, जलते रहेंगे (जब तक संसार रहे)–2।।

यहाँ से तप कर कोई भी ज्ञानी, मुक्ति को पा सकता है।
संसार में रहकर प्राणी, संसार को तज सकता है।।
आचार्यों ने, सर्व साधुओं ने, स्व-पर कल्याण किये।
करते रहे हैं, करते रहेंगें (जब तक संसार रहे)–2।।

श्री शांतिनाथ भगवान

प्रार्थना

शान्ति विधाता, विश्व विधाता, करुणा के भण्ड़ारी
जय हो जय हो तुम्हारी-2
समता सूरत, आनन्द पूरत, हम हैं तेरे पुजारी।
जय हो-जय हो तुम्हारी-2।।शान्ति।।

- ऊँचा पर्वत कठिन ड़गरिया, फिर भी भक्त पुकारे-2
  दर्शन करने दर तेरे आये, धन्य हुए नर-नारी।
  जय हो-जय हो तुम्हारी-2।।शान्ति।।

- सुर-किन्नर गण-मुनि गुण गायें, जोगी ध्यान लगायें-2
  शीतल झरना, बहता पानी, धरती झूमे सारी।
  जय हो-जय हो तुम्हारी-2।।शान्ति।।

- ज्ञान की तुमने ज्योति जलायी, अमृत तेरी वाणी-2
  दया-धरम का मार्ग दिखाया, शांत छवि बडी प्यारी।
  जय हो-जय हो तुम्हारी-2।।शान्ति।।

पिता की कलम से

प्रिय संजय

कभी नहीं सोचा था कि तुम संयुक्त परिवार व व्यापारिक वातावरण में रहते हुए, संगीत के माध्यम से जैन भजनों की एक अनुपम शृंखला की रचना करोगे और प्रभु भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण पेश करोगे। संसारी जीवन में भजनों का निश्चित रूप से बहुत महत्व है। भजनों के माध्यम से एक ओर जहाँ अंतर्मन से प्रभु भक्ति होती है वही दूसरी ओर धर्म प्रचार एवं पवित्र वातावरण का उदय होता है।

अपने व्यापार के साथ-साथ तुमने जिस प्रकार २१९ भजनों की रचना करी हैं वह निश्चित रूप से बहुत सराहनीय है।

तुम्हारी रचनाओं में निम्न ३ भजनो का वर्णन मैं अवश्य करना चाहूँगा जो मुझे बहुत पसंद हैं तथा जिनके माध्यम से समाज में जैन धर्म व शाकाहार का उत्तम संदेश जाता है।

१. सम्मेद शिखर है पावन धरा जहाॅ से प्रभु मोक्ष गये......पृष्ठ सं ७४

२. सन्डे हो या मन्डे कोई कभी न खाये अंडे.....पृष्ठ सं १०२

३. जब तलक तन में आत्म की जोत जले,
   तब तलक ही तो ये जिन्दगानी रहे.....पृष्ठ सं १०८

जिनेन्द्र भगवान से मेरी प्रार्थना है कि तुम अपने इस प्रयास में आगे बढ़ते रहो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक धर्म प्रचार में सहयोग करेगी एवं सबके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है।

तुम्हारे पिता
रमेश चन्द जैन

प्रथम संस्करण ५०० प्रतियाँ

महावीर नाम भक्ति
भजन गीत माला...

मूल्य : भक्ति करना व चैनल सबसक्राइब करना।